



पंचम इकाई परीक्षा (विकास एवं पर्यावरण का अर्थशास्त्र)

2 responses

[Publish analytics](#)

छात्र का पूरा नाम

2 responses

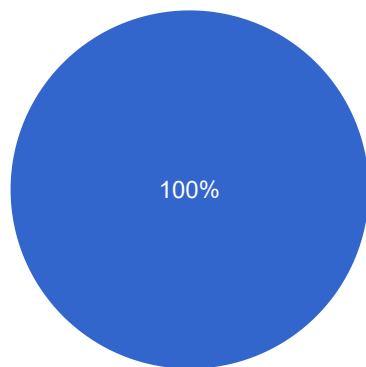
Miss Teejan Sewta

Yashoda sinha

कक्षा

2 responses

[Copy](#)

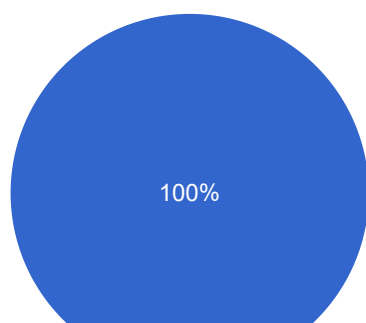


● बीए-भाग तीन

मौद्रिक नीति किसके द्वारा जारी की जाती है?

2 responses

[Copy](#)



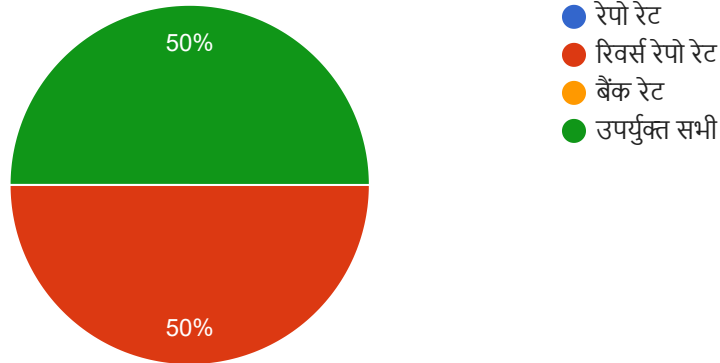
- केंद्रीय बैंक
- व्यापारिक बैंक
- देशी बैंकर्स
- इनमें से कोई नहीं



मौद्रिक नीति के उपकरण हैं?

 Copy

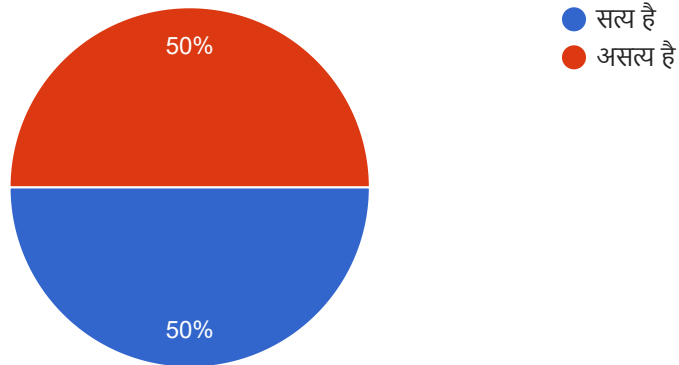
2 responses



"अदृश्य बेरोजगारी कृषि क्षेत्र में अधिक पाई जाती है"- यह कथन

 Copy

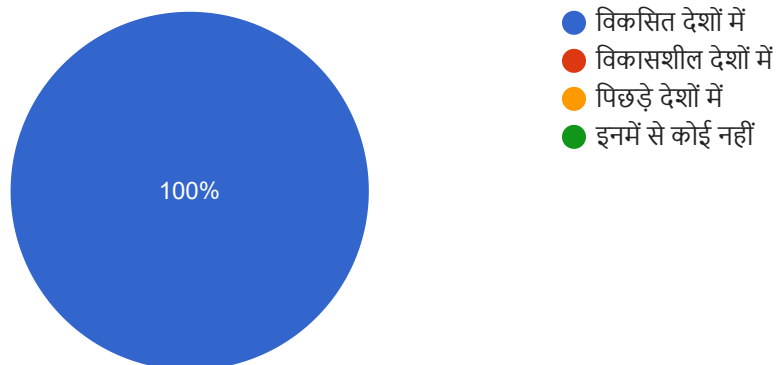
2 responses



घर्षणात्मक बेरोजगारी कहाँ पाई जाती है?

 Copy

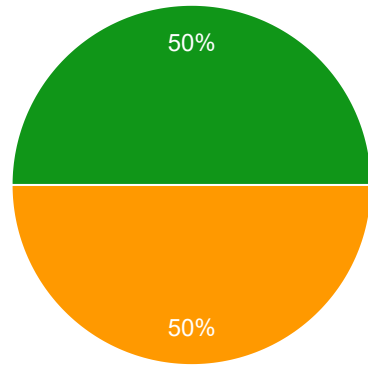
2 responses



राजकोषीय नीति के उद्देश्य है/हैं

Copy

2 responses



- आर्थिक असमानता को दूर करना
- कीमत स्थिरता
- पूर्ण रोजगार
- उपर्युक्त सभी

बेरोजगारी से आशय

2 responses

बेरोजगारी: =

बेरोजगार उस व्यक्ति को कहा जाता है जो कि बाजार में प्रचलित मजदूरी दर पर कार्य तो करना चाहता है लेकिन उसे काम नहीं मिल पा रही है।

बेरोजगारी की परिभाषा हर देश में अलग-अलग होती है जैसे अमेरिका में यदि किसी व्यक्ति को उसकी क्वालिफिकेशन के हिसाब से नौकरी नहीं मिलती है तो उसे बेरोजगार माना जाता है।

जब देश में कार्य करने वाली जनशक्ति अधिक होती है किंतु काम करने राजी होती होती है फिर भी काम नहीं मिल पाते हैं उसे बेरोजगारी कहते हैं किसी रोजगार की तलाश किए जाने के बावजूद भी काम नहीं मिल पाने के कारण बेरोजगारी कहलाते हैं

This content is neither created nor endorsed by Google. [Report Abuse](#) - [Terms of Service](#) - [Privacy Policy](#).

Google Forms



चतुर्थ इकाई परीक्षा (ऑनलाईन)

कक्षा : बीए-भाग एक ,विषय : अर्थशास्त्र

(शैक्षणिक सत्र : 2020-21)

शास. शहीद गेंदसिंह महाविद्यालय, चारामा. जिला-कांकेर (छग)

चतुर्थ इकाई परीक्षा (व्याष्टि अर्थशास्त्र)

36 responses

[Publish analytics](#)



छात्र का पूरा नाम

36 responses

Divya dewangan

JITENDRA VERMA

DURGESHWARI SAHU

MADHURI SONWANI

Chhabila gajendra

savita sahu

TULSI DEWANGAN

KAJAL SAHU

Chandani sinha

CHANDRAHAS MARKAM

Niranjan Sinha

Sandni Devi Sinha

SAHIL KUMAR MARKAM

BHOJBALA JAIN

Anita Korram

Varsha netam

Khemendra Kumar



knomenara kumar

Mahesh Kumar salam

Kaleshwar sahu

Lomeshwari Sahu

gendlal Chakrhadhari

HEMLATA SALAM

SAHIL NETAM

SEEMA ACHLE

Monika Darro

SUSHILA NISHAD

MANISH KUMAR DEWANGAN

AARTI YADAV

DEVIKA PATEL

Tejkumar

Bhagwat prasad taram

Aarti Taram

thaneshwari sahu

PRIYA MAHLA

Namita netam

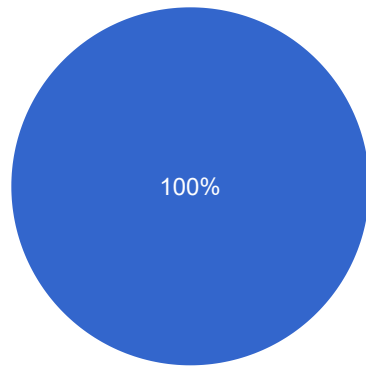
सत्यजीत तुलावी



कक्षा

Copy

36 responses

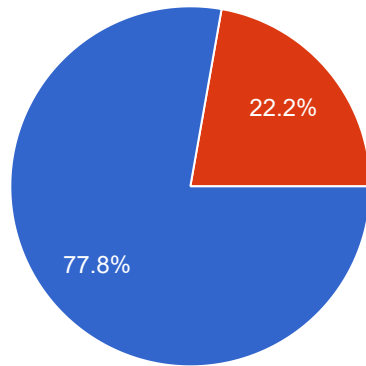


● बीए-भाग एक

"ब्याज की दर और मुद्रा की माँग के बीच सीधा सम्बन्ध होता है" - यह कथन

Copy

36 responses



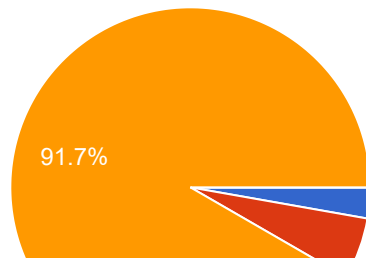
● सत्य है.

● असत्य है.

'The General Theory Employment, Interest & Money' किस प्रसिद्ध अर्थशास्त्री की पुस्तक का नाम है?

Copy

36 responses



● अल्फ्रेड मार्शल

● एडम स्मिथ

● जे एम कीन्स

● जे आर हिक्स

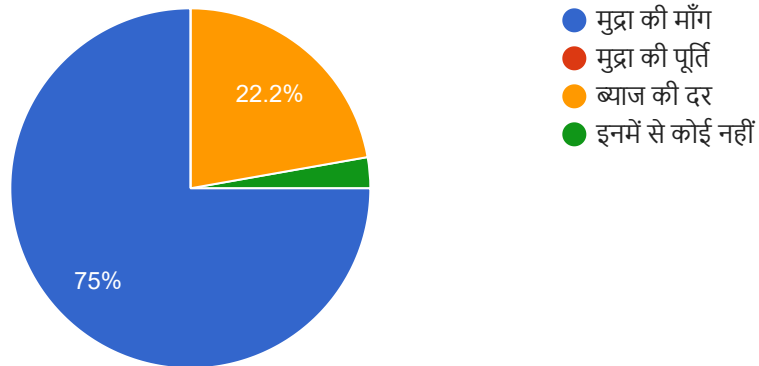




"तरलता पसंदगी" से तात्पर्य है?

 Copy

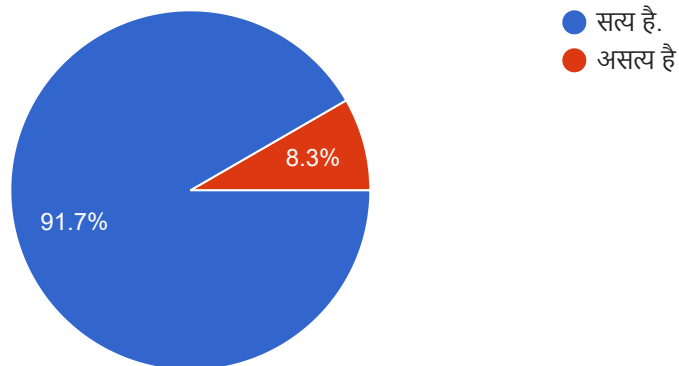
36 responses



सट्टा उद्देश्य हेतु मुद्रा की माँग का अर्थ है "बाजार की अनिश्चिताओं से फायदा उठाना" -यह कथन

 Copy

36 responses



वितरण के सीमांत उत्पादकता सिद्धांत का कथन क्या है?

36 responses

Simant utpadakta Siddhant vitran ka kendriya Siddhant Mana jata hai aur yah prakat Karta hai ki rashtriy labhan mein utpati ke pratyek sadhan ka bhag kis prakar nirdharit hota hai is Siddhant ke anusar rashtriy mein yah utpati ke pratyek sadhan Jo bhi bhag milta hai vah use sadhan ki simant utpadakta ke barabar hota hai.

वितरण के उत्पादकता सिद्धांत के अनुसार उत्पत्ति के साधनों (भूमि, पूंजी, श्रम संगठन एवं साहस) के पारिश्रमिक या कीमतों का निर्धारण साधन की सीमांत उत्पादकता के आधार पर होती है। सीमांत उत्पादकता सिद्धांत वितरण का केन्द्रीय सिद्धांत माना जाता है।

अर्थात् वितरण के सीमांत उत्पादकता सिद्धांत के अनुसार साधनों की पारिश्रमिक साधन की सीमांत उत्पादकता पर निर्भर करती है।

इस सिद्धांत की वैज्ञानिक एवं विस्तृत व्याख्या का श्रेय आधुनिक अर्थशास्त्री जे. आर. हिक्स एवं श्रीमती जान रॉबिंसन को जाता है।

सीमांत उत्पादकता सिद्धांत वितरण का केन्द्रीय सिद्धांत माना जाता है और यह प्रगट करता है कि राष्ट्रीय लाभांश में उत्पत्ति के प्रत्येक साधन का भाग किस प्रकार निर्धारित होता है। इस सिद्धांत के अनुसार राष्ट्रीय आय में से उत्पत्ति के प्रत्येक साधन को जो भाग मिलता है वह उस साधन की सीमांत उत्पादकता के बाजार होता है।

वितरण का सीमांत उत्पादकता सिद्धांत साधनों के पारिश्रमिक का निर्धारण करता है। सीमांत उत्पादकता सिद्धांत यह बताता है कि दी हुई मान्यताओं के अन्तर्गत दीर्घकाल में किसी साधन के पुरस्कार में उसकी सीमांत उत्पादकता के समान होने की प्रवृत्ति पाई जाती है।

वितरण के सीमांत उत्पादकता सिद्धांत का कथन:- किसी साधन की सीमांत उत्पादकता से अभिप्राय कुल उत्पत्ति में की गई वृद्धि से होता है जो उस साधन की अंतिम या सीमांत इकाई के उपयोग द्वारा होती है किसी एक साधन की सीमांत उत्पत्ति ज्ञात करने के लिए उत्पत्ति के अन्य साधनों को यथावत सीमित या स्थिर रखकर इस साधन की एक इकाई बढ़ाई जाती है और इस इकाई से जितना उत्पादन बढ़ता है वही उस संसाधन की सीमा उत्पत्ति कहलाती है। जैसे- किसी फर्म में 20 श्रमिक लगाने से ₹100 की आय होती है अब यदि फर्म के अन्य साधन तो यथावत रखे जाते हैं किंतु 20 श्रमिकों के स्थान पर 21 श्रमिक कर दिए जाते हैं तो कुल आय ₹104 होती है अर्थात् अंतिम नए श्रमिक को लगाने से आय में ₹4 की वृद्धि हुई यह ₹4 सीमांत उत्पत्ति कहलाएंगे और ₹4 एक श्रमिक की मजदूरी निर्धारित हो जाएगी इस प्रकार हम उत्पत्ति के प्रत्येक साधन की उत्पत्ति का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं

वितरण वितरण का सीमांत उत्पादकता सिद्धांत साधनों के पारिश्रमिक का निर्धारण करता है सीमांत उत्पादकता सिद्धांत या बताता है कि दी हुई मान्यताओं के अंतर्गत दीर्घकाल में किसी साधन के पुरस्कार में उसकी सीमांत उत्पादकता के समान होने की प्रवृत्ति पाई जाती है।

वितरण के सीमांत उत्पादकता सिद्धांत का सर्वप्रथम प्रतिपादन प्रो. विकसटीड, वायरस तथा जे.बी. ने दिया, लेकिन दस सिद्धांत को आधुनिक रूप से लोकप्रिय बनाने का श्रेय प्रो. हिक्स एवं श्रीमती जॉन रॉबिंसन को है।



सीमांत उत्पादकता का अर्थ- उत्पादन प्रकार्य में उत्पत्ति के विभिन्न साधनों को स्थिर रखकर किसी परिवर्तन से साधन की एक अतिरिक्त इकाई के प्रयोग में कुल उत्पादन में जो वृद्धि होती है उसे उस साधन की सीमांत उत्पादकता कहते हैं।

Vitran ka Simant utpadakta Siddhant sadhno ke parishramik Ka nirdharan karta hai .1 Simant utpadakta Siddhant Ya Hai batata Hai Ki The Hui Manyata ke antargat Dirgh kal mein kisi sadhan ke Puraskar me Bus ki Simant utpadakta ke Saman Hone ki pravritti Pai Jaati Hai.

सीमांत उत्पादकता सिद्धांत वितरण का केन्द्रीय सिद्धांत माना जाता है और यह प्रगट करता है कि राष्ट्रीय लाभ में उत्पत्ति के प्रत्येक संसाधन का भाग किस प्रकार निर्धारित होता है इस सिद्धांत के अनुसार राष्ट्रीय आय में से उत्पत्ति के प्रत्येक संसाधन को जो भाग मिलता है वह उस संसाधन की सीमांत उत्पादकता के बराबर होता है।

वितरण का सीमांत उत्पादकता सिद्धांत साधनों के परिश्रमिक का निर्धारण करता है सीमांत उत्पादकता सिद्धांत यह बताता है की दी दी हुई मान्यताओं के अंतर्गत दीर्घकाल में किसी साधन के पुरस्कार में उसकी सीमांत उत्पादकता के समान होने की प्रवृत्ति पाई जाती है।

वितरण का सीमांत उत्पादकता सिद्धांत:-

वितरण का सीमांत उत्पादकता सिद्धांत साधनों के पारिश्रमिक का निर्धारण करता है। सीमांत उत्पादकता सिद्धांत यह बतलाता है कि दी हुई मान्यताओं के अंतर्गत दीर्घकाल में किसी साधन के पुरस्कार में उस की सीमांत उत्पादकता के समान होने की प्रवृत्ति पाई जाती है।

सीमांत उत्पादकता सिद्धांत वितरण का एक सामान्य सिद्धांत है। इस सिद्धांत का प्रयोग उत्पादन के सभी साधनों के पुरस्कार निर्धारण के लिए किया जाता है।

सिद्धांत का सामान्य कथन:- इस सिद्धांत के अनुसार उत्पादन के साधन की कीमत उसकी उत्पादकता पर निर्भर करती है इसका निर्धारण सीमांत उत्पादकता के आधार पर होता है। पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति में किसी साधन का पुरस्कार अल्पकाल में उस की सीमांत उत्पादकता से कम अथवा अधिक भी हो सकती है परंतु दीर्घकाल में सदैव ही साधन की सीमांत उत्पादकता के बराबर होती है स्टोर नियर एवं हेग शब्दों में उत्पादन के साधनों की कीमत निर्धारण की पूंजी सीमांत उत्पादकता के पास है तथा उत्पादन के साधन का पुरस्कार अनंत उस की सीमांत उत्पादकता पर निर्भर करता है।

जिसके द्वारा लगान मजदूरी ब्याज वेतन एवं लाभ का निर्धारण सरलता से किया जा सकता है इस सिद्धांत के अनुसार साधन को दिया जाने वाला पुरस्कार उसकी सीमांत उत्पादकता से निर्धारित होता है

जिसके द्वारा लगान ,मजदूरी ,ब्याज, वेतन एवं लाभ का निर्धारण सरलता से किया जा सकता है। इस सिद्धांत के अनुसार साधन को दिया जाने वाला पुरस्कार उसकी सीमान्त उत्पादकता से निर्धारित होता है।

वितरण का सीमांत उत्पादकता सिद्धांत :- वितरण का सीमांत उत्पादकता सिद्धांत साधनों के परिश्रमिक का निर्धारण करता है।सीमांत उत्पादकता सिद्धांत यह बतलाता है की दी हुई मान्यताओं के अंतर्गत दीर्घकाल में किसी साधन के पुरस्कार में उस की सीमांत उत्पादकता के समान होने की प्रवृत्ति पाई जाती है। सीमांत उत्पादकता सिद्धांत वितरण



का एक सामान्य सिद्धांत है। इस सिद्धांत का प्रयोग उत्पादन के सभी साधनों के पुरस्कार निर्धारण के लिए किया जाता है। सिद्धांत का सामान्य कथन इस सिद्धांत के अनुसार उत्पादन के साधन की कीमत उसकी उत्पादकता पर निर्भर करती है इसका निर्धारण सीमांत उत्पादकता के आधार पर होता है। पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति में किसी साधन का पुरस्कार अल्पकाल में उसकी सीमांत उत्पादकता से कम अथवा अधिक भी हो सकती है परंतु दीर्घकाल में सदैव भी साधन की सीमांत उत्पादकता के बराबर होती है स्टोर नियर एवं हेग के शब्दों में उसकी सीमांत उत्पादकता पर निर्भर करता है।

Kisi sadhan ki simant utpadkta se abhipray kul utptti mey ki gayi us wridhi se hota hai jo us sadhan ki antim ya simant ekai key upyog dwara hoti hai. kisi frm mey 20 sramik lgane se 4000 ki aay hoti hai ab ydi frm key anya sadhan to ythawat rkhe jate hai kintu 20 sramikon ke esthan pr 21 sramik kr diye jate hai to kul aay 4200 hoti hai arthat antim naye sramik ko lgane se aay me 200 ki wridhi Hui .

सीमांत उत्पादकता सिद्धांत वितरण का केंद्रीय सिद्धांत माना जाता है और यह प्रकट करता है कि राष्ट्रीय लाभांश में उत्पत्ति के प्रत्येक साधन का भाग किस प्रकार निर्धारित होता है इस सिद्धांत के अनुसार राष्ट्रीय आय में से उत्पत्ति के प्रत्येक साधन को जो भाग मिलता है वह उस साधन की सीमांत उत्पादकता के बराबर होता है। वितरण का सीमांत उत्पादकता सिद्धांत साधनों के पारिश्रमिक का निर्धारण करता है सीमांत उत्पादकता सिद्धांत यह बताता है कि दी हुई मान्यताओं के अंतर्गत दीर्घ काल में किसी साधन के पुरस्कार में उसकी सीमांत उत्पादकता के समान होने की प्रवृत्ति पाई जाती है

वितरण का सीमांत उत्पादकता सिद्धांत-- वितरण के सीमांत उत्पादकता सिद्धांत के अंतर्गत साधनों के पारिश्रमिक का निर्धारण किया जाता है। यहां सिद्धांत इस समस्या का समाधान आसान आसानी से करता है कि साधनों का पारिश्रमिक इस प्रकार से निर्धारित किया जाय इस सिद्धांत को प्रतिपादित करने वाले प्रमुख अर्थशास्त्री जे. बी. क्लर्क (J.B. Clark), (Wicksteed), वालरस (Walras), श्रीमती जॉन रॉबिंसन (Mrs. Joan Robinson) तथा हिक्स (J.R. Hicks) हैं। सीमांत उत्पादकता के सिद्धांत को सामान्य सिद्धांत भी कहा गया है, क्योंकि उसकी सहायता से उत्पत्ति के सभी साधनों की कीमत -निर्धारण समस्या का अध्ययन किया जाता है।

वितरण का सीमांत उत्पादकता सिद्धांत साधनों के प्ररिश्रमिक निधारण करता है। सीमांत उत्पादकता सिद्धांत यह बताता है कि दी हुई मान्यताओं के अंतर्गत दीर्घकाल में किसी साधन के पुरस्कार में उसकी सीमांत उत्पादकता के समान होने की प्रवृत्ति पाई जाती है।

वितरण की सीमांत उत्पादकता सिद्धांत साध परीश्रमिक साधन करता है कानी धारण करते हैं सीमांत उत्पादकता यह बताता है दि हुई मानयाताए के अन्तर्गत दीर्घकाल में किसी साधन के पुरस्कार में उसकी सीमांत उत्पादकता के सामने होने की प्रक्रिया है १९ शताब्दी में अन्त है

वितरण का सीमांत उत्पादकता सिद्धांत साधनों के पारिश्रमिक का निर्धारण करता है। सीमांत उत्पादकता सिद्धांत यह बताता है कि दी हुई मान्यताओं के अंतर्गत दीर्घकाल में किसी साधन के पुरस्कार में उसकी सीमांत उत्पादकता के समान होने की प्रवृत्ति पाई जाती है

वितरण का सीमांत उत्पादकता सिद्धांत साधनों के पारिश्रमिक का निर्धारण करता है। सीमांत उत्पादकता सिद्धांत यह बताता है कि दी हुई मान्यताओं के अंतर्गत दीर्घकाल में किसी साधन के पुरस्कार में उसकी सीमांत उत्पादकता के समान होने की प्रवृत्ति पायी जाती है।

Vitran ki simant utpadkta se tatpary hyy ki purn pratiyogita ke sthith me jab kisi seva ke seva ko kisi atpadnn ke liye prayog kiya jata hy to use wastu ke utpadn me vidhi hota hyy



सीमांत उत्पादकता का अर्थ है उत्पादन प्रकाय में उत्पत्ति के विभिन्न साधनों को स्थिर रखकर किसी परिवर्तन साधन की एक अंतरित इकाई के प्रयोग से कुल उत्पादन में जो वृद्धि होती है उसे उस साधन की सीमांत उत्पादकता कहते हैं। श्रीमती जान रॉबिंसन के अनुसार, यदि अन्य साधनों का कुल मूल्य रहता है तो सीमांत उत्पादकता कुल उत्पादन के मूल्य में हुई वृद्धि है जोकि एक अतिरिक्त मनुष्य को काम लगाने से प्राप्त होती है। वितरण आते हैं

प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों ने वितरण के किसी सामान्य सिद्धान्त (General Theory) का प्रतिपादन नहीं किया किन्तु एडम स्मिथ, रिकार्डो आदि प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों ने 'भूमि' के 'लगान', 'श्रम' की 'मजदूरी', 'पूँजी' के 'ब्याज' तथा 'साहस' के 'लाभ' के सिद्धान्तों का पृथक्-पृथक् प्रतिपादन किया है।

प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों की विचारधारा के अनुसार राष्ट्रीय आय की वितरण प्रक्रिया में सर्वप्रथम भूमि को लगान दिया जाता है। उसके बाद क्रमशः श्रमिकों की मजदूरी तथा पूँजीपति का ब्याज एवं लाभ निर्धारित किये जाते हैं। इस प्रकार उत्पत्ति के सभी साधनों को दिये गये पुरस्कारों का योग राष्ट्रीय आय के बराबर होता है।

सीमांत उत्पादकता का अर्थ, उत्पादन प्रक्रिया में उत्पत्ति के विभिन्न साधनों को स्थिर रखकर किसी परिवर्तनशील साधन की एक अतिरिक्त इकाई के प्रयोग से कुल उत्पादन में जो वृद्धि होती है साधन की सीमांत उत्पादकता कहते हैं। श्रीमती जान रॉबिंसन के अनुसार, यदि अन्य साधनों का कुल मूल्य स्थिर रहता है तो सीमांत उत्पादकता कुल उत्पादन के मूल्य में हुई वृद्धि है जो कि एक अतिरिक्त मनुष्य को काम पर लगाने से प्राप्त होती है। उत्पत्ति के साधनों का मूल्य उन की सीमांत उत्पादकता पर क्यों निर्भर करता है क्योंकि वस्तु की मांग प्रत्यक्ष रूप से उपयोग उसकी उपयोगिता के कारण की जाती है जबकि साधन की मांग या पत्र मांग होती है अर्थात् साधनों की मांग उन की सीमांत उत्पादकता पर निर्भर करती है। अतः आज इन साधनों की उत्पादकता कम होगी उनका मूल्य भी कम होगा। स्पष्ट है कि साधन का कीमत निर्धारण साधन की सीमांत उत्पादकता से तय होता है। सीमांत उत्पादकता को आधार क्यों मानते हैं हमारा संबंध अवसर उत्पादकता से क्यों नहीं होता है इस प्रश्न का उत्तर भी सरल है। जिस प्रकार फार्म अपनी सीमांत आगम एवं सीमांत लागत को बराबर करके अधिकतम लाभ कम आती है ठीक उसी प्रकार एक फार्म साधन की सीमांत उत्पादकता एवं उसकी सीमांत आगम को बराबर कर के उत्पादन को अधिकतम बना लेती है और इस प्रकार अधिकतम लाभ कमाने में समर्थ हो जाती है। ध्यान रहे कि उत्पादकता जो मूल्य एक साधन को प्रदान करता है वहां उत्पादकता की दृष्टि से साधन की लागत है। इसलिए साधन की सीमांत लागत तथा साधन की सीमांत आगम एक ही बात है। इस वर्ष यहां है कि साधनों को जो पुरस्कार मिलता है वहां उन की सीमांत उत्पादकता के बराबर होता है।

सीमांत उत्पादकता सिद्धांत= राष्ट्रीय आय में से उत्पत्ति के प्रत्येक साधन का जो भाग मिलता है वह उस साधन की सीमांत उत्पादकता के बराबर होता है। साधन की अंतिम इकाई में बढ़ोतरी करने पर कुल उत्पादन में कितनी बढ़ोतरी होगी वह उस साधन का सीमांत उत्पादकता होगा।

वितरण के सीमांत उत्पादकता के अंतर्गत उत्पादन के साधनों के परिश्रम मित्र एवं सेवा का मूल्य किस प्रकार निर्धारित किया जाता है।

वितरण का सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त :-

वितरण का सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त साधनों के पारिश्रमिक का निर्धारण करता है। सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त यह बताता है कि दी हुई मान्यताओं के अन्तर्गत दीर्घकाल में किसी साधन के पुरस्कार में उसकी सीमान्त उत्पादकता के समान होने की प्रवृत्ति पायी जाती है।

इस सिद्धान्त का प्रतिपादन 19वीं शताब्दी के अन्त में जे. बी. क्लार्क (J. B. Clark), वालरस (Walras), विकस्टीड (Wickstead) आदि अर्थशास्त्रियों द्वारा किया गया। परन्तु इसे विस्तृत एवं सही रूप में प्रस्तुत करने का श्रेय आधुनिक अर्थशास्त्रियों - श्रीमती जॉन रॉबिन्सन (Mrs. Joan Robinson) तथा जे. आर. हिक्स (J. R. Hicks) को जाता है।

वितरण के सीमांत उत्पादकता सिद्धांत के अनुसार उत्पत्ति के साधनों भूमि, पूँजी, श्रम, संगठन, साहस के परिश्रम या

कामता का निधारण साधन क सीमांत उत्पादकता पर निर्भर करता है।

वितरण के सिद्धांत उत्पादकता सिद्धांत के अनुसार उत्पत्ति के साधनोंभूमि (पूँजी श्रम संगठन एवं साहस के पारिश्रमिक या कीमतों का निर्धारण साधन की सीमांत उत्पादकता के आधार पर होती है)। 19वीं शताब्दी के अंत में इस सिद्धांत का प्रतिपादन जे. बी. क्लार्क लियोन वालरस फिलिप्स एच विक स्टीड आदि अर्थशास्त्रियों ने किया था किंतु इस सिद्धांत के वैज्ञानिक एवं विस्तृत व्याख्या का श्रेय आधुनिक अर्थशास्त्रियों जे. आर. हिकस एवं श्रीमती जॉन रॉबिंसन को जाता है।

उत्तर:-- इस सिद्धांत के अनुसार उत्पादन के साधन की कीमत उसकी उत्पादकता पर निर्भर करती है ! इसका निर्धारण सीमांत उत्पादकता द्वारा होती है , पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति में किसी साधन का पुरस्कार अल्पकाल में उसकी सीमांत उत्पादकता से कम अथवा अधिक हो सकता है ! परंतु दीर्घकाल में सदैव ही साधन की सीमांत उत्पादकता के बराबर होता है ! वितरण का सिद्धांत उत्पादकता यह बतलाता है , कि "उत्पादन के साधनों का पुरस्कार उसकी उत्पादकता पर निर्भर करता है ! तथा वह साधनों की वस्तु ,की मांग पर निर्भर करती है ! जिनका उत्पादन की सहायता से किया जा सकता है ! उत्पादन उत्पादकता के अनुसार करती है ! जिससे उत्पादन अधिक हो !!

वितरण का सीमांत उत्पादकता सिद्धांत साधनों के पारिश्रमिक का निर्धारण करता है। सीमांत उत्पादकता सिद्धांत यह बताता है। कि दी हुई मान्यताओं के अंतर्गत दीर्घकाल में किसी साधन की पुरस्कार में उसकी सीमांत उत्पादकता के समान होने की प्रवृत्ति पायी जाती है।

सीमान्त उत्पादकता सिद्धांत वितरण का केंद्रीय सिद्धांत माना जाता है और यह प्रकट करता है कि राष्ट्रीय लाभांश में उत्पत्ति के प्रत्येक साधन का भाग किस प्रकार निर्धारण होता है इस सिद्धांत के अनुसार राष्ट्रीय आय में से उत्पत्ति के प्रत्येक साधन का जो भाग मिलता है वह उस साधन की सीमान्त उत्पादकता के बराबर होता है

वितरण का सीमान्त उत्पादकता सिद्धांत साधनों के पारिश्रमिक का निर्धारण करता है। सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त यह बताता है कि दी हुई मान्यताओं के अन्तर्गत दीर्घकाल में किसी साधन के पुरस्कार में उसकी सीमान्त उत्पादकता के समान होने की प्रवृत्ति पायी जाती है।

विवरण का सीमान्त उत्पादकता सिद्धांत साधनों के पारिश्रमिक का निर्धारण करता है।सीमान्त उत्पादकता सिद्धांत यह बताता है कि दी हुई मान्यताओं के अंतर्गत दीर्घकाल में किसी साधन के पुरस्कार में उसकी सीमान्त उत्पादकता के समान होने की प्रवृत्ति पायी जाती है।इस सिद्धांत का प्रतिपादन 19 वीं शताब्दी के अंत में जे. ने किया।

वितरण का सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त :-

वितरण का सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त साधनों के पारिश्रमिक का निर्धारण करता है। सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त यह बताता है कि दी हुई मान्यताओं के अन्तर्गत दीर्घकाल में किसी साधन के पुरस्कार में उसकी सीमान्त उत्पादकता के समान होने की प्रवृत्ति पायी जाती है।

इस सिद्धान्त का प्रतिपादन 19वीं शताब्दी के अन्त में जे. बी. क्लार्क (J. B. Clark), वालरस (Walras), विकस्टीड (Wickstead) आदि अर्थशास्त्रियों द्वारा किया गया। परन्तु इसे विस्तृत एवं सही रूप में प्रस्तुत करने का श्रेय आधुनिक अर्थशास्त्रियों – श्रीमती जॉन रॉबिन्सन (Mrs. Joan Robinson) तथा जे. आर. हिकस (J. R. Hicks) को जाता है।

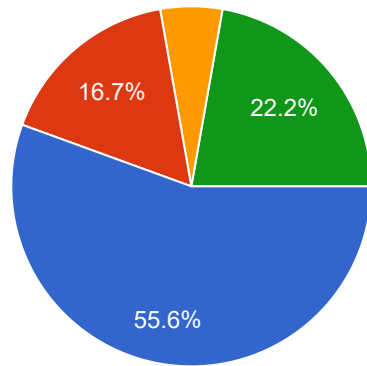
वितरण का सिमत उत्पादकता सिद्धांत साधनो के प्ररि श्र मिक का निराधारा करता है सिमानता उत्पादक्त सिद्धान्त बताता है की दी हुए माननीयताओ के अंतगत दिघकालीन में किसी साधन के पूर्णष्कर में शिमा उत्पादक्त के समान होनी के प्रविती पायी जाती हैं



लगान के आधुनिक सिद्धांत के अनुसार

 Copy

36 responses



- लगान= वास्तविक आय-अवसर लागत.
- लगान= वास्तविक आय-मौद्रिक लागत
- लागत=वास्तविक लागत-अवसर लागत
- इनमें से कोई नहीं

This content is neither created nor endorsed by Google. [Report Abuse](#) - [Terms of Service](#) - [Privacy Policy](#).

Google Forms





चतुर्थ इकाई परीक्षा (समाष्टि अर्थशास्त्र)

7 responses

छात्र का पूरा नाम

7 responses

CHANDRAKUMAR

YASHWANT PIDDA

Terisa sori

TIKESHWAR SINHA

Pradeep kuamr andhiya

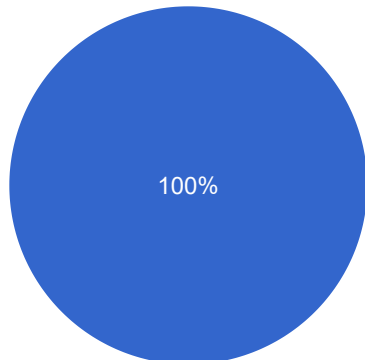
CHANDRABHAN

Vijay Kumar Nishad

कक्षा

 Copy

7 responses



बीए-भाग दो



अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार क्या है?

7 responses

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं या क्षेत्रों के आर-पार पूंजी, माल और सेवाओं का आदान-प्रदान है। अधिकांश देशों में, यह सकल घरेलू उत्पाद (GDP) के महत्वपूर्ण अंश का प्रतिनिधित्व करता है। ... अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के बिना, देश सिर्फ अपनी खुद की सीमा के भीतर उत्पादित माल और सेवाओं तक सीमित रह जाएंगे।

सीमाओं या क्षेत्रों के आर-पार पूंजी, माल और सेवाओं का आदान-प्रदान है। अधिकांश देशों में, यह सकल घरेलू उत्पाद (GDP) के महत्वपूर्ण अंश का प्रतिनिधित्व करता है। ... अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के बिना, देश सिर्फ अपनी खुद की सीमा के भीतर उत्पादित माल और सेवाओं तक सीमित रह जाएंगे।

रिकार्डों के अनुसार, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार इसलिए होता है कि विभिन्न देशों को अलग-अलग वस्तुओं के उत्पादन में अलग-अलग लाभ प्राप्त होता है। इसमें भिन्नता का कारण कार्य कुशल श्रम शक्ति, जलवायु, उपयुक्त मिट्टी, कच्चे माल की उपलब्धता, तकनीकी ज्ञान आदि है।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं या क्षेत्रों के आर-पार पूंजी, माल और सेवाओं का आदान-प्रदान है। अधिकांश देशों में, यह सकल घरेलू उत्पाद के महत्वपूर्ण अंश का प्रतिनिधित्व करता है। जबकि अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, इतिहास के अधिकांश भाग में मौजूद रहा है (देखें सिल्क रोड, एम्बर रोड) इसका आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक महत्व हाल की सदियों में बढ़ने लगा है।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं या क्षेत्रों के आर-पार पूंजी माल और सेवाओं का आदान-प्रदान है। अधिकांश देशों में यह सकल घरेलू उत्पाद (GDP) के महत्वपूर्ण अंश देश सिर्फ अपनी खुद की सीमा के भीतर उत्पादित माल और सेवाओं तक सीमित रह जायेंगे।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं या क्षेत्रों के आर-पार पूंजी, माल और सेवाओं का आदान-प्रदान है। अधिकांश देशों में, यह सकल घरेलू उत्पाद (GDP) के महत्वपूर्ण अंश का प्रतिनिधित्व करता है।

अन्तरराष्ट्रीय व्यापार

दो या दो से अधिक राष्ट्रों के बीच वस्तुओं और सेवाओं का क्रय विक्रय होता है तो इसे अन्तरराष्ट्रीय व्यापार कहते हैं यह व्यापार अलग अलग देशों या राष्ट्रों के बीच होता है

हे रोड के अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का संबंध उन समस्त आर्थिक विहारों से है जिन्हें राष्ट्रीय सीमा से बाहर किया जाता है इसके उदाहरण हैं

एक देश के व्यक्ति द्वारा दूसरे देश के व्यक्तियों से वस्तुएं क्रय करना

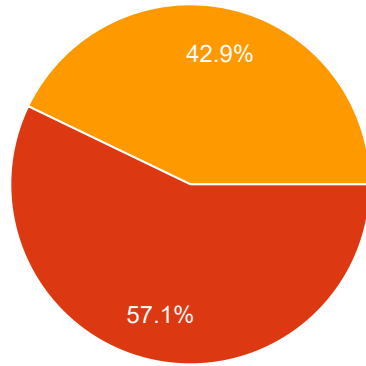
संक्षेप में आंतरिक व्यापार देश की सीमाओं के अंदर होता है और अन्तरराष्ट्रीय व्यापार देश की सीमाओं के बाहर



अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के निरपेक्ष लागत सिद्धांत का प्रतिपादन किसने किया है?

 Copy

7 responses

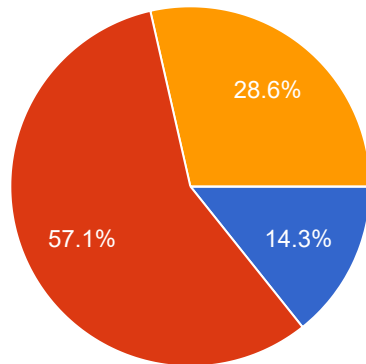


- डेविड रिकार्डो
- एडम स्मिथ
- अल्फ्रेड मार्शल
- इनमें से कोई नहीं

"दो देशों में दो वस्तु की लागतों में भिन्नता के कारण अंतर्राष्ट्रीय व्यापार होता है" यह किस सिद्धांत का कथन है?

 Copy

7 responses

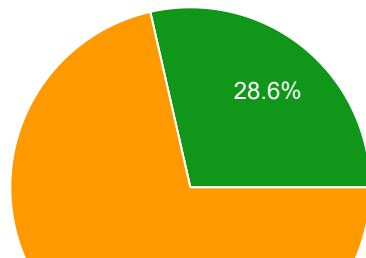


- अवसर लागत सिद्धांत
- तुलनात्मक लागत सिद्धांत
- निरपेक्ष लागत सिद्धांत
- इनमें से कोई नहीं

तुलनात्मक लागत सिद्धांत की मान्यता है

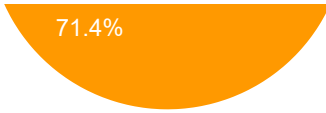
 Copy

7 responses



- केवल श्रम ही उत्पादक है
- समस्त श्रम साधन एक समान हैं
- दो देश ,दो वस्तु
- उपर्युक्त सभी

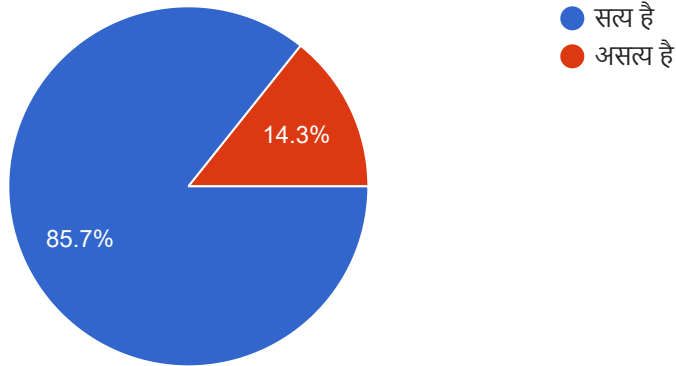




"भुगतान संतुलन में अदृश्य एवं अदृश्य मदों को सम्मिलित किया जाता है" यह कथन

 Copy

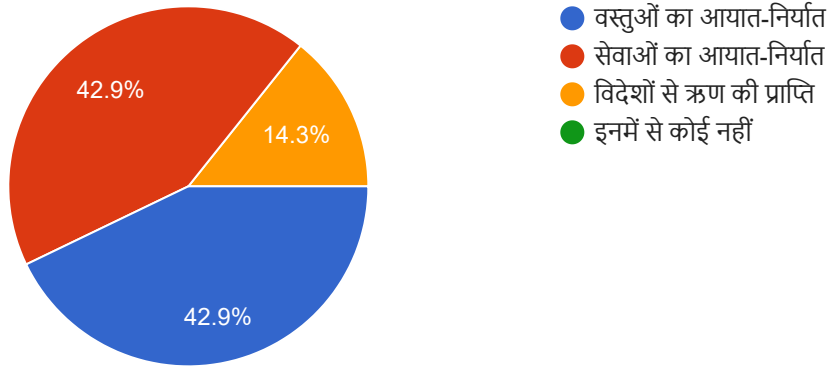
7 responses



भुगतान संतुलन के पूंजी खाता में किस मद को सम्मिलित किया जाता है?

 Copy

7 responses



This content is neither created nor endorsed by Google. [Report Abuse](#) - [Terms of Service](#) - [Privacy Policy](#)

Google Forms



तृतीय इकाई परीक्षा (ऑनलाईन)

कक्षा : बीए-भाग दो ,विषय : अर्थशास्त्र

(शैक्षणिक सत्र : 2020-21)

शास. शहीद गेंदसिंह महाविद्यालय, चारामा. जिला-कांकेर (छग)

तृतीय इकाई परीक्षा (मुद्रा, बैंकिंग एवं राजस्व)

5 responses

[Publish analytics](#)

छात्र का पूरा नाम

5 responses

CHANDRAKUMAR

TIKESHWAR SINHA

Terisa sori

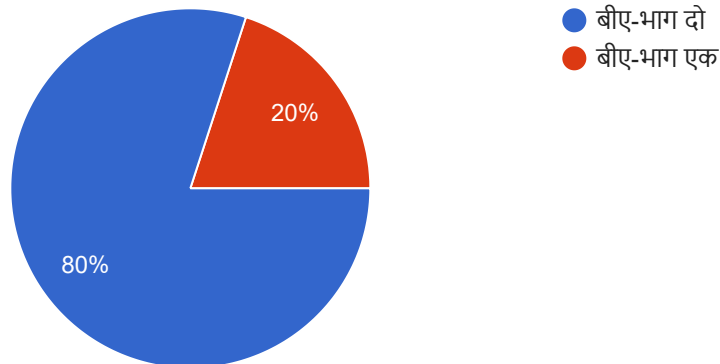
Rupwati Salam

Pradeep kumar

कक्षा

5 responses

[Copy](#)



सार्वजनिक व्यय से आप क्या समझते हैं?

5 responses

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि सार्वजनिक 'आय से आशय उस आय से है जिससे सरकार की सम्पत्ति में वृद्धि बिना दायित्व में वृद्धि किए ही हो जाती है अर्थात् जिन्हें सरकार को भविष्य में लौटाना नहीं पड़ता।

सार्वजनिक व्यय

आधुनिक राज्य कल्याणकारी राज्य है जिसका मुख्य उद्देश्य लोगों का अधिकतम कल्याण करना है। सरकार की राजकोषीय व बजटीय गतिविधियां संपूर्ण अर्थव्यवस्था को बहुत प्रभावित करती है सरकार को विभिन्न प्रकार के स्रोतों से जो आय प्राप्त होती है वह सार्वजनिक आय कहलाती है। सार्वजनिक आय के अन्तर्गत कर, शुल्क, कीमत, अर्थदण्ड, सार्वजनिक उपक्रमों से प्राप्त आय, सरकारी एवं गैर-सरकारी बचते आदि आते हैं

सरकार (केंद्र, राज्य, स्थानीय निकाय) द्वारा किये जाने वाले व्यय को सार्वजनिक व्यय कहते हैं। सरकार के द्वारा देश की आंतरिक/बाहरी सुरक्षा स्वास्थ्य, शिक्षा, आय की असमानताओं में कमी लाने, औद्योगिक विकास, कृषि विकास, अल्पविकसित क्षेत्रों के विकास आदि के लिए व्यय किये जाते हैं।

सार्वजनिक व्यय-

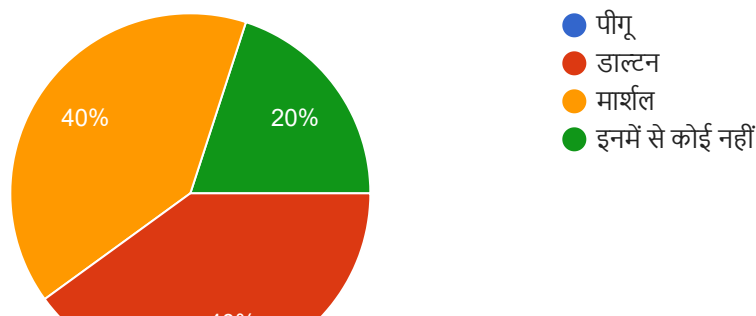
सार्वजनिक व्यय का कल्याण और धन के उत्पादन व वितरण पर गहरा प्रभाव पड़ता है। अतः यह आवश्यक है की राजकीय व्यय का अपव्यय न होने पाए और राजकीय व्यय का देश के उत्पादन एवम वितरण पर प्रतिकूल प्रभाव भी न पड़े। इस दृष्टि से अर्थशास्त्रियों ने सार्वजनिक व्यय के कुछ मार्गदर्शक सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है जिनका प्रत्येक सरकार को पालन करना चाहिए। व्यवहार में इन नियमों को ही लोक व्यय के सिद्धांत की संज्ञा दी जाती है।

सार्वजनिक व्यय का कल्याण और धन के उत्पादन व वितरण पर गहरा प्रभाव पड़ता है अतः यह आवश्यक है कि राजकीय व्यय का अपव्यय न होने पाए और राजकीय व्यय का देश के उत्पादन एवं वितरण पर प्रतिकूल प्रभाव भी न पड़े

राजस्व के अधिकतम सामाजिक लाभ के सिद्धांत के प्रतिपादक हैं

 Copy

5 responses

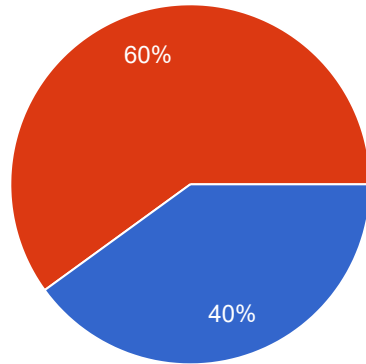


40%

सार्वजनिक व्यय का महत्व इसलिए है की इससे

Copy

5 responses

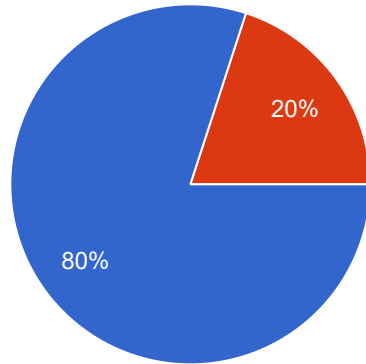


- आर्थिक नियोजन सफल होता है
- राष्ट्रीय आय बढ़ती है
- व्यापार चक्र पर नियंत्रण
- उपर्युक्त सभी

"राज्य के व्यय पर संसद का नियंत्रण होता है" - यह कथन

Copy

5 responses

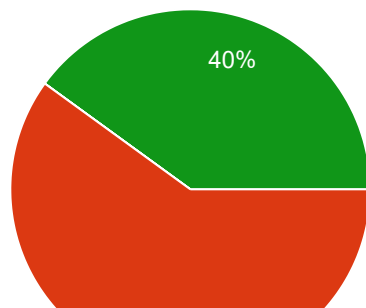


- सत्य है
- असत्य है

फ्रिंडले सिराज ने सार्वजनिक व्यय के निम्नलिखित सिद्धांतों का प्रतिपादन किए हैं

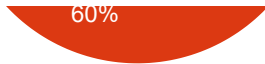
Copy

5 responses



- लाभ का सिद्धांत
- मितव्यवता का सिद्धांत
- स्वीकृति का सिद्धांत
- उपर्युक्त सभी

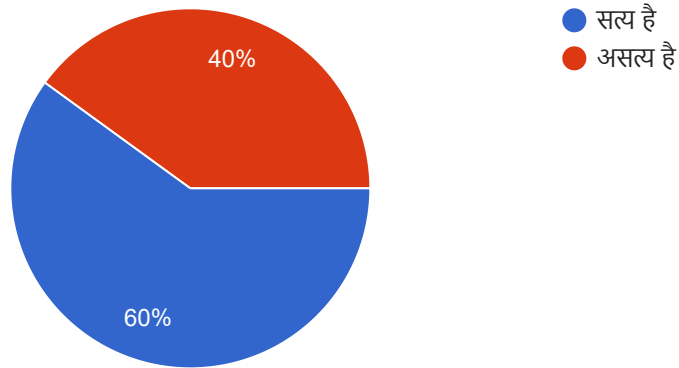




"सुरक्षा पर व्यय ने देश के विकास को रोका है " -यह कथन

 Copy

5 responses



This content is neither created nor endorsed by Google. [Report Abuse](#) - [Terms of Service](#) - [Privacy Policy](#)

Google Forms



तृतीय इकाई परीक्षा (ऑनलाईन)

कक्षा : बीए-भाग एक ,विषय : अर्थशास्त्र

(शैक्षणिक सत्र : 2020-21)

शास. शहीद गेंदसिंह महाविद्यालय, चारामा. जिला-कांकेर (छग)

तृतीय इकाई परीक्षा (व्याष्टि अर्थशास्त्र)

37 responses

[Publish analytics](#)



छात्र का पूरा नाम

37 responses

DOMENDRA SINGH DARRO

JITENDRA VERMA

Kaleshwar sahu

Divya dewangan

DURGESHWARI SAHU

TULSI DEWANGAN

MADHURI

Niranjan Sinha

Chhabila gajendra

savita sahu

BHOJBALA JAIN

Chandani sinha

CHANDRAHAS MARKAM

SAHIL KUMAR MARKAM

NIRAJ PATEL

SAHIL NETAM



Anita Korram

Aarti Taram

SUSHILA NISHAD

Lomeshwari Sahu

MANISH KUMAR DEWANGAN

GULSHAN SINGH

Devika Patel

SEEMA ACHLE

Varsha netam

KAJAL SAHU

HEMLATA SALAM

Tejkumar

PRIYA MAHLA

AARTI YADAV

Thaneshwari sahu

सत्यजीत तुलावी

Mahesh kumar salam

Namita netam

Sandni Devi Sinha

Monika Darro

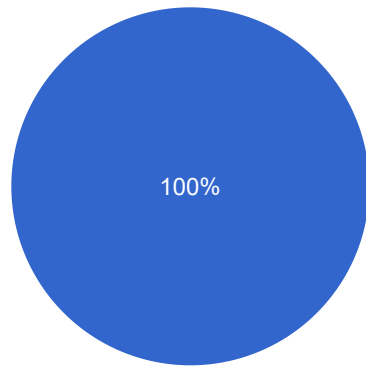
gendlal Chakrhadhari



कक्षा

Copy

37 responses

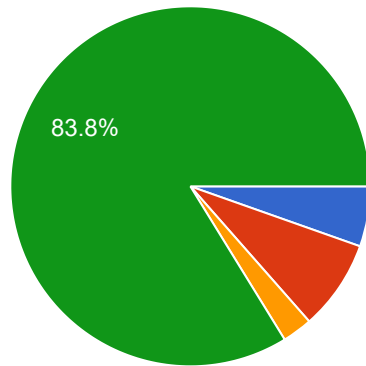


● बीए-भाग एक

बाजार के लिए आवश्यक तत्व है/हैं

Copy

37 responses

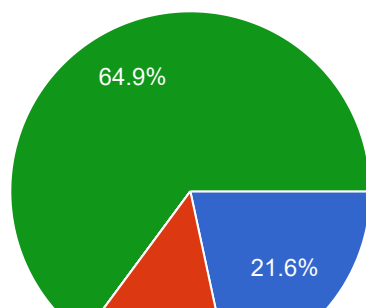


- क्षेत्र
- एक वस्तु
- स्वतंत्र प्रतियोगिता
- उपर्युक्त सभी

पूर्ण प्रतियोगिता की मान्यताएं क्या-क्या है / हैं?

Copy

37 responses



- वस्तुएँ समरूप होती हैं
- वस्तु कीमत का निर्धारण उद्योग के द्वारा किया जाता है
- फर्मों का उद्योग में प्रवेश तथा बहिर्गमन पर कोई प्रतिबन्ध नहीं होता है
- उपर्युक्त सभी

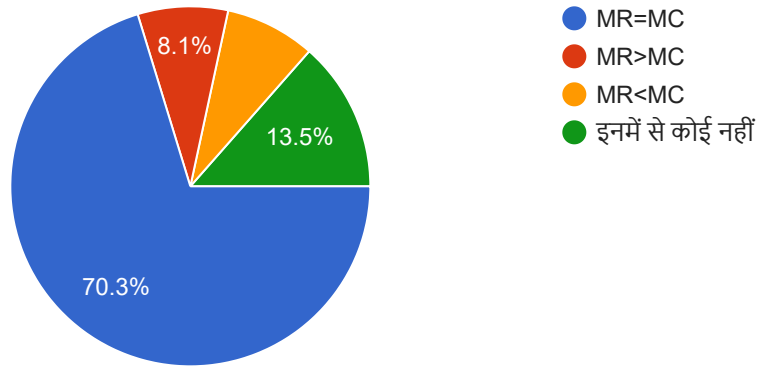




पूर्ण प्रतियोगिता में एक फर्म के अधिकतम लाभ या संतुलन की शर्त क्या है?

Copy

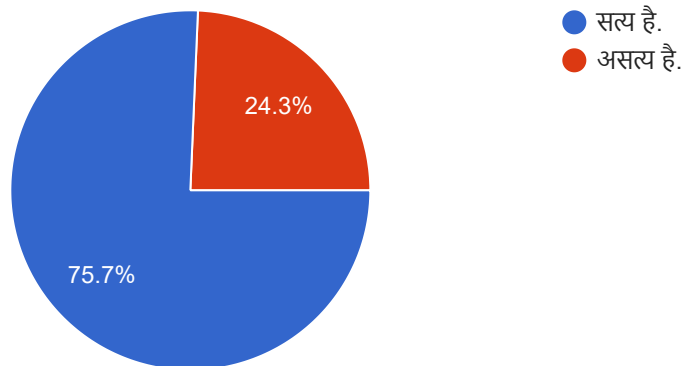
37 responses



"अपूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत दीर्घकाल में एक फर्म हमेशा सामान्य लाभ प्राप्त करता है" -यह कथन

Copy

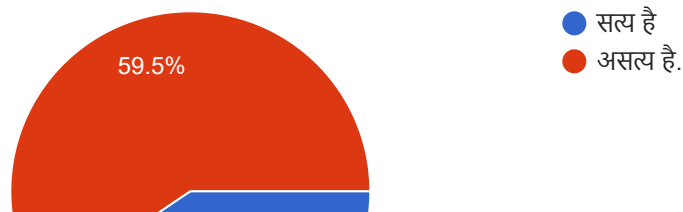
37 responses

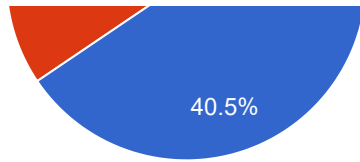


"एकाधिकार के अंतर्गत दीर्घकाल में एक एकाधिकारी हमेशा असामान्य लाभ प्राप्त करता है" -यह कथन

Copy

37 responses





विभेदकारी एकाधिकार क्या है?

37 responses

Nhi pta

विभेदकारी एकाधिकार का अर्थ है कि एक ही प्रकार की वस्तु के लिए विभिन्न क्रेताओं से अलग अलग बाजारों में भिन्न-भिन्न कीमत वसूल किया जाता है। इसे ही विभेदकारी एकाधिकार या मूल्य विभेद कहते हैं।

उदाहरण:-छत्तीसगढ़ में विद्युत मंडल द्वारा औद्योगिक उत्पादन के लिए अलग विद्युत दर तथा घरेलू उपभोग के लिए अलग विद्युत दर निर्धारित किया गया है।

विभेदकारी एकाधिकार की रीतियां:- (1) एक ही प्रकार की वस्तु के लिए विभिन्न क्रेताओं से अलग-अलग मूल्य वसूल करते हैं।

(2) विभिन्न लागतों पर उत्पन्न की गई वस्तुओं को एक समान कीमतों पर बेचना।

एक ही समय पर एक जैसी ही वस्तु का एक ही बाजार में या विभिन्न बाजारों में एक ही क्रेता या विभिन्न क्रियाओं से विभिन्न मूल्य व वसूल करना मूल्य विभेद या विभेदकारी एकाधिकारी कहलाता है।

Jab Koi vikreta ek hi prakar ki vastuon ko vibhinn creta ko alag alag kimat pagle star hai tu to uski is niti ko kimat vibhed ud han vibhedan atmak ek Adhikar kahate Hain. Ek hi prakar ki. Vastu ke liye vibhinn pritom se a alag alag mulya vasul karke. Vibhinn na lagata per utpadan ki gai vastuon ko ek saman kimat per bech kar.

कीमत विभेद कुछ विशेष परिस्थितियों में एक अधिकारी अपने कुल लाभ में वृद्धि के उद्देश्य से एक समान वस्तुओं को विभिन्न बाजारों में विभिन्न में कीमतों पर बेचता है। इस प्रकार एक अधिकारी कीमत विभेद करके लाभ कमाता है। कीमत विभेद तभी संभव है जब उत्पादक के पास एक अधिकारी सकती हो।

Vyaktigat kimat vibhed Jab ek Ek Adhikari Apni Vastu ke vibhinn vyaktiyon se Vibhinn kimat leta hai Use vyaktigat kimat vibhed Kahate Hain.

एकाधिकार (Monopoly) " mono " ka अर्थ है एक और " poly " का अर्थ है विक्रेता। इस प्रकार एकाधिकार एक बाजार की स्थिति को संदभित करता है जिसमें किसी विशेष उत्पाद का केवल एक विक्रेता होता है। इसका मतलब यह है कि farm स्वयं उद्योग है और farm के उत्पाद का कोई नजदीकी विकल्प नहीं है। एकाधिकार प्रतिद्वंद्वी कम्पनियों की प्रतिक्रिया के बारे में परेशान नहीं है क्योंकि इसमें कोई प्रतिद्वंद्वी नहीं है।

सामान्यत एकाधिकारी अपनी सभी वस्तुओं के लिये सभी ग्राहकों से सदैव समान कीमत नहीं



लता जब वह एक ही समय में अलग-अलग ग्राहकों से एक ही वस्तु की अलग-अलग कीमत वसूल करता है तो उसे विभेदकारी एकाधिकार कहते हैं

एक ही समय पर एक जैसी वस्तु का एक ही बाजार में या विभिन्न बाजारों में एक ही क्रेता या विभिन्न क्रेताओं से विभिन्न मूल्य वसूल करना मूल्य विभेद या विभेदकारी एकाधिकार कहलाती है।

एक ही समय पर एक ही जैसे ही वस्तु का एक ही बाजार में या विभिन्न मूल्य वसूल करना मूल्य-विभेद या विभेदकारी एकाधिकार कहलाता है। श्रीमती जॉन रॉबिंसन के शब्दों में एक ही नियंत्रण के अंतर्गत उत्पादित एक ही वस्तु को विभिन्न क्रेताओं को विभिन्न कीमतों पर बेचने का कार्य मूल्य विभेद कहलाता है

Ek hi wastu jiska utpadn ek hi utpadk dwara kiya jata hai to alg alg grahko key sath alg alg mulyo pr bechne ki kriya ko muly wibhedkari kahte hai. bijli bord krise key liy km muly pr tatha udhyogo key liy unche muly pr bijli bechta hai.

कीमत विभेद की परिभाषा देते हुए श्रीमती जॉन रॉबिंसन ने लिखा है एक ही नियंत्रण के अंतर्गत उत्पादित एक ही वस्तु विभिन्न क्रेताओं को विभिन्न कीमतों पर बेचने का कार्य मूल्य विभेद कहा जाता है। प्रो. स्ट्रालर के अनुसार समान वस्तु के लिए दो या दो से अधिक मूल्य प्राप्त करने को मूल्य विभेद कहा जाता है उपयुक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि जब एक अधिकारी फार्म अपनी एक ही वस्तु के लिए अलग-अलग कीमतें प्राप्त करती है तब उसे कीमत विभेद कहा जाता है।

विभेदकारी एकाधिकार:- एक ही समय पर एक जैसी ही वस्तु का एक ही बाजार में या विभिन्न बाजारों में एक ही क्रेता या विभिन्न क्रेताओं से विभिन्न मूल्य वसूल करना मूल्य विभेद या विभेदकारी एकाधिकार कहलाता है।

कुछ विशेष परिस्थितियों में एकाधिकारी अपने कुल लाभ में वृद्धि के उद्देश्य से एक समान वस्तुओं को विभिन्न बाजारों और विभिन्न कीमतों में बेचता है। इस प्रकार एकाधिकारी मूल्य विभेद कर लाभ कमाता है। कीमत विभेद तभी संभव है जब उत्पादक के पास एकाधिकारी शक्ति हो।

मूल्य विभेद के उद्देश्य:- मूल्य विभेद का प्रधान उद्देश्य विक्रय आगम को अधिकतम करके, अधिकतम लाभ कमाना होता है। इसके निम्न उद्देश्य भी हैं:-

- 1) भविष्य में विक्रय बढ़ाने के लिए क्रेताओं से वर्तमान में कम मूल्य वसूल करना और उन्हें उस वस्तु का आदि बनाना।
- 2) वस्तु का स्टॉक अधिक हो जाने पर उसे निकालने के लिए कम मूल्य वसूल करना।
- 3) एक नए बाजार में वस्तु के प्रवेश के लिए कम मूल्य वसूल करना।

एक ही समय पर एक जैसी ही वस्तु का एक ही बाजार या विभिन्न बाजारों में एक ही क्रेता या विभिन्न क्रेताओं से विभिन्न मूल्य वसूल करना मूल्य विभेद या विभेदकारी एकाधिकार कहलाता है।

मूल्य विभेद के उद्देश्य:-

मूल्य विभेद का प्रधान उद्देश्य विक्रय आगम को अधिकतम करके, अधिकतम लाभ कमाना होता है। इसके निम्न उद्देश्य भी हैं:-

- 1) भविष्य में विक्रय बढ़ाने के लिए क्रेताओं से कम मूल्य वसूल कर और उन्हें उस वस्तु का आदि बनाना।
- 2) वस्तु का स्टॉक अधिक हो जाने पर उसे निकालने के लिए कम मूल्य वसूल करना।
- 3) एक नए बाजार में वस्तु के प्रवेश के लिए कम मूल्य वसूल करना।

एक ही समय पर एक ही जैसी वस्तु का एक ही बाजार में या विभिन्न बाजारों में एक ही क्रेता या विभिन्न क्रेताओं से विभिन्न मूल्य वसूल करना मूल्य विभेद या विभेदकारी एकाधिकार कहलाता है।

इस प्रकार एकाधिकार एक बाजार की स्थिति को संदर्भित करता है जिसमें किसी विशेष उत्पाद का केवल एक



विक्रेता होता है। इसका मतलब यह है कि फर्म स्वयं उद्योग है और फर्म के उत्पाद का कोई नजदीकी विकल्प नहीं है। एकाधिकार प्रतिद्वंद्वी कंपनियों की प्रतिक्रिया के बारे में परेशान नहीं है क्योंकि इसमें कोई प्रतिद्वंद्वी नहीं है।

एक ही समय पर एक जैसी ही वस्तु का एक ही बाजार में या विभिन्न बाजारों में एक ही क्रेता या विभिन्न क्रेताओं से विभिन्न मूल्य वसूल करना मूल्य विभेद या विभेदकारी एकाधिकार कहलाता है। विभेदकारी का अर्थ है कि एक फर्म एक ही वस्तु के लिए एक ही समय पर दो या अधिक कीमतें लेती है जब एकाधिकारी एक ही वस्तु या सेवा के लिए अपने अलग अलग ग्राहकों से अलग अलग कीमत वसूल करने की नीति अपनाता है तो इसे विभेदात्मक या विवेचनात्मक एकाधिकारी कहते हैं तथा यह नीति विभेदकारी एकाधिकार कहलाती है।

सामान्यतया एकाधिकारी उत्पादक अपने सभी ग्राहकों को एकसमान मूल्य पर वस्तु बेचते हैं परन्तु कभी - कभी वे अलग - अलग ग्राहकों से अलग - अलग मूल्य भी वसूल लेते हैं जब कोई एकाधिकारी उत्पादक अपनी एक जैसी वस्तु को अलग - अलग ग्राहकों को अलग - अलग मूल्य पर बेचता है तो इसे विभेदकारी एकाधिकार या एकाधिकार में मूल्य विभेद कहा जाता है

विभेदकारी एकाधिकार के अंतर्गत दोनों ही बाजारों में (मांग की लोच एवं अधिक लोक) में व्यक्तिगत रूप से सीमांत आगम और सीमांत लागत समान रहना चाहिए तभी एक एक अधिकारी को अधिकतम लाभ प्राप्त होगी।

व्यक्तिगत कीमत विभेद जब एक एकाधिकारी अपनी वस्तु की विभिन्न कीमतें लेता है उसे व्यक्तिगत कीमत विभेद कहते हैं। यह उपयोग कीमत विभेद कहते हैं

विभेदकारी एकाधिकार का आशय:-

एक ही समय पर एक जैसी ही वस्तु का एक ही बाजार में या विभिन्न बाजारों में एक ही क्रेता या विभिन्न क्रेताओं से विभिन्न मूल्य वसूल करना विभेदकारी एकाधिकार कहलाता है।

श्रीमती जॉन रॉबिन्सन के शब्दों में:-

“एक ही नियंत्रण के अन्तर्गत उत्पादित एक ही वस्तु को विभिन्न क्रेताओं को विभिन्न कीमतों पर बेचने का कार्य मूल्य-विभेद कहलाता है।

प्रो० जे० एस० बेन के शब्दों में:-

“मूल्य-विभेद विशेषतया विक्रेताओं की उस क्रिया की ओर संकेत करता है जिसके द्वारा वह समान वस्तु का एक साथ ही विभिन्न क्रेताओं से भिन्न-भिन्न मूल्य वसूल करता है।

मिल्टन एच० स्पेन्सर के शब्दों में :-

“किसी विक्रेता द्वारा एक ही वस्तु के लिये उसी अथवा विभिन्न क्रेताओं से भिन्न-भिन्न कीमतें, तदनुसार लागतों में अन्तर के बिना, लेने की परिपाटी को मूल्य-विभेद कहा जाता है।

मूल्य-विभेद के उद्देश्य :-

मूल्य-विभेद का प्रधान उद्देश्य विक्रय आगम को अधिकतम करके, अधिकतम लाभ कमाना होता है। इस प्रधान उद्देश्य के अतिरिक्त इसके निम्न उद्देश्य और हो सकते हैं :-

- (1) भविष्य में विक्रय बढ़ाने के लिये क्रेताओं से वर्तमान में कम मूल्य वसूल करना और उन्हें उस वस्तु का आदी बनाना।
- (2) क्रेता की देय क्षमता के अनुसार मूल्य वसूल करने के उद्देश्य से धनिकों से अधिक मूल्य वसूल करना तथा निर्धनों से कम।
- (3) एक नये बाजार में वस्तु के प्रवेश के लिये कम मूल्य वसूल करना।
- (4) एक एकाधिकारी अपने लाभों को अधिकतम करने के लिये मूल्य-विभेद की नीति अपना सकता है। वह उन क्रेताओं से अधिक मूल्य वसूल करेगा जिनकी माँग बेलोचदार है।

मूल्य-विभेद की आवश्यक दशाएँ:-

1) एकाधिकारी स्थिति :- पूर्ण प्रतियोगिता में मूल्य-विभेद सम्भव नहीं। इसके लिये विक्रेता फर्म का एकाधिकारी स्थिति

में होना आवश्यक है। यदि उद्योग की समस्त फर्मों के बीच मूल्य-विभेद के लिये स्पष्ट समझौता हो गया है तो भी मूल्य-विभेद सम्भव है।

(2) पृथक बाजार :- मूल्य-विभेद के लिये यह आवश्यक है कि वस्तु के दो या अधिक पृथक बाजार हों। वे एक दूसरे से पर्याप्त दूर होने चाहिये जिससे सस्ते बाजार से वस्तु महँगे बाजार में न पहुँच सके। विभिन्न बाजारों को पृथक रखने वाली बातें निम्नलिखित हैं :

एक ही समय पर एक जैसी ही वस्तु का एक ही बाजार में या विभिन्न बाजारों में एक ही केता या विभिन्न केताओं से विभिन्न मूल्य वसूल करना मूल्य विभेद या विभेदकारी एकाधिकार कहलाता है

विभेदकारी एकाधिकार - एकाधिकार के द्वारा जब अपने द्वारा उत्पादित वस्तुओं के लिए अलग-अलग क्रियाओं से भिन्न भिन्न कीमतों ली जाती है उसे कीमत और उस अधिकारी को विभेदकारी एकाधिकार कहते हैं।

विभेदकारी एकाधिकार जब कोई विक्रेता एक ही प्रकार की वस्तु को विभिन्न क्रियाओं को अलग अलग कीमतों पर बेचता है तो उसकी इस नीति को कीमत विभेद या विभेदात्मक एकाधिकार कहते हैं। प्रो. स्ट्रुगलर के शब्दों में तकनीकी दृष्टि से समान वस्तु के लिए दो या दो से अधिक कृत्यों से भिन्न-भिन्न कीमती वसूल करने के कार्य को मूल्य मूल्य विभेद कहते हैं। प्रो. बेन के अनुसार कीमत विभेद कठोर रूप से विक्रेता द्वारा एक ही प्रकार की वस्तु के लिए विभिन्न क्रियाओं से भिन्न भिन्न मूल्य वसूलने के कार्य की और इंगित करता है। मूल्य विभेद की रीतियाँ, व्यापक अर्थ में मूल्य विभेद दो तरीके से किए जाते हैं। 1, एक ही प्रकार की वस्तु के लिए विभिन्न कर्ताओं से अलग-अलग मूल्य वसूल करके। 2. विभिन्न लागतों पर उत्पन्न की गई वस्तुओं को एक समान कीमतों पर बेचकर। उपदेश खटीक विभेदात्मक एकाधिकार का उद्देश्य अपने लाभ को अधिकतम करना होता है। एकाधिकार अपने लाभ को अधिकतम करने के लिए वस्तु का उत्पादन उस सीमा तक करता है, जहाँ पर उसकी सीमांत लागत एम सी और सीमांत आए एम आर एक दूसरे के बराबर होती है। इसके अतिरिक्त वस्तु की उत्पादन लागत दी हुई होने पर एक अधिकारी को अधिकतम लाभ उस उत्पादन स्तर पर प्राप्त होगा जहाँ पर उसकी सीमांत लागत एमसी उसके बाजारों के संयुक्त सीमांत आय एम आर के बराबर होगी, इस प्रकार एकाधिकार के लाभ को अधिकतम करने के लिए विभेद आत्मक एकाधिकारी अपने लाभ को अधिकतम करने के लिए वस्तु को बाजार मांग की लोच के आधार पर विभाजित करता है।

विभेदकारी एकाधिकार-- वस्तु विभेद की विशेषता ही इस प्रतियोगिता को पूर्ण प्रतियोगिता से अलग करती है। वस्तु विभेद जितना अधिक होगा फर्मों में एकाधिकार का अंश उतना ही अधिक होगा। एकाधिकारी प्रतियोगिता में विभिन्न फर्मों द्वारा बनाई जा रही वस्तुएं पूर्ण प्रतियोगिता की वस्तुओं के समान एक जैसी नहीं होती है। और ना ही यह वस्तुएं एक अधिकारी वस्तुओं के समान होती है। पदार्थ विभेद के अनेक उदाहरण हो सकते हैं। जैसे हमाम साबुन, लक्स साबुन, पीयर्स सोप, आदि।

एकाधिकार mono का अर्थ एक और poly का अर्थ है कि विक्रेता इस प्रकार एकाधिकार एक बाजार की स्थिति को संदर्भित करता है। इसमें किसी विशेष उत्पादक का केवल एक ही विक्रेता होता है। इसका मतलब यह है कि फार्म सेम उद्योग है और फार्म के उत्पादक का कोई नजदीकी विकल्प नहीं है।

विभेदात्मक एकाधिकार जब कोई विक्रेता एक ही प्रकार की वस्तु को विभिन्न क्रियाओं को अलग-अलग कीमतों पर बेचता है तो उसकी इस नीति को कीमत विभेद या विभेद आत्मक एकाधिकार कहते हैं। प्रो. स्ट्रुगलर शब्दों में तकनीकी दृष्टि से सामान वस्तु के लिए दो या दो से अधिक क्रेताओं से भिन्न-भिन्न कीमती वसूल करने के कार्य को मूल्य विभेद कहते हैं। प्रो. बेन के अनुसार कीमत विभेद कठोर रूप से विक्रेता द्वारा एक ही प्रकार की वस्तु के लिए विभिन्न क्रेता से भिन्न-भिन्न मूल्य वसूलने के कार्य के और इंगित करता है। मूल्य विभेद की रीतियाँ, व्यापक अर्थ में मूल्य विभेद दो तरीके से किए जाते हैं। 1, एक ही ही प्रकार की वस्तु के लिए विभिन्न क्रेताओं से अलग अलग मूल्य वसूल करके। 2, विभिन्न लागतों पर उत्पन्न की गई वस्तुओं को एक समान कीमतों पर बेच कर।



उत्तर:-- एकाधिकारी वस्तु की विभिन्न इकाइयों को भिन्न भिन्न व्यक्तियों को ,भिन्न-भिन्न समय पर , एक ही कीमत पर बेचता है !

एकाधिकार में उत्पादक के लिए अपना लाभ अधिकतम करना संभव नहीं होता है !

अतः वह अलग-अलग कीमत प्राप्त करता है !उपभोक्ताओं से भिन्न भिन्न कीमत की प्रवृत्ति को कीमत विभेद या विभेदीकरण एकाधिकार कहा जाता है!

दूसरे शब्दों में-- प्रोफ़ेसर स्टीगर अनुसार:-- "कीमत वेदीकरण का अर्थ है, कि तकनीकी दृष्टि से समरूप पदार्थों को इतनी भिन्न-भिन्न कीमतों पर बेचना जो उनकी सीमांत लागतों की अनुपात से कहीं अधिक है!" विभेदीकरण कहलाता है !

विभेदकारी एकाधिकार "mono" का अर्थ है एक और "poly" का अर्थ विक्रेता। इस प्रकार एकाधिकार एक बाजार की स्थिति को संदर्भित करता है जिसमें किसी विशेष उत्पाद का केवल एक विक्रेता होता है इसका मतलब यह है कि बम स्वयं उद्योग है और फम के उत्पाद का कोई नजदीकी विकल्प नहीं है। एकाधिकार प्रतिव्यक्ति की प्रतिक्रिया के बारे में परेशान नहीं हैं क्योंकि इसमें कोई प्रतिव्यक्ति नहीं हैं।

एकाधिकारी के द्वारा जब अपने द्वारा उत्पादित वस्तुओं के लिए अलग-अलग विक्रेताओं से भिन्न-भिन्न कीमतें ली जाती हैं उस कीमत विभेद और उस एकाधिकारी विभेदकारी एकाधिकार कहते हैं।

विभेदकारी एकाधिकार का तात्पर्य केवल यह है कि जन्म मूल वंश आदि के आधार पर व्यक्तियों के बीच विशेष अधिकार को प्रदान करने और स्लावों के अधीन कोई विभेद नहीं किया जाएगा। व्यक्ति देश की साधारण विधि के अधीन होगा।

एक ही समय पर एक ही वस्तु का एक ही बाजार में या विभिन्न बाजारों में एक ही क्रय या विभिन्न क्रयों से विभिन्न मूल्य वसूल करना मूल्य विभेद या विभेदकारी कहलाता है,,

एक ही समय पर एक ही वस्तु का एक ही बाजार में विभिन्न बाजारों में एक ही क्रय या एक ही विक्रेता विभिन्न विक्रेता मूल्य वसूल करना विभेद या विभेदकारी कहलाता है जब एकाधिकार विभिन्न क्रय विक्रेताओं को मूल्य भिन्न भिन्न कीमतों में खरीदना है तुमसे तो उसे वेद कार एकाधिकार कहलाता है

विभेदकारी एकाधिकार का आशय:-

एक ही समय पर एक जैसी ही वस्तु का एक ही बाजार में या विभिन्न बाजारों में एक ही क्रय या विभिन्न क्रयों से विभिन्न मूल्य वसूल करना विभेदकारी एकाधिकार कहलाता है।

श्रीमती जॉन रॉबिन्सन के शब्दों में:-

“एक ही नियंत्रण के अन्तर्गत उत्पादित एक ही वस्तु को विभिन्न क्रयों को विभिन्न कीमतों पर बेचने का कार्य मूल्य-विभेद कहलाता है।

प्रो० जे० एस० बेन के शब्दों में:-

“मूल्य-विभेद विशेषतया विक्रेताओं की उस क्रिया की ओर संकेत करता है जिसके द्वारा वह समान वस्तु का एक साथ ही विभिन्न क्रयों से भिन्न-भिन्न मूल्य वसूल करता है।

मिल्टन एच० स्पेन्सर के शब्दों में :-

“किसी विक्रेता द्वारा एक ही वस्तु के लिये उसी अथवा विभिन्न क्रयों से भिन्न-भिन्न कीमतें, तदनुसार लागतों में अन्तर के बिना, लेने की परिपाटी को मूल्य-विभेद कहा जाता है।

मूल्य-विभेद के उद्देश्य :-

मूल्य-विभेद का प्रधान उद्देश्य विक्रय आगम को अधिकतम करके, अधिकतम लाभ कमाना होता है। इस प्रधान उद्देश्य के अतिरिक्त इसके निम्न उद्देश्य और हो सकते हैं :-

(1) भविष्य में विक्रय बढ़ाने के लिये क्रयों से वर्तमान में कम मूल्य वसूल करना और उन्हें उस वस्तु का आदी बनाना।

(2) क्रय की दृष्टि से अन्तर्गत मूल्य वसूल करने के उद्देश्य से विक्रेताओं से अधिक मूल्य वसूल करना तथा विभिन्न



(2) प्रदाता पर दत्त दानता पर अनुसार मूल्य वसूल पररण पर उद्देश्य से वागपरा से जावपर मूल्य वसूल पररना तथा गवना से कम।

(3) एक नये बाजार में वस्तु के प्रवेश के लिये कम मूल्य वसूल करना।

(4) एक एकाधिकारी अपने लाभों को अधिकतम करने के लिये मूल्य-विभेद की नीति अपना सकता है। वह उन क्रेताओं से अधिक मूल्य वसूल करेगा जिनकी माँग बेलोचदार है।

मूल्य-विभेद की आवश्यक दशायें:-

1) एकाधिकारी स्थिति :- पूर्ण प्रतियोगिता में मूल्य-विभेद सम्भव नहीं। इसके लिये विक्रेता फर्म का एकाधिकारी स्थिति में होना आवश्यक है। यदि उद्योग की समस्त फर्मों के बीच मूल्य-विभेद के लिये स्पष्ट समझौता हो गया है तो भी मूल्य-विभेद सम्भव है।

(2) पृथक बाजार :- मूल्य-विभेद के लिये यह आवश्यक है कि वस्तु के दो या अधिक पृथक बाजार हों। वे एक दूसरे से पर्याप्त दूर होने चाहिये जिससे सस्ते बाजार से वस्तु महँगे बाजार में न पहुँच सके।

विभेदकारी एकाधिकारी अपनी सभी वस्तुओं के लिये सभी ग्राहकों से सदैव समान कीमत नहीं लेता जब वह एक ही समय में भिन्न ग्राहकों से एक ही वस्तु की अलग-अलग कीमतें वसूल करता है तो उसे विभेदकारी एकाधिकार कहते हैं। समान वस्तु के लिए दो या दो से अधिक कीमत वसूल करने को कीमत विभेद कहते हैं।

एकाधिकार किसी वस्तु का एकमात्र उत्पादक होता है। एकाधिकारी के द्वारा किसी वस्तु को उत्पादित करके उस वस्तु को अलग-अलग क्रेताओं को अलग-अलग कीमतें ली जाती है, उसे कीमत विभेद और एकाधिकारी विभेदकारी कहते हैं।

Vibhed kari ekadhikar yah hy ki ek hi wastu ka utpadkk jishka ek hi utpadk hota hy jo khud hi us wastu ka mulya nirnay krta hy prantu samanya mulya prr jise vibhedkari ekadhikar kahte hy

This content is neither created nor endorsed by Google. [Report Abuse](#) - [Terms of Service](#) - [Privacy Policy](#)

Google Forms



तृतीय इकाई परीक्षा (ऑनलाईन)

कक्षा : बीए-भाग दो ,विषय : अर्थशास्त्र

(शैक्षणिक सत्र : 2020-21)

शास. शहीद गेंदसिंह महाविद्यालय, चारामा. जिला-कांकेर (छग)

तृतीय इकाई परीक्षा (समाष्टि अर्थशास्त्र)

8 responses

[Publish analytics](#)

छात्र का पूरा नाम

8 responses

Yashwant pidda

CHANDRAKUMAR

TIKESHWAR SINHA

Terisa sori

Rupwati Salam

Vijay Kumar Nishad

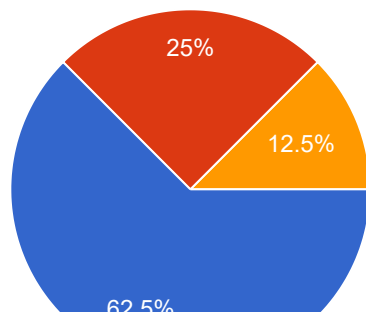
CHANDRABHAN

Pradeep kumar

कक्षा

8 responses

[Copy](#)



- बीए-भाग दो
- बीए-भाग एक
- बीए-भाग तीन



व्यापार चक्र क्या है?

8 responses

किसी अर्थव्यवस्था में एक निश्चित समयान्तराल पर आर्थिक क्रियाओं में होने वाले बदलाव को व्यापार चक्र कहते हैं।

किसी अर्थव्यवस्था में एक निश्चित समयान्तराल पर आर्थिक क्रियाओं में होने वाले बदलाव को व्यापार चक्र कहते हैं। पूँजीवादी व्यवस्था में सदा तेजी या सदा मन्दी नहीं रहती बल्कि तेजी के बाद मन्दी तथा मन्दी के बाद तेजी का क्रम आता रहता है। यह पूँजीवादी अर्थव्यवस्था की प्रमुख विशेषता है। ... इसको मन्दी काल भी कहा जाता है।

व्यापार चक्र बाजार अर्थव्यवस्था में एक वर्ष अथवा कुछ माह में उत्पादन, व्यापार और सम्बंधित गतिविधि को सन्दर्भित करने वाला एक शब्द है। व्यापारिक-चक्र के चढ़ाव के दौरान ऊँची राष्ट्रीय आय, अधिक उत्पादन, अधिक रोज़गार तथा ऊँची कीमतें पाई जाती हैं।

व्यापार चक्र आर्थिक क्रियाओं में होने वाले चक्राकार उतार- चढ़ावों से ही हो ता है, जो कि नियत समय पर बार-बार उत्पन्न होते रहते हैं।

प्रो. बेरहम के अनुसार, "व्यापार चक्र वैभव एवं सम्पन्नता का एक ऐसा काल है, जिसके पश्चात मंदी या अवकाश का आना स्वाभाविक हो जाता है।

व्यापक चक्र का आशय आर्थिक क्रियाओं में होने वाले चक्राकार उतार-चढ़ावों से ही होता है, जो की नियत समय पर बार-बार उत्पन्न होते रहते हैं।

व्यापक चक्र के संबंध में दो लेखकों ने अपनी परिभाषाएं अर्जित की है -

(1) जे. टिनबर्गर के अनुसार, " व्यापक चक्र उच्चावचो के मध्य का एक खेल है और एक आर्थिक पद्धति इन उच्चावचो के चक्रीय समायोजित विचार को प्रदर्शित करने में सफल हो जाती है।"

(2) प्रो.बेनहम के अनुसार, " व्यापक चक्र वैभव और संपन्नता का एक ऐसा काल है ,जिसके पश्चात मंदी या अवकाश का आना संभाविक हो जाता है।

व्यापार चक्र

प्रो, हॉट्टे के शब्दों में,व्यापार चक्र एक शुद्ध मौद्रिक घटना है क्योंकि सामान्य मांग एक समुद्री घटना है उनके अनुसार यद्यपि युद्ध भूकंप बाढ़ इत्यादि प्राकृतिक प्रकोप अमात्रिक कारण कभी-कभी अर्थव्यवस्था के कुछ भाग में कुछ समय के लिए मंदी अथवा तेजी की घटना को जन्म दे सकते हैं परंतु उनके द्वारा व्यापार चक्र जैसी पेचीदा घटना उत्पन्न हो सकती है बल्कि मुद्रा की

किसी अर्थव्यवस्था में एक निश्चित

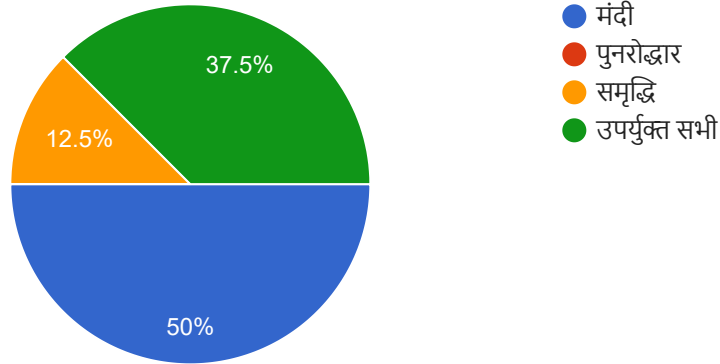


व्यापार चक्र का आशय आर्थिक क्रियाओं में हानि वाले चक्राकार उतार चढ़ावों से ही होता है जो कि नियत समय पर बार बार उत्पन्न होते हैं

व्यापार चक्र की कौन-कौन सी अवस्थाएं हैं?

 Copy

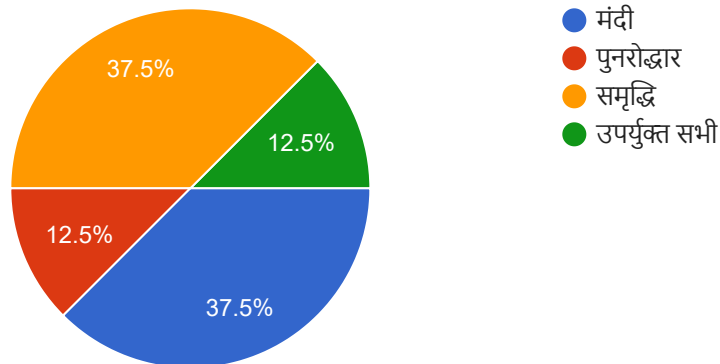
8 responses



कीन्स के अनुसार पूंजी की सीमांत उत्पादकता में वृद्धि के कारण अर्थव्यवस्था में..... आती है.

 Copy

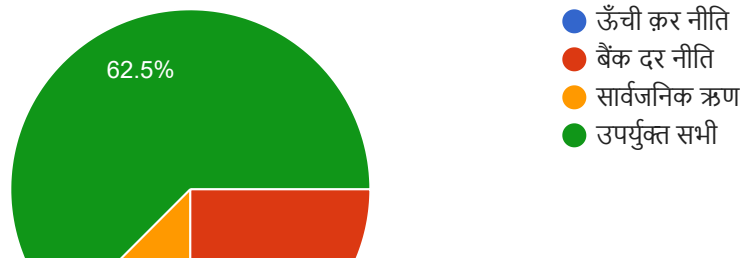
8 responses

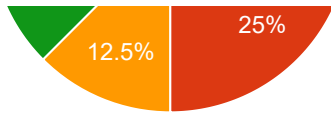


व्यापार चक्र रोकने का मौद्रिक नीति सम्बंधित उपाय है

 Copy

8 responses

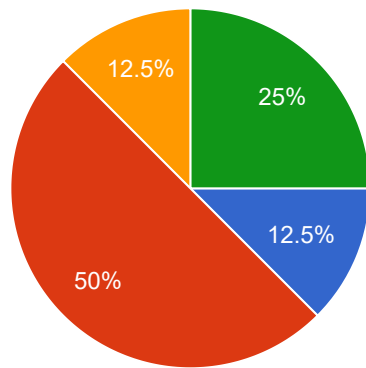




व्यापार चक्र का मुख्य दुष्प्रभाव है

Copy

8 responses

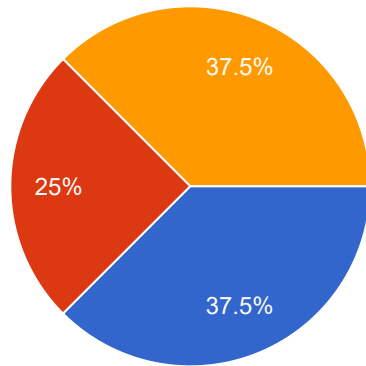


- सट्टेबाजी को बढ़ावा
- बेरोजगारी
- आर्थिक अनिश्चितता
- उपर्युक्त सभी

आर्थिक स्थिरता का अर्थ है

Copy

8 responses



- कीमतों को स्थिर करना
- एक समान आय
- सभी को रोजगार
- कानून व्यवस्था स्थापित करना

This content is neither created nor endorsed by Google. [Report Abuse](#) - [Terms of Service](#) - [Privacy Policy](#)

Google Forms



द्वितीय इकाई परीक्षा (ऑनलाईन)

कक्षा : बीए—भाग एक ,विषय : अर्थशास्त्र

(शैक्षणिक सत्र : 2020—21)

शास. शहीद गेंदसिंह महाविद्यालय, चारामा. जिला—कांकेर (छग)

द्वितीय इकाई परीक्षा (व्याष्टि अर्थशास्त्र)

32 responses

[Publish analytics](#)



छात्र का पूरा नाम

32 responses

JITENDRA VERMA

DOMENDRA SINGH DARRO

Divya dewangan

Chhabila gajendra

TULSI DEWANGAN

DURGESHWARI SAHU

MADHURI SONWANI

Chandani sinha

KHOMENDRA KUMAR

Niranjan Sinha

Mahesh kumar salam

GULSHAN SINGH

Varsha netam

Anita Korram

savita sahu

Aarti Taram

DEVIKA DATEI



DEVIKA PATEL

Namita netam

MANISH KUMAR DEWANGAN

Monika darro

SUSHILA NISHAD

HEMLATA SALAM

SEEMA ACHLE

PRIYA MAHLA

Kaleshwar sahu

CHANDRAHAS MARKAM

Bhagwat prasad taram

SAHIL KUMAR MARKAM

Tejkumar

Thaneshwari sahu

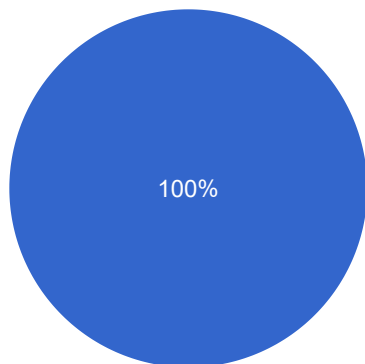
Lomeshwari Sahu

SAHIL NETAM

कक्षा

 Copy

32 responses



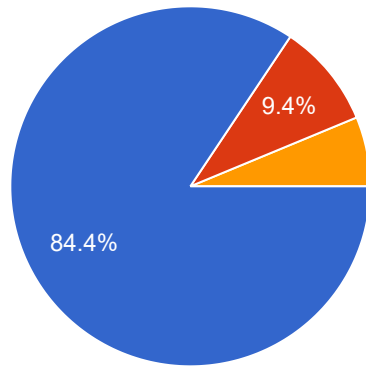
बीए-भाग एक



अल्पकालीन उत्पादन फलन को किस नाम से जानते हैं?

 Copy

32 responses

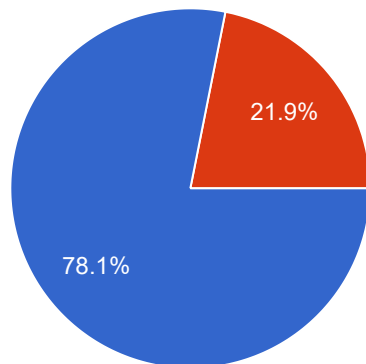


- परिवर्तनशील अनुपातों का नियम
- पैमाने का प्रतिफल
- पूर्ण प्रतियोगिता
- एकाधिकार

उत्पादन फलन "उत्पादित वस्तु और उत्पादन साधन" के मध्य कार्यात्मक सम्बन्ध को बताता है - यह कथन

 Copy

32 responses

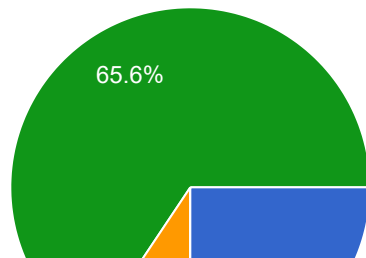


- सत्य है.
- असत्य है.

समोत्पाद वक्र की क्या विशेषता/विशेषताएं हैं?

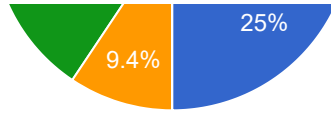
 Copy

32 responses



- दो समोत्पाद वक्र एक दूसरे को काट नहीं सकते.
- समोत्पाद वक्र ना ही OX अक्ष को और ना ही OY अक्ष को स्पर्श कर सकता है.
- एक के ऊपर कई समोत्पाद वक्र हो सकते हैं.
- उत्पादन सम्बन्धी

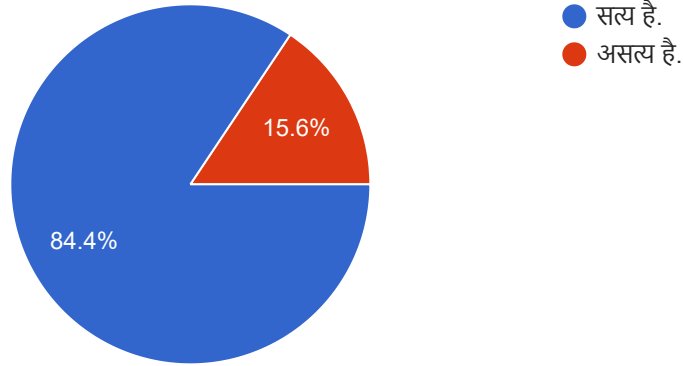




"पैमाने के प्रतिफल में सभी साधन परिवर्तनशील होते हैं" - यह कथन

Copy

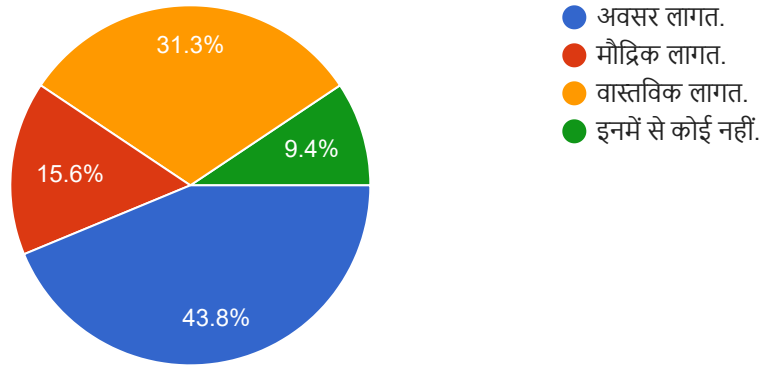
32 responses



"किसी साधन को उत्पादन में आकर्षित करने के लिए कम से कम इतना पारिश्रमिक अवश्य देना पड़ेगा जितना की वह अन्य उत्पादन कार्य से प्राप्त कर सकता है " -यह कथन किस लागत से सम्बंधित है?

Copy

32 responses



मौद्रिक लागत क्या है?

32 responses

मौद्रिक लागत से तात्पर्य है कि एक उत्पादक उत्पादन ईकाई द्वारा एक वस्तु के उत्पादन में किए गए कुल मौद्रिक व्यय, मौद्रिक लागत कहलाती हैं। मौद्रिक लागत के अन्तर्गत निम्न व्ययों को शामिल किया गया है (1) कच्चे माल पर व्यय। (2) प्रबंधन पर व्यय। (3) यातायात पर व्यय। (4) पूंजी को दिए जाने वाला ब्याज। (5) भूमि को दिए जाने वाला लगान। (6) श्रमिकों तथा कर्मचारियों को दिए जाने वाला वेतन। (7) घिसावट व्यय। (8) बिमा पर व्यय। (9) सामान्य लाभ। (10) विज्ञापन पर व्यय। (11) ईंधन/बिजली आपूर्ति पर व्यय। (12) भारी मशीनरी पर व्यय।

Nhi pta

Modrik lagat ek utpadak AVN farmer yah ka ut m kaccha Mal ka ka kharch. shramik AVN karmcharyon ko majduri vetan ka bhugtan. Bhari e machinery ka kharch. punji ko diye jaane wala kharch. Bhumi ko diye jaane wala Lagaan. vigyapan par kharch. yatayat per kharch. Bima par kharch. samanya Labh indhan par kharch bijali per kharch.ain kiye Gaye kul modrik lagat main vah ko modrik lagat kahan jata hai modric ke ke antargat nimnalikhit hipadan ikai dwara ra ek vastu 2K ke utpadan

किसी फर्म द्वारा एक वस्तु के उत्पादन में किए गए कुल मुद्रा को मुद्रा लागत कहते हैं दूसरे शब्दों में उत्पत्ति के समस्त साधनों के मूल्य को यदि मुद्रा में व्यक्त कर दिया जाए तो उत्पादन इन उत्पत्ति के साधन की सेवाओं को प्राप्त करने में जितना कुल व्यय है मौद्रिक लागत कहलाती है

Maudrik lagat ak chhatr sabd h jisaka sanderbh apechhakrit pratyakchh asani semapne yogya vritiy lagat h yah amtaur pr anya ke viprit lagat jaise pratistha, kermchari, grahak sadbhavna adi ke rup me upyog kiya jata h

किसी फर्म द्वारा एक वस्तु के उत्पादन में किए गए कुछ मुद्रा व को मुद्रा लागत कहते हैं। दूसरे शब्दों में, उत्पत्ति के समस्त साधनों के मूल्य को यदि मुद्रा में व्यक्त कर दिया जाए तो उत्पादक इन इन उत्पत्ति के साधन की सेवाओं को प्राप्त करने में जितना कुछ व्यय करता है, मुद्रा लागत कहलाती है।

मौद्रिक लागत एक छत्र शब्द है जिसका संदर्भ अपेक्षाकृत प प्रतेछ आसानी से मापने योग्य वित्तीय लागत है। यह आम तौर पर अन्य के विपरीत समान रूप से वास्तविक, लेकिन कम आसानी से मात्रात्मक" लागत" जैसे प्रतिष्ठा, कर्मचारी/ ग्राहक सद्भावना, आदि के रूप में उपयोग किया जाता है। मौद्रिक लागत एक मुद्रा में मूली है जो एक व्यक्ति व्यवसाय या संसाधन उत्पाद या सेवा पर बाजार की जगह हैं वास्तव में हमारी आदमी करते हुए स्थान में अधिकांश वस्तुओं और सेवाओं की कीमत मौद्रिक मूल्य पर आधारित होती है मौद्रिक लागत एक- इक छत्र शब्द है जिसका संदर्भ अपेक्षाकृत प्रत्येक्ष आसानी से मापने अदुत्तिय लागत है।



किसी फर्म द्वारा एक वस्तु के उत्पादन में किए गए कुल मुद्रा व्यय को मुद्रा लागत कहते हैं। दूसरे शब्दों में उत्पादक के समस्त साधनों के मूल्य को यदि मुद्रा में व्यय कर दिया जाए तो उत्पादक इन उत्पादक के साधनों की सेवाओं को प्राप्त करने में जितना कुल व्यय करता है मौद्रिक लागत कहलाती है। मौद्रिक लागत निम्नलिखित माद को सम्मिलित किया जा सकता है 1 कच्चे माल पर व्यय 2 श्रम की मजदूरी एवं वेतन 3 अविभाज्य बड़ी उपकरण एवं मशीन पर व्यय 4 पूंजी पर दिया जाने वाला ब्याज 5 भूमि का किराया अर्थात् लगान 6 मशीन की टूट-फूट एवं दिसावर 7 प्रबंध व्यय 8 विज्ञापन व्यय 9 यातायात व्यय 10 बीमा कंपनी को दी जाने वाली धनराशि 11 सामान्य लाभ 12 इंधन व्यय

किसी वस्तु की निश्चित मात्रा में उत्पादित करने में जो व्यय होता है उसे मौद्रिक लागत कहा जाता है।

उत्पादन की वह इकाई जिसमें किसी वस्तु को बनाने में किया गया कुल खर्च या व्यय को उसकी मौद्रिक लागत कहते हैं

मौद्रिक की लागत एक छात्र शब्द है जिसका संदर्भ अपेक्षाकृत प्रत्येक आसानी से मापने योग्य व3 लागत है योग्य समिति लागत है यहां आम तौर पर अन्य के विपरीत समान रूप से वास्तविक लेकिन कम आसानी से मात्रात्मक लागत से प्रतिष्ठा कर्मचारी ग्राहक संभावना आदि के रूप में प्रयोग किया जाते हैं

मौद्रिक लागत एक छत्र शब्द है जिसका संदर्भ अपेक्षाकृत पतयक्ष आसानी से मापने योग्य वित्तीय लागत है यह आप तौर पर अन्य के विपरीत सामान रूप से वास्तविक लेकिन कम आसानी से मात्रात्मक लागत जैसे पतिषठा कर्मचारी ग्राहक सदावना आदि के रूप में उपयोग किया जाता है .

K

मौद्रिक लागत एक वस्तु की यह निश्चित मात्रा उत्पादित करने की मौद्रिक लागत उत्पादन के विभिन्न साधनों जो कि उस वस्तु के उत्पादन में प्रयोग किए गए हैं की भुगतानों का योग होता है इस प्रकार मौद्रिक लागत में कच्चे माल का मूल्य श्रम की मजदूरी एवं वेतन कारखाना बिलिंग का किराया लगाई गई है पूंजी का ब्याज बीमे की प्रज्ञा जी मशीनों एवं उपकरणों का खर्च बिजली इंधन का खर्च मशीनों के मूल्य हास संपत्ति कर उत्पादन कर तथा यातायात एवं विज्ञापन का खर्च सभी सम्मिलित किए जाते हैं उसे मौद्रिक लागत कहते हैं

मौद्रिक लागत -उत्पत्ति के साधनों के लिए जो धन व्यय किया जाता है वह उसकी मौद्रिक लागत कहते हैं या किसी वस्तु के उत्पादन पर द्रव्य के रूप में उत्पादन के उपादानों पर जो व्यय किया जाता है । उसे मौद्रिक कहते हैं

किसी फर्म द्वारा एक वस्तु के उत्पादन में किए गए कुल मुद्रा व्यय को मुद्रा लागत कहते हैं दूसरे शब्दों में उत्पादक के समस्त साधनों के मूल्य को यदि मुद्रा में शामिल कर दिया जाए तो उत्पादक उत्पादक के साधनों की सेवाओं को प्राप्त करने में जितना कुल व्यय करता है मौद्रिक लागत कहलाती है

एक उत्पादक या फर्म या उत्पादन इकाई द्वारा एक वस्तु के उत्पादन में किए गए कुल मौद्रिक खर्च या व्यय को मौद्रिक लागत कहा जाता है। मौद्रिक लागत के अंतर्गत निम्नलिखित व्ययों को शामिल किया गया है। (1) कच्चे माल पर व्यय।(2) श्रमिक एवं कर्मचारी को मजदूरी या वेतन का भुगतान। (3) भारी मशीनरी पर व्यय।(4) पूंजी को दिए जाने वाला ब्याज। (5) भूमि को दिए जाने वाला लगान

मौद्रिक लागत – उत्पादक के साधनों के प्रयोग के लिए जो धन व्यय किया जाता है, वह उसकी मौद्रिक लागत होती है या किसी वस्तु के उत्पादन पर द्रव्य के रूप में उत्पादन के उपादानों पर जो व्यय किया जाता है उसे मौद्रिक या द्राव्यिक लागत कहा जाता है। अर्थशास्त्रियों के अनुसार उत्पादक की मौद्रिक लागत में निम्नलिखित तत्त्व सम्मिलित होते हैं (क) स्पष्ट लागतें (Explicit Costs) – इनके अन्तर्गत वे सब लागतें सम्मिलित की जाती हैं, जो उत्पादक के द्वारा स्पष्ट रूप से विभिन्न उपादानों को खरीदने (क्रय करने) के लिए व्यय की जाती हैं। (ख) अस्पष्ट लागतें (Implicit Costs) – इनके अन्तर्गत उन साधनों एवं सेवाओं का मूल्य सम्मिलित होता है, जो उत्पादक के द्वारा प्रयोग की जाती हैं, किन्तु जिनके लिए वह प्रत्यक्ष रूप से भुगतान नहीं करता। उत्पादन में प्रयोग किये जाने वाले कुछ साधनों का



स्वामा व्यवसाया स्वयं हा सकता है। इसलिए वह उनक लिए प्रत्यक्ष रूप से भुगतान नही करता। उद्यम क स्वयं क साधनों के बाजार दर पर पुरस्कारों को अस्पष्ट लागतें कहा जाता है। उपर्युक्त स्पष्ट लागतें एवं अस्पष्ट लागतों से स्पष्ट होता है कि मौद्रिक लागत के अन्तर्गत निम्नलिखित दो बातें सम्मिलित होती हैं वस्तु के उत्पादन हेतु आवश्यक उत्पादानों की क्रय-कीमत या उन्हें किया गया भुगतान। फर्म के मालिक द्वारा लगाये जाने वाले उत्पादानों की अनुमानित कीमत एवं सामान्य लाभ सम्मिलित रहते हैं।

मौद्रिक लागत – उत्पत्ति के साधनों के प्रयोग के लिए जो धन व्यय किया जाता है, वह उसकी मौद्रिक लागत होती है या किसी वस्तु के उत्पादन पर द्रव्य के रूप में उत्पादन के उत्पादानों पर जो व्यय किया जाता है उसे मौद्रिक या

द्राव्यिक लागत कहा जाता है। अर्थशास्त्रियों के अनुसार उत्पादक की मौद्रिक लागत में निम्नलिखित तत्त्व सम्मिलित होते हैं (क) स्पष्ट लागते – इनके अन्तर्गत वे सब लागतें सम्मिलित की जाती हैं, जो उत्पादक के द्वारा स्पष्ट रूप से विभिन्न उत्पादानों को खरीदने (क्रय करने) के लिए व्यय की जाती हैं। (ख) अस्पष्ट लागते – इनके अन्तर्गत उन साधनों एवं सेवाओं का मूल्य सम्मिलित होता है, जो उत्पादक के द्वारा प्रयोग की जाती हैं, किन्तु जिनके लिए वह प्रत्यक्ष रूप से भुगतान नहीं करता। उत्पादन में प्रयोग किये जाने वाले कुछ साधनों का स्वामी व्यवसायी स्वयं हो सकता है। इसलिए वह उनके लिए प्रत्यक्ष रूप से भुगतान नहीं करता। उद्यमी के स्वयं के साधनों के बाजार दर पर पुरस्कारों को अस्पष्ट लागतें कहा जाता है। उपर्युक्त स्पष्ट लागतें एवं अस्पष्ट लागतों से स्पष्ट होता है कि मौद्रिक लागत के अन्तर्गत निम्नलिखित दो बातें सम्मिलित होती हैं 1) वस्तु के उत्पादन हेतु आवश्यक उत्पादानों की क्रय-कीमत या उन्हें किया गया भुगतान। 2) फर्म के मालिक द्वारा लगाये जाने वाले उत्पादानों की अनुमानित कीमत एवं सामान्य लाभ सम्मिलित रहते हैं।

उत्तर= एक उत्पादक /फर्म /उत्पादन इकाई द्वारा एक वस्तु के उत्पादन में किए गए कुछ मौद्रिक खर्च या लागत को मौद्रिक लागत कहते हैं। जो लागत है उसका भुगतान केवल मौद्रिक रूप में ही किया जाता है जैसे कच्चे माल पर खर्च, श्रमिकों एवं कर्मचारियों को मजदूरी, भारी मशीनरी पर खर्च, पूंजी को दिए जाने वाला ब्याज, भूमि को दिए जाने वाला लगान, प्रबंधक, ghisavat, विज्ञापन, यातायात, बीमा पर खर्च, सामान्य लाभ, इंधन या बिजली आपूर्ति पर खर्च और सुरक्षा के लिए खर्च आदि खर्च को मौद्रिक लागत के अंतर्गत सम्मिलित किया जाता है।

मौद्रिक लागत : एक उत्पादक फरमाया उत्पादन इकाई द्वारा एक वस्तु के उत्पादन में किए गए कुछ मौद्रिक खर्च व्यय को मौद्रिक लागत कहा जाता है।

मौद्रिक की लागत उत्पत्ति के साधनों के लिए जो धन वहां उसकी लागत होती है व्यास क्या जाता है। वहां उस की मौद्रिक लागत होती है। यहां किसी वस्तु के उत्पादन पर द्रव्य के रूप में उत्पादन पर जो भी व्यास किया जाता है। उसे मौद्रिक कहते हैं

मौद्रिक लागत उत्पत्ति के साधनों के प्रयोग के लिए जोधन व्यास क्या जाता है वहां उसकी मौद्रिक लागत होती है। यहां किसी वस्तु के उत्पादन पर द्रव्य के रूप में उत्पादन पर जो व्यय किया जाता है उसे मौद्रिक कहते हैं

मौद्रिक लागत उत्पत्ति के साधनों के प्रयोग के लिए जो धन व्यय किया जाता है, वह उसकी मौद्रिक लागत होती है या किसी वस्तु के उत्पादन पर द्रव्य के रूप में उत्पादन के उत्पादानों पर जो व्यय किया जाता है उसे मौद्रिक या द्राव्यिक लागत कहा जाता है।

मासिक लागते क्षेत्र सिद्ध है जिसका संदर्भ अपेक्षाकृत प्रत्यक्ष आसानी से आपने योग्य वित्तीय लागत है यह आम तौर पर अन्य के विपरीत" (समान रूप से वास्तविक लेकिन कम आसानी से मात्रात्मक) "लागत" जैसे प्रतिष्ठा, कर्मचारी/ ग्राहक सभ्दवना आदि के रूप में उपयोग किया जाता है।

मौद्रिक लागत:-किसी फर्म द्वारा एक वस्तु के उत्पादन में किए गए कुल मुद्रा व को मुद्रा लागत कहते हैं। दूसरे शब्दों में उत्पत्ति के समस्त साधनों के मूल्य को यदि मुद्रा में व्यक्त कर दिया जाए तो उत्पादक इन उत्पत्ति के साधन की सेवाओं को प्राप्त करने में जितना कुल वह करता है मौद्रिक लागत कहलाती है। मौद्रिक लागत की दो प्रकार हैं:- 1) स्पष्ट लागते, 2) अस्पष्ट लागते। स्पष्ट लागते:-लागते उत्पादन का प्रत्यक्ष व स्पष्ट करती है। अस्पष्ट लागते:-और



स्पष्ट लागतों में उत्पादक के वह वह सम्मिलित होते हैं जिनका उत्पादक को प्रत्यक्ष रूप से भुगतान नहीं करना होता किंतु उत्पादक उन साधनों का उत्पादन किया में प्रयोग करता है क्योंकि साधन उत्पादन के द्वारा स्वयं एकत्रित किए जाते हैं।

मौद्रिक लागत:- उत्पादक उत्पत्ति के साधनों पर मुद्रा व्यय करता है। उसे ही मौद्रिक लागत कहते हैं। या किसी वस्तु के उत्पादन पर द्रव्य के रूप में उत्पादन के उपादानों पर जो व्यय किया जाता है। उसे मौद्रिक या द्राविक लागत कहा जाता है।

मौद्रिक लागत:- किसी फर्म द्वारा एक वस्तु के उत्पादन में किए गए कुल मुद्रा वह को मुद्रा लागत कहते हैं। दूसरे शब्दों में उत्पत्ति के समस्त साधनों के मूल्य को यदि मुद्रा में जितना कुल वह करता है मौद्रिक लागत कहलाती है। मौद्रिक लागत दो प्रकार की होती है:- स्पष्ट लागत, अस्पष्ट लागत।

उत्तर :- किसी फर्म द्वारा एक वस्तु के उत्पादन में किए गए कुल मुद्रा को मुद्रा लागत कहते हैं ! दूसरे शब्दों में ,उत्पत्ति के समस्त साधनों के मूल्य को यदि ,मुद्रा में व्यक्त कर दिया जाए तो, उत्पादक के इन उत्पत्ति के साधन की सेवाओं को प्राप्त करने में जितना कुल व्यय करता है , मौद्रिक लागत कहलाती है ! मौद्रिक लागत में दो प्रकार की लागत सम्मिलित होती है (1) स्पष्ट लागत-- (2) और स्पष्ट लागत 1. स्पष्ट लागत-- स्पष्ट लागत लीलावती है जो उत्पादक के द्वारा उत्पत्ति के अनेक साधनों को एकत्रित करने पर स्पष्ट रूप से व्यक्त की जाती है ! इस प्रकार स्पष्ट लागत उत्पादन का प्रत्यक्ष में स्पष्ट करती है स्पष्ट लागत के अंतर्गत निम्नलिखित पौधों में किए जाने वाला में शामिल होता है कच्चे माल पर वह श्रमिक की मजदूरी,, उपकरणों की टूट-फूट ,विज्ञापन व्यय बीमा आदि 2. स्पष्ट लागत--- स्पष्ट लागत में उत्पादक कि वे सम्मिलित होते हैं! जिनका उत्पादक को प्रत्यक्ष रूप से भुगतान नहीं करना होता किंतु, उत्पादक उन साधनों का उत्पादन क्रिया में प्रयोग करता है ! क्योंकि साधन उत्पादन के द्वारा स्वयं एकत्रित किए जाते हैं ,इस में निम्न मत सम्मिलित किए जाते हैं-- (a) सेम उत्पादक द्वारा प्रदान की गई सेवाओं की मजदूरी!(b) उत्पादक की अपनी स्वयं की पूंजी का ब्याज (c) उस बिलिंग का किराया जो ,सेम उस उत्पादक की है ! न

उत्पादक उत्पत्ति के साधनों पर मुद्रा व करता है। उसे ही मौद्रिक लागत कहते हैं।

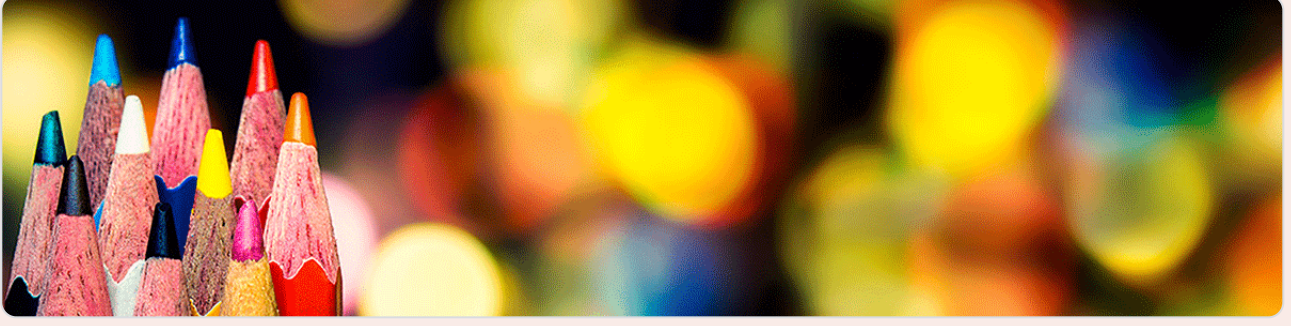
मौद्रिक लागत एक छत्र शब्द है जिसका संदर्भ अपेक्षाकृत प्रत्यक्ष आसानी से मापने योग्य वित्तीय लागत है यह आम तौर पर अन्य के विपरीत समान रूप से वास्तविक लेकिन कम आसानी से मात्रात्मक लागत जैसे प्रतिष्ठा कर्मचारी ग्राहक सद्भावना आदि के रूप में उपयोग किया जाता है

मौद्रिक लागत - उत्पत्ति के साधनों के प्रयोग के लिए जो धन व्यय किया जाता है, वह उसकी मौद्रिक लागत होती है या किसी वस्तु के उत्पादन पर द्रव्य के रूप में उत्पादन के उपादानों पर जो व्यय किया जाता है उसे मौद्रिक या द्राविक लागत कहा जाता है। अर्थशास्त्रियों के अनुसार उत्पादक की मौद्रिक लागत में निम्नलिखित तत्त्व सम्मिलित होते हैं (क) स्पष्ट लागत (Explicit Costs) - इनके अन्तर्गत वे सब लागतें सम्मिलित की जाती हैं, जो उत्पादक के द्वारा स्पष्ट रूप से विभिन्न उपादानों को खरीदने (क्रय करने) के लिए व्यय की जाती हैं। (ख) अस्पष्ट लागत (Implicit Costs) - इनके अन्तर्गत उन साधनों एवं सेवाओं का मूल्य सम्मिलित होता है, जो उत्पादक के द्वारा प्रयोग की जाती हैं, किन्तु जिनके लिए वह प्रत्यक्ष रूप से भुगतान नहीं करता। उत्पादन में प्रयोग किये जाने वाले कुछ साधनों का स्वामी व्यवसायी स्वयं हो सकता है। इसलिए वह उनके लिए प्रत्यक्ष रूप से भुगतान नहीं करता। उद्यमी के स्वयं के साधनों के बाजार दर पर पुरस्कारों को अस्पष्ट लागतें कहा जाता है।

This content is neither created nor endorsed by Google. [Report Abuse](#) - [Terms of Service](#) - [Privacy Policy](#).

Google Forms





द्वितीय इकाई परीक्षा (समाष्टि अर्थशास्त्र)

11 responses

[Publish analytics](#)

छात्र का पूरा नाम

11 responses

Tikeshwar Prasad Sinha

Narendra kumar

vijay kumar Nishad

Tilleshwar Kumar sen

CHANDRABHAN

Pradeep kumar andhiya

unita yadav

Chandrakumar

Pushpendra kumar

Devendra kumar kunjam

Terisa sori

कक्षा

11 responses

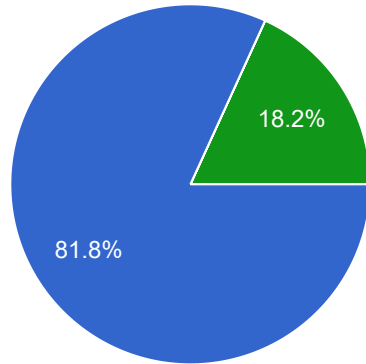
 Copy



उपभोग फलन क्या है?

 Copy

11 responses

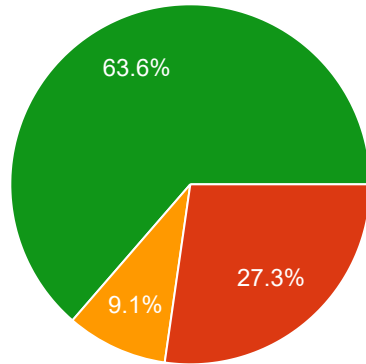


- C=f (Y)
- C=f (I)
- C= f (S)
- इनमें से कोई नहीं

उपभोग फलन को प्रभावित करने वाला/वाले तत्व है/हैं?

 Copy

11 responses

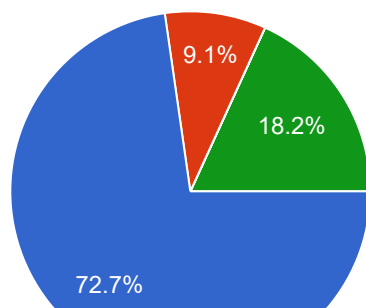


- आय स्तर
- ब्याज की दर
- कंजूसी
- उपर्युक्त सभी.

विनियोग में वृद्धि होने के फलस्वरूप आय में कई गुणा वृद्धि को क्या कहते हैं?

 Copy

11 responses



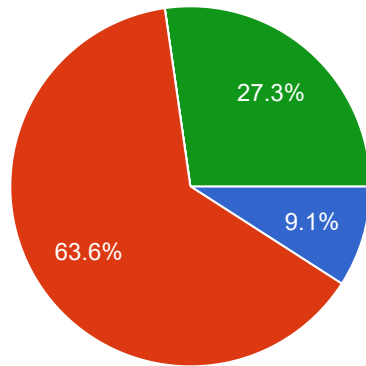
- गुणक
- त्वरक
- उपभोग फलन
- विनियोग फलन



गुणक में रिसाव के क्या कारण है/हैं?

Copy

11 responses

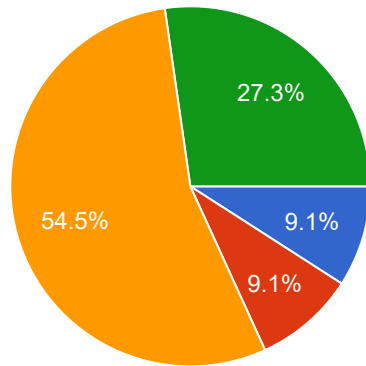


- बचत की मात्रा
- मुद्रा स्फीति
- पुराने ऋणों की अदायगी
- उपर्युक्त सभी

त्वरक क्या है?

Copy

11 responses



- प्रेरित विनियोग में वृद्धि/उपभोग व्यय में वृद्धि
- प्रेरित उपभोग में वृद्धि/प्रेरित विनियोग में वृद्धि
- प्रेरित बचत में वृद्धि/प्रेरित आय में वृद्धि
- इनमें से कोई नहीं



कीन्स के उपभोग के मनोवैज्ञानिक नियम का कथन

11 responses

कीन्स के के अनुसार जब उपभोक्ता की आय में बढ़ोतरी होती है तो उपभोक्ता द्वारा उसका उपभोग बढ़ता है और यह उपभोग बढ़ोतरी केवल उतने ही स्तर तक बढ़ती है जितनी की उपभोक्ता की आय में बढ़ोतरी हुई होती है। जैसे-जैसे आय में वृद्धि होती है वैसे-वैसे उपभोग में भी वृद्धि होती है।

कीन्स के उपभोग के मनोवैज्ञानिक नियम के अनुसार जब आय की बढ़ोतरी होती है तो उपभोक्ता द्वारा उसका उपभोग बढ़ता है और यह उपभोग बढ़ोतरी केवल उतने ही स्तर तक बढ़ता है जितनी की उपभोक्ता की आय में बढ़ोतरी हुई होती है जैसे-जैसे आय में वृद्धि होती है वैसे वैसे उपभोग में भी वृद्धि होती है।

कींस के उपभोग के मनोवैज्ञानिक नियम

उपभोग फलन का आधार कींस का उपभोग का मनोवैज्ञानिक नियम ही है। इस नियम में नहीं तत्व उपभोग फलन के महत्व को उजागर करते हैं जैसे निम्नलिखित विवरण में स्पष्ट है-

1 कींस का उपभोग का नियम का खंडन करता है कि आय बढ़ने पर उपभोग भी बढ़ता है पर उपभोग अपेक्षाकृत कम मात्रा में बढ़ने से संपूर्ण उत्पादन नहीं लिख पाता और अति उत्पादन की समस्या उत्पन्न हो सकती है जिससे उत्पादन बंद होने से सामान्य बेरोजगारी फैल सकती है। 1930 की आर्थिक मंदी इसका जीवन उदाहरण है।

कीन्स के नियमानुसार, जब आय में वृद्धि होती है तो उपभोक्ता का उपयोग बढ़ता है पर यह उतना ही बढ़ता है जितना आय में वृद्धि होती है।

कींस के उपयोग के वैज्ञानिक नियम के अनुसार जब उपभोक्ता की आय में बढ़ोतरी होती है तो उपभोक्ता द्वारा उसका उपयोग बढ़ता है और यह बढ़ोतरी केवल उतने ही तक बढ़ती है जितनी तक की आय में बढ़ोतरी हुई है

कींस के उपयोग के वैज्ञानिक नियम के अनुसार जब उपभोक्ता की आय में बढ़ोतरी होती है तो उपभोक्ता द्वारा उसका उद्योग बढ़ता है और यह वह बढ़ोतरी केवल उतने ही स्तर तक बढ़ती है जितनी कि उपभोक्ता की आय में बढ़ोतरी हुई है

कींस ने उपभोग की सामान्य पवृति का उल्लेख किया है जिसे उपभोग का मनोवैज्ञानिक नियम कहा जाता है। इसकी मुख्य बातें निम्न हैं-

1. कुल आय में वृद्धि होने पर कुल उपभोग व्यय में भी वृद्धि होती है किन्तु उपभोग व्यय में वृद्धि आय की वृद्धि की तुलना में कम होती है।
2. आय में जो वृद्धि होती है उसे उपभोग एवं बचत के रूप में एक निश्चित अनुपात में विभाजित किया जाता है।
3. आय में वृद्धि के पश्चात् एक व्यक्ति के उपभोग एवं बचत दोनों में वृद्धि होती है।

किसी देश की उत्पादन व्यवस्था से अंतिम उपभोक्ता के हाथों में जाने वाली वस्तुओं या देश के पूँजीगत साधनों के



विशुद्ध जाड़ का हा राष्ट्रीय आय कहत ह। किंसा दश क नागारका का सकल घरलू एव विदशा आउटपुट सकल राष्ट्रीय आय कहलाता है

कीन्स के उपयोग के वैज्ञानिक नियम के अनुसार जब उपभोक्ता की आय में बढ़ोतरी होती है तो उपभोक्ता द्वारा उसका उपभोग बढ़ता है और यह उपभोग बढ़ोतरी केवल उतने ही स्तर तक बढ़ती है जितनी की उपभोक्ता की आय में बढ़ोतरी हुई होती है।

कींस के अनुसार, जब उपभोक्ता की आय में बढ़ोतरी होती है तो उपभोक्ता द्वारा उसका उपभोग बढ़ता है और यह उपभोग बढ़ोतरी केवल उतने ही स्तर तक बढ़ती है जितनी की उपभोक्ता की आय में बढ़ोतरी हुई होती है। जैसे-जैसे आय में वृद्धि होती है वैसे-वैसे उपभोग में वृद्धि होती है।

प्रो. कीन्स ने उपभोग की सामान्य प्रवृत्ति का उल्लेख किया है जिसे उपभोग का मनोवैज्ञानिक नियम कहा जाता है।

1. कुल आय में वृद्धि पर, कुल उपभोग व्यय में वृद्धि होती है किन्तु उपभोग व्यय में वृद्धि आय की वृद्धि की तुलना में कम होती है।
2. आय में जो वृद्धि होती है, उसे उपभोग एवं बचत के रूप में एक निश्चित अनुपात में विभाजित किया जाता है।
3. आय में वृद्धि के पश्चात् एक व्यक्ति के उपभोग एवं बचत दोनों में वृद्धि होती है। उपभोग में इसलिए वृद्धि होती है, क्योंकि आय बढ़ने से एक व्यक्ति पहले की तुलना में अधिक सन्तुष्टि प्राप्त करना चाहता है।

This content is neither created nor endorsed by Google. [Report Abuse](#) - [Terms of Service](#) - [Privacy Policy](#)

Google Forms



पंचम इकाई परीक्षा (ऑनलाईन)

कक्षा : बीए-भाग एक ,विषय : अर्थशास्त्र

(शैक्षणिक सत्र : 2020-21)

शास. शहीद गेंदसिंह महाविद्यालय, चारामा. जिला-कांकेर (छग)

पंचम इकाई परीक्षा (भारतीय अर्थव्यवस्था)

39 responses



छात्र का पूरा नाम

39 responses

Niranjan Sinha

Satish yadav

DOMENDRA SINGH DARRO

Harsh Dewangan

Khomendra Kumar

GULSHAN SINGH

Deepak Kumar sahu

Lekhan Kumar Latiya

Priya mahla

Chhabila gajendra

MAHESH KUMAR SALAM

Anita Korram

DIVYA DEWANGAN

Devika Patel

Durgeshwari sahu

Varsha netam

LEENA MADHAN



LEENA MARKIM

Bhagwat Prasad taram

JITENDRA VERMA

BHOJBALA JAIN

MANISH KUMAR DEWANGAN

NIRAJ PATEL

TULSI DEWANGAN

Satyjeet tulawi

YASHODA DEWANGAN

Lomeshwari Sahu

MADHURI SONWANI

SUSHILA NISJAD

CHANDRAHAS MARKAM

Thaneshwari sahu

SEEMA ACHLE

SAHIL KUMAR MARKAM

Namita netam

savita sahu

TejkumaR

HEMLATA SALAM

Chandani sinha

SAHIL NETAM

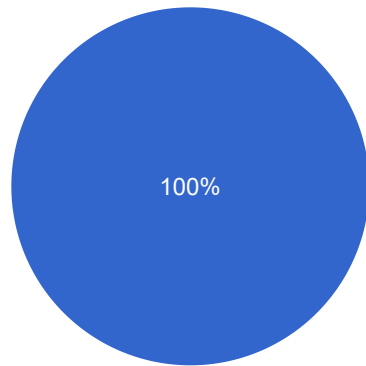


Kaleshwar sahu

कक्षा

 Copy

39 responses



● बीए-भाग एक



मौद्रिक नीति का क्या अर्थ है?

39 responses

मौद्रिक नीति से अभिप्राय किसी भी राष्ट्र के केंद्रीय बैंक द्वारा विभिन्न उपकरणों जैसे कैश रिजर्व रेश्यो (CRR), वैधानिक तरलता अनुपात (SLR-Statutory liquidity ratio), बैंक दर, रेपो दर, रिवर्स रेपो दर आदि के उपयोग से मुद्रा और ऋण की उपलब्धता पर नियंत्रण स्थापित करना है।

जिस नीति के अनुसार किसी देश की मुद्रा प्राधिकारी मुद्रा की आपूर्ति का नियमन करते हैं उसे मौद्रिक नीति कहते हैं इसका मुख्य उद्देश्य है कि बाजार में मूल्यों की स्थिति में तेज गिरावट और वृद्धि की रोकना होता है

Nhi pta sir

मौद्रिक नीति केंद्रीय बैंक की वह नीति है जिसके द्वारा केंद्रीय बैंक सामान्य आर्थिक नीति के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मुद्रा की पूर्ति को नियंत्रण करता है।

मौद्रिक नीति सरकार एवं केंद्रीय बैंक द्वारा सोच समझकर उपयोग में लायी गयी मुद्रा की पुर्ति में वृद्धि या कमी लाने की शक्ति है दुसरे शब्दों में मौद्रिक नीति का आशय एक ऐसी आर्थिक नीति से है जिसके द्वारा मुद्रा के मुल्य में सथायितव हेतु मुद्रा व साख की पुरति का नियमन किया जाता है

किसी भी देश की अर्थव्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए मुद्रा पर उपयुक्त नियन्त्रण रखना अति आवश्यक होता है। मुद्रा से सम्बन्धित समस्त नीतियों को हम 'मौद्रिक नीति' की संज्ञा देते हैं। किसी देश के सरकारी अथवा केंद्रीय बैंक द्वारा अर्थव्यवस्था में विशेष आर्थिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए मुद्रा की मात्रा के प्रसार तथा संकुचन के प्रबन्ध को मौद्रिक नीति कहा जाता है।

Nhi pata

मौद्रिक नीति से अभिप्राय किसी भी राष्ट्र के केंद्रीय बैंक द्वारा विभिन्न उपकरणों जैसे कैश रिजर्व रेश्यो (CRR), वैधानिक तरलता अनुपात (SLR-Statutory Liquidity ratio), बैंक दर, रेपो दर, रिवर्स रेपो दर आदि के उपयोग से मुद्रा और ऋण को उपलब्ध पर नियंत्रण स्थापित करना है।

मौद्रिक नीति का संबंध अर्थव्यवस्था में मुद्रा शाखा तथा ब्याज दर का नियमन हेतु किए जाने वाले प्रावधानों से होता है। मुद्रा तथा साख की मात्रा तथा ब्याज दर का स्तर अर्थव्यवस्था में कीमत आए और उत्पादन स्तर तर्क को प्रभावित करता है। इसकी रूपरेखा तैयार करने तथा इसे क्रियान्वित करने का दायित्व केंद्रीय बैंक को होता है बैंक दर, नगदी सुरक्षा निधि, खुले बाजार की क्रियाएं, चयनात्मक शाख नियंत्रण आदि मौद्रिक नीति के उपकरण हैं। इनके द्वारा केंद्रीय बैंक मौद्रिक नियंत्रण करता है। इस प्रकार मौद्रिक नीति के उपकरणों द्वारा केंद्रीय बैंक अर्थव्यवस्था में



उत्पादन आए तथा कीमत स्तर को प्रभावित कर सकता है।

हैरी जानसन के अनुसार, "मौद्रिक नीति केंद्रीय बैंक की वह नीति है जिसके द्वारा केंद्रीय बैंक सामान्य आर्थिक नीति के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मुद्रा की पूर्ति को नियंत्रित करता है

मौद्रिक नीति मौद्रिक नीति ककरिया वन भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा किया जाता है मौद्रिक नीति एक ऐसी ऐसी नीति होती है जिसके माध्यम से किसी भी देश का मौद्रिक पति करण खासकर उस देश का सेंट्रल बैंक देश की अर्थव्यवस्था के अंदर ब्याज की दरों के नियंत्रण के माध्यम में मुद्रा पूर्ति को नियमित और नियंत्रित करता है ताकि वस्तुओं के दामों में बढ़ोतरी से बचा जा सके और अर्थव्यवस्था का विकास तरफ अग्रसर किया जा सके भारत का मौद्रिक नीति का उद्देश्य स्थिति ताकि आवश्यक आर्थिक विकास के साथ-साथ लिंग के ऊपर विराम लगाने के लिए जरूरी होता है इस इस रणनीति के तहत पर्यावरण तथ्यों को बढ़ावा देना है जो ना केवल वस्तु विकास के लिए जरूरी हो बल्कि उनकी विकास की गति को भी बनाए रखें ताकतों को रियल कार वाशिंग वितरण इनका सम्मान वितरण दक्षता का को बढ़ावा देना कठोरता को कम करना या अधिक प्रतिस्पर्धी माहौल वर्गीकरण को प्रसारित करता है

प्रोफेसर हैंसन के शब्दों में एक वस्तु की एक निश्चित मात्रा उत्पादित करने की मौद्रिक लागत उत्पादन के विभिन्न साधनों जो कि उस वस्तु के उत्पादन में प्रयोग किए गए हैं भुगतान का योग होता है इस प्रकार मौद्रिक लागत में कच्चे माल का मूल्य श्रम की मजदूरी एवं वेतन कारखाना बिलिंग का किराया लगाई गई पूंजी का ब्याज बीमों की प्रबयाजि मशीनों एवं उपकरणों का खर्च बिजली इंधन का खर्चा मशीनों की मूल्यहास संपत्ति कर उत्पादन कर तथा यातायात एवं विज्ञापन का खर्चा भी सम्मिलित किए जाते हैं उसे मौद्रिक लागत कहते हैं

Monetary .ek utpadak ya farm jo utpadan me kai gaye khul metric kherch when ko modrik Lanegane kaya jata hai ,1 kaccha mai ka kharch 2,ghi savat kharch ,punji ka kharch ,vetera la bhugtan ,vigyapan ka kharch .

मौद्रिक नीति से अभिप्राय किसी भी राष्ट्र के केंद्रीय बैंक द्वारा विभिन्न उपकरणों जैसे कैश रिजर्व रेश्यो (crr)वैधानिक तरलता अनुपात(SLR-statutory liaqity rotio) बैंक दर रेपो दर रिक्शा रेपो दर आदि के उपकरणों से मुद्रा ऋण की उपलब्धता पर नियंत्रण स्थापित करता है।

मौद्रिक नीति सरकार एक केंद्रीय बैंक द्वारा सोच समझ कर उपयोग में लाए गए मुद्रा की पूर्ति में वृद्धि या कमी का आशय कैसी आर्थिक नीति से है जिसे मुद्रा जिसके द्वारा मुद्रा के मूल्य में सभी किया जाता है

मौद्रिक नीति से अभिप्राय किसी भी राष्ट्र के केंद्रीय बैंक द्वारा विभिन्न उपकरणों जैसे कैश रिजर्व रेश्यो(सीआरआर)वैज्ञानिक तरलता अनुपात ,बैंक दर ,रेपो दर, रिवर्स रेपो दर आदि के उपयोग से मुद्रा और ऋण की उपलब्धि पर नियंत्रण स्थापित करना है।

मौद्रिक नीति एक ऐसी प्रक्रिया है जिसकी मदद से रिजर्व बैंक अर्थव्यवस्था में पैसे की आपूर्ति नियंत्रित करता है 2. नरम रुख रखने पर आरबीआई मौद्रिक नीति प्रमुख ब्याज दरों को घटाता है 3. इसकी अर्थव्यवस्था में पैसों को बढ़ाने की रास्ता खुल जाता है 4. बाजार में नकदी बढ़ने से अधिक गतिविधियां बढ़ जाती है

मौद्रिक नीति केंद्रीय बैंक की वह नीति है जिसके द्वारा केंद्रीय बैंक सामान्य आर्थिक नीति के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मुद्रा की पूर्ति को नियंत्रित करता है।

मौद्रिक नीति का अभिप्राय मुद्रा एवं साख की मात्रा पर नियंत्रण एवं नियमन करने से है। मौद्रिक नीति किसी भी देश का केंद्रीय बैंक निर्माण करता है। एक देश का तीव्र गति से औद्योगिकीकरण ,कृषि उत्पादन में वृद्धि, देश की आर्थिक संरचना, यातायात ,संचार, सिंचाई ,बैंक, बीमा कंपनियां ,विद्युत ,पिछड़े क्षेत्रों का विकास करने एवं लोगों के लिए रोजगार उपलब्ध कराने के लिए मुद्रा एवं साख की अति आवश्यकता होती है।

भारत में रिजर्व बैंक देश का केंद्रीय बैंक है इसे नोट एवं मुद्रा निर्गमित करने का एक अधिकार प्राप्त है।

Moudrik niti ke antrgt wey smst kary tatha upay aate hai jo rajy ya kendriy baink dwara chlaye gye mudra w sakh mudra ko prabhawit krne ke udheshy se apnaye jate hai. wastw me Moudrik niti ka udheshy wyapar chkra ke utar chdhaw ko km krke purn rojgar ke bindu pr bcht w winiyog mey samy ki sthapna krta hai.

मौद्रिक नीति का अर्थ :-

किसी देश के मौद्रिक उपाय एवं निर्णय जो मुद्रा की मात्रा को नियन्त्रित करने का लक्ष्य रखते हैं, ब्याज दरों को, सार्वजनिक व्यय को, मुद्रा और साख के प्रयोग को प्रभावित करते हैं जबकि, एक विस्तृत रूप में, यह मौद्रिक प्रणाली से सम्बन्धित है जो उन सब मौद्रिक और गैर-मौद्रिक उपायों और निर्णयों से व्यवहार करती है जिनके मौद्रिक प्रभाव हैं।

इसलिये मौद्रिक नीति का अर्थ है वह उपाय जो आर्थिक व्यवस्था के दक्ष संचलन को सुनिश्चित करने के लिये तैयार किये गये हैं अथवा मुद्रा की पूर्ति, लागत और उपलब्धता पर इसके प्रभाव द्वारा विशेष उद्देश्यों का समूह। इस प्रयोजन से, मौद्रिक प्राधिकरण, मौद्रिक प्रपत्रों जैसे ब्याज दर, खुला बाजार प्रचलनों, सुरक्षित अनुपात में परिवर्तन और गुणवत्तात्मक साख नियन्त्रणों के जाने-बूझ और सचेत प्रबन्ध को सम्मिलित करता है।

किसी देश का मुद्रा प्राधिकारी मुद्रा की आपूर्ति का नियमन करता है उसे मौद्रिक नीति कहते हैं।

Modrik niti Sarkar AVN kendriya Bank dwara soch samajh kr upyog me layi gayi mudra ki purti me vriddhi ya kami lane ki shakti h dusre sabdo me maudrik niti ka asay ,Ak aisi arthik niti se h jiske dwara me mudra ke mulya me sthayitv hetu mudra ya sakh ki purti ka niyman kiya jata h.

Wiki Nitish Sarkar bank ke dowara Soch Samajh Kar upyog Mein lai Gai Mudra ki utpati vriddhi yah kami lane ki sakti hai

मौद्रिक नीति का संबंध केंद्रीय बैंक की उस नीति से है जिससे अर्थव्यवस्था में मुद्रा की पूर्ति, ब्याज दर तथा साख की उपलब्धता प्रभावित होती है।

मौद्रिक नीति का संबंध केंद्रीय बैंक की उस नीति से है जिसके अर्थव्यवस्था में मुद्रा की पूर्ति ब्याज दर तथा साख की उपलब्धता प्रभावित होती है।

मौद्रिक नीति सरकार एवम् केंद्रीय बैंक द्वारा सोच- समझकर उपयोग में लायी गई मुद्रा की पूर्ति में वृद्धि या कमी लाने की शक्ति है। यह शक्ति सरकार की आर्थिक नीति के उद्देश्य की विस्तृत रूपरेखा को ध्यान में रखकर निवेश, आय रोजगार को प्रभावित करने और कीमतों में स्थिरता लाने के लिए प्रयोग की जाती है। हमारे देश में रिजर्व बैंक यह कार्य करता है। दूसरे शब्दों में मौद्रिक नीति का आशय एक ऐसी आर्थिक नीति से है, जिसके द्वारा मुद्रा के मूल्य में स्थायित्व हेतु मुद्रा व साख की पूर्ति का नियमन किया जाता है।

माधुरी नीति व है जिसने मुद्रा की सहायता से राष्ट्रीय आय की गणना की जाती है

मौद्रिक नीति:-

किसी भी देश की अर्थव्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए मुद्रा पर उपयुक्त नियंत्रण रखना आवश्यक होता है। मुद्रत से संबंधित समस्याओं के नीतियों को मौद्रिक नीति की संज्ञा देते हैं।

किसी देश की सरकारी अथवा केंद्रीय बैंक द्वारा अर्थव्यवस्था में विशेष आर्थिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए मुद्रा की मात्रा



क प्रसार तथा संकुचन क प्रबंध का माद्रक नात कहा जाता ह।

मौद्रिक नीति को अर्थशास्त्री कैट के अनुसार परिभाषित किया गया है-"मौद्रिक नीति का आशय एक निश्चित उद्देश्य की पूर्ति के लिए मुद्रा चलन के विस्तार एवं संकुचन की व्यवस्था करने से है।"

'मौद्रिक नीति एक ऐसी नीति है जिसके अंतर्गत सर कार्य केंद्रीय बैंक अर्थव्यवस्था के अंतर्गत मुद्रा को इस प्रकार नियंत्रित करते हैं कि आर्थिक नीतियों का उद्देश्य पूरा हो सके।'

मौद्रिक नीति का आशय:-

मौद्रिक नीतियों को इन्हीं विशेष उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए निर्धारित किया जाता है। प्रायः यह उद्देश्य उस देश

की अपनी समस्याओं के अनुसार होंगे। साथ ही कुछ उद्देश्य सभी देशों के लिए समान होंगे। यहां यह बताना भी आवश्यक है कि मौद्रिक नीति और राजकोषीय नीति का आपस में घनिष्ठ संबंध है।

उत्तर - मौद्रिक नीति सरकार एवं केन्द्रीय बैंक द्वारा सोच - समझकर उपयोग में लायी गई मुद्रा की पूर्ति में वृद्धि या कमी लाने की शक्ति है। यह शक्ति सरकार की आर्थिक नीतिके उद्देश्यों की विस्तृत रूपरेखा को ध्यान में रखकर निवेश, आय व रोजगार को प्रभावित करने और कीमतों में स्थिरता लाने के लिए प्रयोग की जाती है। हमारे देश में रिजर्व बैंक यह कार्य करता है

मौद्रिक नीति सरकार एवं केंद्रीय बैंक द्वारा सोच समझकर उपयोग में लाई गई मुद्रा की पूर्ति में वृद्धि या कमी लाने की शक्ति है। यहां शक्ति सरकार की आर्थिक नीति के उद्देश्यों की विस्तृत रूपरेखा को ध्यान में रखकर निवेश आएं व रोजगार को प्रभावित करने और कीमतों में इस तारक लाने के लिए प्रयोग की जाती है। हमारे देश में रिजर्व बैंक क्या कार्य करता है। दूसरे शब्दों में मौद्रिक नीति का आशय एक ऐसी आर्थिक नीति से है जिसके द्वारा मुद्रा के मूल्य में स्थापित हेतु मुद्रा और साख की पूर्ति का नियमन किया जाता है। किसी देश की अर्थशास्त्र को सुचारू रूप से चलाने के लिए मुद्रा और उपयुक्त नियंत्रण रखना अति आवश्यक होता है। उधर से संबंधित समस्त नीतियों को हम मौद्रिक नीति की संज्ञा देते हैं। किसी देश के सरकारी अथवा केंद्रीय बैंक द्वारा अर्थव्यवस्था में विशेष आर्थिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए मुद्रा की मात्रा के प्रसार तथा संघ चालान के प्रबंध को मौद्रिक नीति कहा जाता है। मौद्रिक नीति को विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने निम्नलिखित प्रकार से परिभाषित किया है।

मौद्रिक नीति:-

किसी भी देश की अर्थव्यवस्था को चलाने के लिए मौद्रिक नीति की आवश्यकता होती है। किसी देश की सरकारी अथवा केंद्रीय बैंक द्वारा अर्थव्यवस्था में विशेष आर्थिक उद्देश्य पूर्ति के लिए मुद्रा की मात्रा के प्रचार तथा संकुचन के प्रबंध को मौद्रिक नीति कहा जाता है।

मौद्रिक नीति को अर्थशास्त्री कैट के अनुसार परिभाषित किया गया है:-"मौद्रिक नीति का आशय एक निश्चित उद्देश्य पूर्ति के लिए मुद्रा चलन एवं संकुचन के व्यवस्था करने से है।"

मौद्रिक नीति एक ऐसी नीति है जिसके अंतर्गत सरकार तथा केंद्रीय बैंक अर्थव्यवस्था के अंतर्गत मुद्रा को इस प्रकार नियंत्रित रखते हैं की आर्थिक नीतियों का उद्देश्य पूरा हो सके।

मौद्रिक नीति का अर्थ :-

किसी देश के मौद्रिक उपाय एवं निर्णय जो मुद्रा की मात्रा को नियन्त्रित करने का लक्ष्य रखते हैं, ब्याज दरों को, सार्वजनिक व्यय को, मुद्रा और साख के प्रयोग को प्रभावित करते हैं जबकि, एक विस्तृत रूप में, यह मौद्रिक प्रणाली से सम्बन्धित है जो उन सब मौद्रिक और गैर-मौद्रिक उपायों और निर्णयों से व्यवहार करती है जिनके मौद्रिक प्रभाव हैं।

इसलिये मौद्रिक नीति का अर्थ है वह उपाय जो आर्थिक व्यवस्था के दक्ष संचलन को सुनिश्चित करने के लिये तैयार किये गये हैं अथवा मुद्रा की पूर्ति, लागत और उपलब्धता पर इसके प्रभाव द्वारा विशेष उद्देश्यों का समूह। इस प्रयोजन से, मौद्रिक प्राधिकरण, मौद्रिक प्रपत्रों जैसे ब्याज दर, खुला बाजार प्रचलनों, सुरक्षित अनुपात में परिवर्तन और गुणवत्तात्मक साख नियन्त्रणों के जाने-बूझ और सचेत प्रबन्ध को सम्मिलित करता है।

मौद्रिक नीति का संबंध अर्थशास्त्र में मुख्य शाखा तथा ब्याज दर का नियमन हेतु किए जाने वाले प्रावधानों से होता है

मुद्रा तथा शाखा का मात्रा तथा ब्याज दर का स्तर अथवा स्तर म कामत आए आर उत्पादन स्तर तक का प्रभावित करता है इसकी रूपरेखा तैयार करने तथा इसे क्रिया आंतक करने का दायित्व केंद्रीय बैंक को होता है बंदर नगदी सुरक्षा निधि खुले बाजार की क्रियाएं चयनात्मक शाखा नियंत्रण आदि मौद्रिक नीति के उपकरण हैं। इनके द्वारा केंद्रीय बैंक मौद्रिक नियंत्रण करता है इस प्रकार मौद्रिक नीति के उपकरण द्वारा केंद्रीय बैंक अर्थव्यवस्था में उत्पादक आए तथा कीमत स्तर को प्रभावित कर सकता है।

उत्तर:-- मौद्रिक नीति-- किसी भी देश की अर्थव्यवस्था को चलाने के लिए मौद्रिक नीति की आवश्यकता होती है, किसी देश की सरकारों अथवा केंद्रीय बैंक द्वारा व्यवस्था में विशेष आर्थिक उद्देश्य पूर्ति के लिए मुद्रा की मात्रा के

प्रचार तथा संकुचन के प्रबंध को मौद्रिक नीति कहा जाता है।

मौद्रिक नीति को अर्थशास्त्री कैट के अनुसार :- मौद्रिक नीति का सा एक निश्चित उद्देश्य की पूर्ति के लिए मुद्रण की विस्तार एवं संकुचन की व्यवस्था करने से है।

मौद्रिक नीति एक ऐसी नीति है।

जिसके अंतर्गत सरकार कार्य केंद्रीय बैंक अर्थव्यवस्था के अंतर्गत मुद्रा को इस प्रकार नियंत्रित करते हैं।

कि आर्थिक नीतियों का उद्देश्य पूरा कर सकें !

मौद्रिक नीति का असर नीतियों को इन्हीं विशेष उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए निर्धारित किया जाता है !

उद्देश्य उस देश की अपनी समस्याओं के अनुसार होंगे साथ ही कुछ उद्देश्य सभी देशों के लिए समान होंगे।

मौद्रिक नीति सरकार एवं केंद्रीय बैंक द्वारा सोच समझकर उपयोग में लाई गई मुद्रा की पूर्ति में विधि या कमी लाने की शक्ति है। यहां शक्ति सरकार की आर्थिक नीति के उद्देश्यों की विस्तृत रूपरेखा को ध्यान में रखकर निवेश और रोजगार को प्रभावित करने और कीमतों में इस तरह लाने के लिए प्रयोग की जाती है। हमारे देश में रिजर्व बैंक यहां कार्य करता है। दूसरे शब्दों में मौद्रिक नीति का आशय एक ऐसी आर्थिक नीति से है जिसके द्वारा मुद्रा के मूल्य में स्थापित हेतु मुद्रा वास तक की पूर्ति का निर्माण किया जाता है। किसी भी देश की अर्थव्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए मुद्रा पर उपयुक्त नियंत्रण रखना अति आवश्यक होता है। मुद्रा से संबंधित समस्त नीतियों को हम मौद्रिक नीति की संज्ञा देते हैं। किसी देश के सरकारी अथवा केंद्रीय बैंक द्वारा अर्थव्यवस्था में विशेष आर्थिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए मुद्रा की मात्रा के प्रसार तथा संतुलन के प्रबंध को मौद्रिक नीति कहा जाता है। मौद्रिक नीति को विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने निम्नलिखित प्रकार से किया है।

मौद्रिक नीति के अभिप्राय किसी भी राष्ट्र के केंद्रीय द्वारा विभिन्न उपकरणों जैसे कैश दिवसीय अनुपात बैंक दर रेपो दर रिवर्स रेपो दर आदि के उपयोग से मुद्रा और ऋण की उपलब्धता का निर्धारण स्थापित करना जिसे नीति के अनुसार किसी देश का मुद्रा होता है मौद्रिक नीति के रूप में यह एक होता है

किसी भी देश की अर्थव्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए मुद्रा पर उपयुक्त नियन्त्रण रखना अति आवश्यक होता है। मुद्रा से सम्बन्धित समस्त नीतियों को हम 'मौद्रिक नीति' की संज्ञा देते हैं। किसी देश के सरकारी अथवा केन्द्रीय बैंक द्वारा अर्थव्यवस्था में विशेष आर्थिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए मुद्रा की मात्रा के प्रसार तथा संकुचन के प्रबन्ध को मौद्रिक नीति कहा जाता है। मौद्रिक नीति को विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने निम्नलिखित प्रकार से परिभाषित किया है-

केन्ट के अनुसार मौद्रिक नीति का आशय एक निश्चित उद्देश्य की पूर्ति के लिए मुद्रा चलन के विस्तार एवं संकुचन की व्यवस्था करने से है।”

पाल इंजिंग के मतानुसार, “मौद्रिक नीति के अन्तर्गत वे सभी मौद्रिक निर्णय तथा उपाय आते हैं, जिनका उद्देश्य मौद्रिक प्रणाली को प्रभावित करना होता है।”

हैरी जी. जानसन के शब्दों में, “मौद्रिक नीति का आशय उस नीति से है, जिसके द्वारा केन्द्रीय बैंक सामान्य आर्थिक नीति के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए मुद्रा की पूर्ति को नियन्त्रित करता है।”

पी. डी. हजेला के कथनानुसार, “मौद्रिक नीति से अभिप्राय उन नियमों से है, जिनसे किसी देश की सरकार तथा केन्द्रीय बैंक उस देश को आर्थिक नीति के सामान्य उद्देश्यों को पूरा करते हैं।”

उपर्युक्त परिभाषाओं के विश्लेषण के आधार पर एक उपयुक्त परिभाषा इस प्रकार दे सकते हैं “मौद्रिक नीति एक ऐसी नीति है जिसके अन्तर्गत सरकार या केन्द्रीय बैंक अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत मुद्रा को इस प्रकार नियंत्रित करते हैं कि आर्थिक नीतियों का उद्देश्य पूरा हो सके।

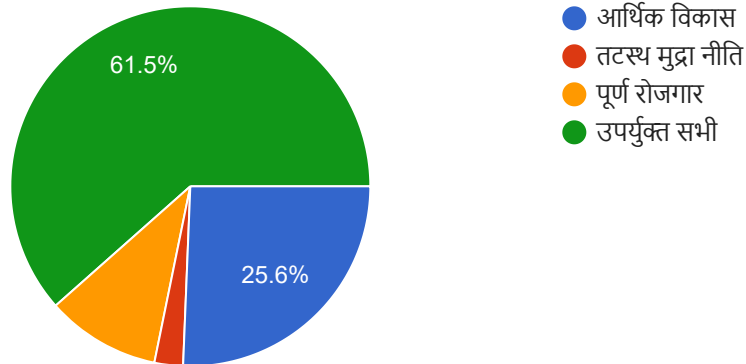


उत्तर:-मौद्रिक नीति सरकार एवं केंद्रीय बैंक द्वारा सोच समझ कर उपयोग में लाई गई मुद्रा की पूर्ति में वृद्धि या कमी लाने की शक्ति है। दूसरे शब्दों में मौद्रिक नीति का आशय एक ऐसी आर्थिक नीति से है , जिसके द्वारा मुद्रा के मूल्य में स्थायित्व हेतु मुद्रा व साख की पूर्ति का नियमन किया जाता है।

मौद्रिक नीति का उद्देश्य है/हैं?

 Copy

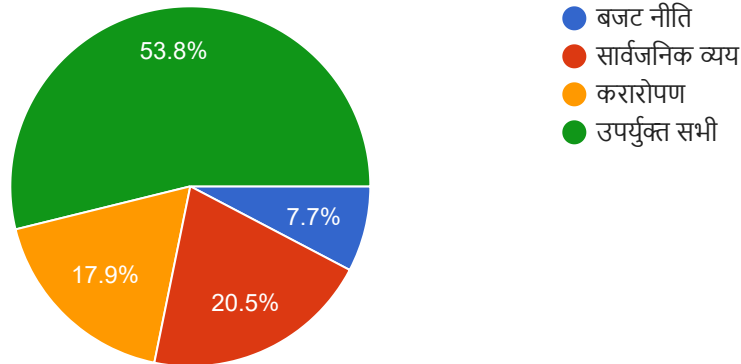
39 responses



राजकोषीय नीति के उपकरण है/हैं?

 Copy

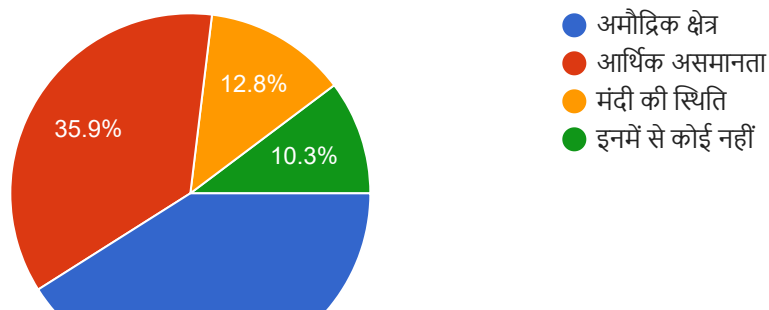
39 responses



राष्ट्रीय आय की गणना की कठिनाई/कठिनाईयां है/हैं

 Copy

39 responses

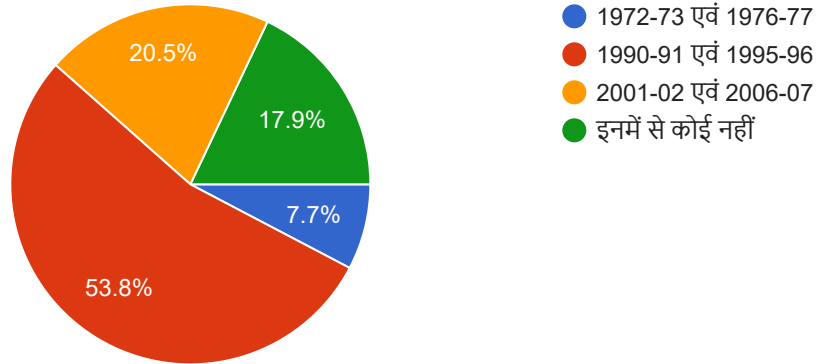


41%

भारत का भुगतान संतुलन कब भारत के पक्ष में था?

 Copy

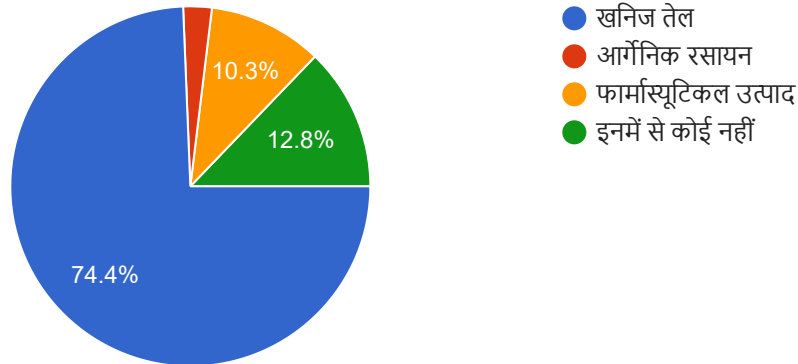
39 responses



वर्तमान में भारत के कुल आयात में सबसे ज्यादा भाग किसका है?

 Copy

39 responses



Submission ID (skip this field)

4 responses

salamhiralal96@gmail.com

FwSNECOjne1rtqkp

yhqtXzPaPMUzhTR6

d1wRHL4JE2vqSj0z



This content is neither created nor endorsed by Google. [Report Abuse](#) - [Terms of Service](#) - [Privacy Policy](#).

Google Forms



पंचम इकाई परीक्षा (ऑनलाईन)

कक्षा : बीए-भाग एक ,विषय : अर्थशास्त्र

(शैक्षणिक सत्र : 2020-21)

शास. शहीद गेंदसिंह महाविद्यालय, चारामा. जिला-कांकेर (छग)

पंचम इकाई परीक्षा (व्याष्टि अर्थशास्त्र)

36 responses

[Publish analytics](#)



छात्र का पूरा नाम

36 responses

DOMENDRA SINGH DARRO

Satish yadav

PRIYA MAHLA

KHOMENDRA KUMAR

YASHODA DEWANGAN

GULSHAN SINGH

Deepak Kumar sahu

Chhabila gajendra

MANISH KUMAR DEWANGAN

DIVYA DEWANGAN

CHANDRAHAS MARKAM

Harsh Dewangan

BHOJBALA JAIN

Mahesh Kumar salam

DEVIKA patel

Lekhan Kumar Latiya



Leena markam

SAHIL KUMAR MARKAM

Niranjan Sinha

JITENDRA VERMA

Anita Korram

Bhagwat prasad taram

TULSI DEWANGAN

MADHURI SONWANI

Durgeshwari sahu

SAHIL NETAM

Lomeshwari Sahu

Tejkumar

Thaneshwari sahu

SEEMA ACHLE

NIRAJ PATEL

SUSHILA NISHAD

Namita netam

savita sahu

Chandani sinha

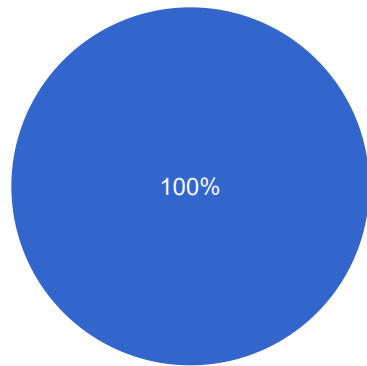
Kaleshwar sahu



कक्षा

 Copy

36 responses



● बीए-भाग एक



कल्याणकारी अर्थशास्त्र क्या है?

36 responses

कल्याणकारी अर्थशास्त्र :- कल्याण अर्थशास्त्र अर्थशास्त्र की एक शाखा हैं, जो सूक्ष्म अर्थशास्त्रीय तकनीकों का प्रयोग करता हैं, जिससे सकल (अर्थव्यवस्था के) स्तर पर भलाई (कल्याण) का आंकलन किया जा सकें।
कल्याण अर्थशास्त्र को Scitovsky द्वारा परिभाषित किया गया है, "आर्थिक सिद्धांत के सामान्य निकाय का वह हिस्सा जो मुख्य रूप से नीति से संबंधित है।" यह इस प्रकार एक "सामान्य" अध्ययन है जो निर्णय और पर्वे के साथ संबंध है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि यह एक "सकारात्मक" अध्ययन नहीं है। इसके कुछ सिद्धांत और मानक हैं जिनके आधार पर अर्थशास्त्री आर्थिक नीतियों का न्याय और निर्माण कर सकता है।

नहीं पता sir.....

कल्याण अर्थशास्त्र अर्थशास्त्र की एक शाखा हैं, जो सूक्ष्म अर्थशास्त्रीय तकनीकों का प्रयोग करता हैं, जिससे सकल (अर्थव्यवस्था के) स्तर पर भलाई (कल्याण) का आंकलन किया जा सकें।

कल्याण अर्थशास्त्र की एक शाखा है जो कुल स्तर पर कल्याण का मूल्यांकन करने के लिए सूक्ष्म अधिक तकनीकों का उपयोग करती हैं।

एक समय में राजनीतिक विचारधारा कोई भी हो सामाजिक कल्याण को अत्यधिक महत्व दिया जाता है अर्थशास्त्र की वह शाखा जो कि सामाजिक कल्याण से संबंधित आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन करती है उसे कल्याणकारी अर्थशास्त्र कहते हैं।

कल्याणकारी अर्थशास्त्र, अर्थशास्त्र की वह शाखा है जो आर्थिक नीतियों एवं सिद्धांतों का अध्ययन मनुष्य के कल्याण के आधार पर करता है।

कल्याणकारी अर्थशास्त्र अर्थशास्त्र की एक शाखा है जो कुल (अर्थव्यवस्था वाली) स्तर पर कल्याण (कल्याण) का मूल्यांकन करने के लिए सूक्ष्म आर्थिक तकनीकों का उपयोग करती हैं कल्याण अर्थशास्त्र के सामाजिक विकल्प सिद्धांत के करीबी संबंधों के कारण तीर की असंभवता परमेय कभी - कभी तीसरे मौलिक परमेय के रूप में सुचीबद्ध होती है

प्रो. वाटसन का कहना है की आदर्शात्मक कीमत सिद्धांत का दूसरा नाम ही कल्याणकारी अर्थशास्त्र है इसका मुख्य उद्देश्य समाज के सभी सदस्यों का उत्पादन, उपभोग, विनिमय, वितरण आदि सभी क्षेत्रों में आर्थिक कल्याण का अध्ययन करना होता है तथा ऐसी नीतियों का विश्लेषण करना होता है जो आर्थिक कल्याण की वृद्धि में सहायक होती है।

An allocation of goods is pareto optimal when there is no possibility of redistribution in a way



where at least one individual would be better off while no other individual ends up worse off.

कल्याणकारी अर्थशास्त्र:-

कल्याणकारी अर्थशास्त्र अर्थशास्त्र की एक शाखा है जो उपयोग करती है सूक्ष्म आर्थिक मूल्यांकन करने की तकनीक के हाल-चाल (कल्याण) कुल (अर्थव्यवस्था व्यापी) स्तर पर।

कल्याण अर्थशास्त्र को Scitovsky द्वारा परिभाषित किया गया है 'आर्थिक सिद्धांत के सामान्य निकाय का वह हिस्सा जो मुख्य रूप से नीति से संबंधित है। यहां इस प्रकार एक सामान्य अध्ययन है जो निर्णय और पर्चे के साथ संबंध है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि यह एक सकारात्मक अध्ययन नहीं है। इसके कुछ सिद्धांत और मानक हैं

जिनके आधार पर अर्थशास्त्री आर्थिक नीतियों का न्याय और निर्माण कर सकता है।

कल्याण को मापने के लिए मुख्य रूप से दो अवधारणाएं हैं पहला एक बटे दो सुधार से संबंधित है जिससे समाज कल्याण बढ़ जाता है जब समाज किसी भी व्यक्ति को खराब किए बिना बेहतर होता है इस प्रस्ताव में यह मामला भी शामिल है कि जब एक या अधिक व्यक्ति बेहतर बंद होते हैं तो कुछ व्यक्ति ना तो बेहतर हो सकते हैं और ना ही खराब हो सकते हैं इस प्रकार यह पारंपरिक तुलना करने से मुक्त है।

अर्थशास्त्र को Scitovsky द्वारा परिभाषित किया गया है, "आर्थिक सिद्धांत के सामान्य निकाय का वह हिस्सा जो मुख्य रूप से नीति से संबंधित है।" यह इस प्रकार एक "सामान्य" अध्ययन है जो निर्णय और पर्चे के साथ संबंध है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि यह एक "सकारात्मक" अध्ययन नहीं है। इसके कुछ सिद्धांत और मानक हैं जिनके आधार पर अर्थशास्त्री आर्थिक नीतियों का न्याय और निर्माण कर सकता है।

Aadhunik smy mey rajnitik wichardhara koi bhi ho samajik klyanh ko atyadhik mhtw diya jata hai. Arthsastra ki wh shakha jo samajik klyanh se sambandhit aarthik kriyao ka adhyan krti hai klyanhkari arthsastra kahlati hai.

कल्याणकारी अर्थशास्त्र कल्याण अर्थशास्त्र अर्थशास्त्र एक ही शाखा है यू एक शाखा है जो सूक्ष्म अर्थशास्त्रीतकनीकों का प्रयोग किया जाता है जिसमें शकल अर्थव्यवस्था स्तर पर बुलाई कल्याण का अंक कल्याण किया जा सके कल्याण अर्थशास्त्रscitovsky. पारा परिभाषित क्या जाता है आर्थिक सिद्धांत की सामान्य निकाय का वह हिस्सा जो मुख्य रूप से संबंधित है यह इस प्रकार सामान्य अध्ययन है जो निर्णय आओर पचे के साथ सम्बन्ध है लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि यह एक सकारात्मक अध्ययन नहीं इसके कुछ सिद्धांत और मानक है। इस प्रकार कुछ अर्थशास्त्री आर्थिक पर निर्णय किया जाता है

कल्याणकारी अर्थशास्त्र अर्थशास्त्र की एक शाखा है जो सूक्ष्म अर्थशास्त्रीय तकनीकों का प्रयोग करता है जिससे शकल स्तर पर भलाई का आकलन किया जा सके।

Nhi pta

कल्याणकारी अर्थशास्त्र कल्डोर और हिक्स का कल्याण मानदंड विरोधभास सामाजिक कल्याण तथा सामाजिक पसंदगी बर्गसन शेम्पुल्सन का सामाजिक कल्याणकारी कार्य है

2. मूल्य निर्णय की भूमिका में कल्याणकारी अर्थशास्त्र कल्याणकारी अर्थशास्त्र के क्षेत्र में भी गांव का योगदान पैरों अनुकूलतम धारण अवधारणा नवीन कल्याणकारी अर्थशास्त्र है। 3. सामाजिक कल्याण को अधिक महत्व दिया जाता है। अर्थशास्त्र की वह शाखा है जो सामाजिक कल्याण से संबंधित आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन करती है कल्याण कल्याणकारी अर्थशास्त्र कहलाती है

4. कल्याणकारी अर्थशास्त्र आर्थिक विज्ञान की वह शाखा है जो आर्थिक नीतियों में उपयुक्त के मापदंडों की स्थापना तथा लागू करने की प्रयत्न करती है

कल्याणकारी अर्थशास्त्र:-

कल्याणकारी अर्थशास्त्र अर्थशास्त्र की वह शाखा है जो उपयोग करती है सूक्ष्म आर्थिक मूल्यांकन करने की तकनीक के हाल-चाल कल्याण स्तर पर अर्थव्यवस्था पर।



कल्याणकारी अर्थशास्त्र को एक अर्थशास्त्री द्वारा परिभाषित किया गया है। आर्थिक सिद्धांत के सामान्य निकाय से जो मुख्य रूप से नीति से संबंधित है यहां इस प्रकार एक सामान्य अध्ययन है जो निर्णय और परिचय के साथ संबंध है लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि एक सकारात्मक अध्ययन नहीं है। इसके कुछ सिद्धांत और मानक हैं जिनके आधार पर अर्थशास्त्री आर्थिक नीतियों का न्याय और निर्माण कर सकता है। कल्याण को मापने के लिए मुख्य रूप से दो अवधारणा हैं पहला एक एक बटे दो सुधार से संबंधित है जिससे समाज कल्याण बढ़ जाता है जब समाज किसी भी व्यक्ति को खराब किए बिना बेहतर होता है इस प्रस्ताव में यह मामला भी शामिल है जब एक या एक से अधिक व्यक्ति बेहतर बंद होते हैं तो कुछ व्यक्ति ना तो बेहतर हो सकते और ना ही खराब हो सकते हैं इस प्रकार यह पारंपरिक तुलना करने से मुक्त है।

कल्याणकारी अर्थशास्त्र अर्थशास्त्र की एक शाखा है जो सूक्ष्म अर्थशास्त्रीय तकनीक का प्रयोग करता है जिससे सकल या अर्थव्यवस्थाओं के रस्ता पर कल्याण का आकलन किया जा सके /

कल्याणकारी अर्थशास्त्र, आर्थिक सिद्धांत की एक विशिष्ट शाखा है। कल्याणकारी अर्थशास्त्र अर्थव्यवस्था में विभिन्न प्रकार की आर्थिक नीतियों को लागू की जाती है उनसे सामाजिक कल्याण में वृद्धि होती है अथवा नहीं इसका मूल्यांकन करती है। यह मूल्यांकन सामाजिक संरचना की स्वीकृत लक्ष्यों को ध्यान में रखकर किया जाता है। कल्याणकारी अर्थशास्त्र कारण एवं परिणाम के बीच प्राप्त संबंधों के आधार पर निष्कर्ष निकालता है।

प्रोफेसर वाटसन का कहना है की आदर्शत्मककीमत सिद्धांत ही कल्याणवादी अर्थशास्त्र है इसका मुख्य उद्देश्य समाज के सभी सदस्यों का उत्पादन उपभोग वितरण आदि सभी क्षेत्रों में आर्थिक कल्याण का अध्ययन करना होता है उसे कल्याणकारी अर्थशास्त्र कहते हैं

कल्याणकारी अर्थशास्त्र:- अर्थशास्त्र की एक शाखा है जो कि उपयोग करती है सूक्ष्म आर्थिक मूल्यांकन करने की तकनीक के हाल-चाल (कल्याण) कुछ (अर्थव्यवस्था- व्यापी) स्तर पर। कल्याणकारी अर्थशास्त्र की सिद्धांतों को लागू करने का प्रयास क्षेत्र को जन्म देता है सार्वजनिक और शास्त्र सरकार कैसे सुधार करने के लिए हस्तक्षेप करती है इसका अध्ययन सामाजिक कल्याण। कल्याण अर्थशास्त्र सार्वजनिक अर्थशास्त्र के विशेष उपकरणों के लिए सैद्धांतिक नीव प्रदान करता है।

Kalyan khari arthshastra arthshastra ki ek Sakha hai jo sukshma earth shastriyon ke takniki ka prayog karta h , jisse sakal ster pr Kalyan ka anklan kiya ja sake.

सामान्यतः कल्याणकारी अर्थशास्त्र का सम्बन्ध उन नीतियों, कानूनों एवम् परम्पराओं से है, जो समाज के कल्याणकारी विचारधारा को प्रोत्साहित करके समस्त जनसंख्या को उच्च जीवन स्तर प्राप्त करने का माध्यम प्रदान करती है। कल्याणकारी अर्थशास्त्र, अर्थशास्त्र की वह शाखा है, जिसमें आर्थिक नीतियों का विश्लेषण मुख्य रूप से समाज कल्याण को अधिकतम करने की दृष्टि से किया जाता है।

कल्याणकारी अर्थशास्त्र की एक शाखा है जो सूचना अर्थशास्त्री तकनीकों का प्रयोग करता है जिसके सर्कल अर्थशास्त्र के स्तर पर भलाई कल्याण का अंत किया जाता है

कल्याण अर्थशास्त्र अर्थशास्त्र की एक शाखा है जो कुल (अर्थव्यवस्था-व्यापी) स्तर पर कल्याण (कल्याण) का मूल्यांकन करने के लिए सूक्ष्म आर्थिक तकनीकों का उपयोग करती है। एक सामान्य पद्धति सामाजिक कल्याण समारोह के व्युत्पन्न (या धारणा) से शुरू होती है, जिसका उपयोग तब सामाजिक कल्याण के संदर्भ में संसाधनों के आर्थिक रूप से व्यवहार्य आवंटन को रैंक करने के लिए किया जा सकता है। इस तरह के कार्यों में आम तौर पर आर्थिक दक्षता और इकटि की उपायों को शामिल किया जाता है, हालांकि सामाजिक कल्याण को मापने के हालिया प्रयासों में आर्थिक स्वतंत्रता (क्षमता दृष्टिकोण के रूप में) सहित उपायों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है। कल्याण अर्थशास्त्र का क्षेत्र दो मौलिक प्रमेय से जुड़ा हुआ है। पहले राज्यों ने कुछ मान्यताओं को देखते हुए प्रतिस्पर्धी बाजार (मार्केट) रूपान्तरणों का उत्पादन किया, यह माना गया कि अर्थशास्त्र के अर्थशास्त्र के तर्कों को प्रकृत है। दूसरे

बाजार (पारता) पुराला पारणामा पग उत्पादन पय्या, यह एउमाल्मय पग जट्टर्य हाय पग तपक पग पयडुता ह। दूसर राज्यों ने आगे प्रतिबंध दिए, किसी भी पारेतो कुशल परिणाम को प्रतिस्पर्धी बाजार संतुलन के रूप में समर्थित किया जा सकता है। इस प्रकार एक सामाजिक योजनाकार सबसे न्यायसंगत कुशल परिणाम चुनने के लिए सामाजिक कल्याण समारोह का उपयोग कर सकता है, फिर इसे लाने के लिए प्रतिस्पर्धी व्यापार के बाद एकमुश्त स्थानान्तरण का उपयोग करें। कल्याण अर्थशास्त्र के सामाजिक विकल्प सिद्धांत के करीबी संबंधों के कारण, तीर की असंभवता प्रमेय कभी-कभी तीसरे मौलिक प्रमेय के रूप में सूचीबद्ध होती है।

कल्याण अर्थशास्त्र के सिद्धांतों को लागू करने का प्रयास सार्वजनिक अर्थशास्त्र के क्षेत्र में वृद्धि देता है, यह अध्ययन कि सामाजिक कल्याण में सुधार करने के लिए सरकार कैसे हस्तक्षेप कर सकती है। कल्याण अर्थशास्त्र भी सार्वजनिक अर्थशास्त्र के विशेष उपकरणों के लिए सैद्धांतिक नींव प्रदान करता है, जिसमें लागत-लाभ विश्लेषण शामिल है, जबकि कल्याण अर्थशास्त्र और व्यवहारिक अर्थशास्त्र से अंतर्दृष्टि के संयोजन ने एक नए उप-क्षेत्र, व्यवहारिक कल्याण अर्थशास्त्र के निर्माण को जन्म दिया है।

इटली के अर्थशास्त्री विल्फ्रेडो परेटो प्रथम अर्थशास्त्री थे जिन्होंने सामाजिक कल्याण में वृद्धि अथवा कमी के मापन हेतु एक निश्चित मापदंड या कसौटी के प्रतिपादन के परेटो ने पिगू के गढ़ नावाची विचारधारा और अंतर व्यक्ति की तुलना की मान्यता को स्वीकार नहीं किया है इसके स्थान पर परेटो सी क्रम वाविचारधारा को प्रस्तुत किया है।

उत्तर:- कल्याणकारी अर्थशास्त्र--- कल्याणकारी अर्थशास्त्र की एक शाखा है जो उपयोग करती है सूक्ष्म आर्थिक मूल्यांकन करने की तकनीकी के हाल-चाल (कल्याण कुल अर्थव्यवस्था) व्यापी स्तर पर--

कल्याण और जो शास्त्र को परिभाषित किया गया है!

आर्थिक सिद्धांत के सम्माननीय निकाय का वह हिस्सा जो मुख्य रूप से नीति से संबंधित है ,यहां इस प्रकार एक सामान्य अध्ययन है जो निर्णय और पर्चे के साथ संबंध है लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि यह एक सकारात्मक अध्ययन नहीं है, इसके कुछ सिद्धांत और जिनके आधार पर अर्थशास्त्री आर्थिक नीतियों का न्याय और निर्माण कर सकता है!

कल्याण को मापने के लिए मुख्य रूप से दो अवधारणा है !पहला एक बटे दो सुधार से संबंधित है ,जिससे समाज कल्याण बढ़ जाता है जब समाज किसी भी व्यक्ति को खराब किए बिना बेहतर होता है!

इस प्रस्ताव में यह मालूम मामला भी शामिल है ,कि जब एक किया अधिक व्यक्ति बेहतर बंद होते हैं ! तो कुछ व्यक्ति ना बेहतर हो सकते हैं! और ना ही खराब हो सकते हैं! इस प्रकार या प्रारंभिक तुलना करने में मुक्त है!

पैरेटो द्वारा प्रतिपादित अनुकूलतम विचार उपयोगिता के कमवाचक विचार पर आधारित था लेकिन पैरेटो का मानदण्ड उन परिस्थितियों में सामाजिक कल्याण की वृद्धि अथवा कमी को मापने में असमर्थ है ,

कल्याणकारी अर्थशास्त्र= कल्याण अर्थशास्त्र अर्थशास्त्र की एक शाखा है जो सुखी और शास्त्रीय तकनीकों का प्रयोग करता है। जिससे शक्ल (अर्थशास्त्र के स्तर) पर भलाई कल्याण का अंक आलम किया जा सके। कल्याण अर्थशास्त्र को scitovsky द्वारा परिभाषित किया गया है। आर्थिक सिद्धांत के सामान्य निकाय का वह हिस्सा जो मुख्य रूप से नीति से संबंधित है। यहां इस प्रकार एक सामान्य अध्ययन है जो निर्णय और पर्चे के साथ संबंध है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि यहां एक सकारात्मक अध्ययन नहीं है। इसके कुछ सिद्धांत और मानक है जिनके आधार पर अर्थशास्त्री आर्थिक नीतियों का न्याय और निर्माण कर सकता है।

कल्याण अर्थशास्त्र अर्थशास्त्र की एक ऐसी शाखा है जो कुल स्तर पर कल्याण के मूल्यांकन करने के लिए सूक्ष्म आर्थिक तकनीकों का उपयोग करती है।

कल्याणकारी अर्थशास्त्र अर्थशास्त्र की वह शाखा है जो कुल स्तर पर कल्याण का मूल्यांकन करने के लिए सूक्ष्म आर्थिक तकनीकों का उपयोग करती है कल्याणकारी अर्थशास्त्र के सामाजिक विकल्प सिद्धांत के करीबी संबंधों के कारण तीर कि संभवत प्रमेय कभी-कभी तीसरे मौलिक प्रमेय के रूप में सूचीबद्ध होती हैहै।

प्रो वाटसन का कहना है कि आदर्श आत्मा कीमत सिद्धांत का दूसरा नाम ही कल्याणकारी अर्थशास्त्र है इसका मुख्य

उद्देश्य समाज के सभी सदस्यों का उत्पादन उद्योग विनिमय वितरण आदि सभी क्षेत्र में आर्थिक कल्याण का अध्ययन करना होता है तथा ऐसी नीतियों का विश्लेषण करना होता है जो आर्थिक कल्याण की वृद्धि में सहायक होती है।

कल्याणकारी अर्थ भी लीडर के अनुसार कल्याणकारी और आर्थिक विज्ञान की वह शाखा है जो आर्थिक नीतियों की उपयुक्त के मानदंडों की स्थापना तथा उन्हें लागू करने का प्रयत्न करती है सिस्टर सेक्स के अनुसार कल्याण वादी अर्थशास्त्र आर्थिक सिद्धांत के समान रूप से संबंधित होता है इस संबंध में प्रशासन का कहना है कि सिद्धांत का दूसरा नाम वादी अर्थशास्त्र है इसका मुख्य उद्देश्य समाज के सभी सदस्यों का उत्पादन उद्योग में वितरण आदि सभी

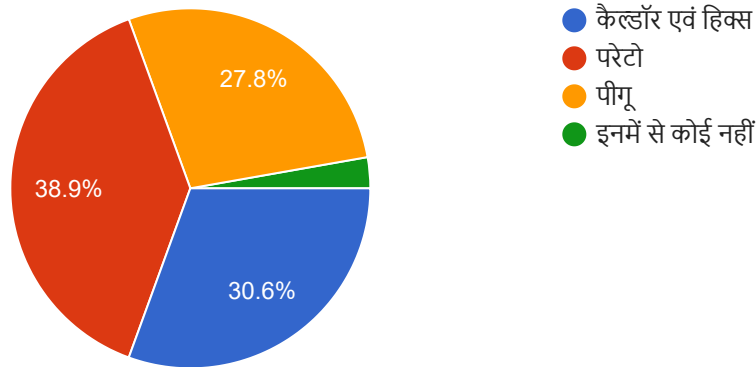
क्षेत्र में आर्थिक कल्याण का अध्ययन करना होता है तथा नीतियों का विश्लेषण करना होता है जो आर्थिक कल्याण की वृद्धि में सहायक होती है

उत्तर:-कल्याणकारी अर्थशास्त्र कल्याण अर्थशास्त्र अर्थशास्त्र की एक वह शाखा है जो कुल स्तर पर कल्याण का मूल्यांकन करती है। है कल्याण अर्थशास्त्र के सामाजिक विकल्प सिद्धांत के करीबी संबंधों के कारण तीर की असंभवता प्रमेय कभी-कभी तीसरे मौलिक प्रमेय के रूप में सूचीबद्ध होती है।

नवीन कल्याणकारी अर्थशास्त्र के प्रतिपादक हैं?

 Copy

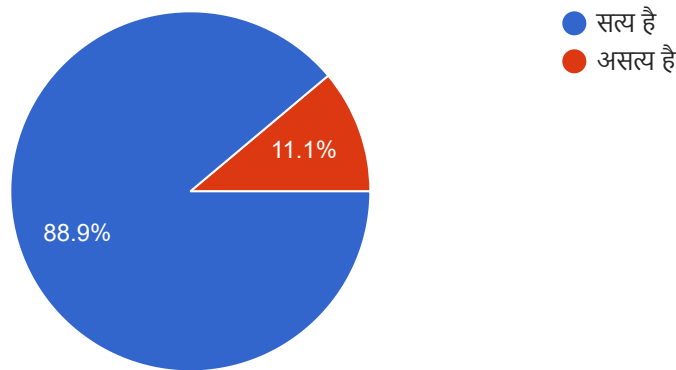
36 responses



"कैल्डॉर-हिक्स ने अपने कल्याणकारी अर्थशास्त्र में क्रमवाची विचारधारा को स्वीकार किया है" - यह कथन

 Copy

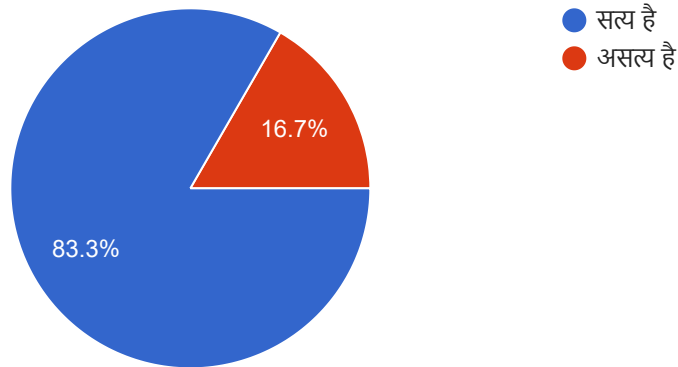
36 responses



"सामाजिक कल्याण फलन में नैतिक निर्णयों को अत्यधिक महत्व दिया गया है " - यह कथन

 Copy

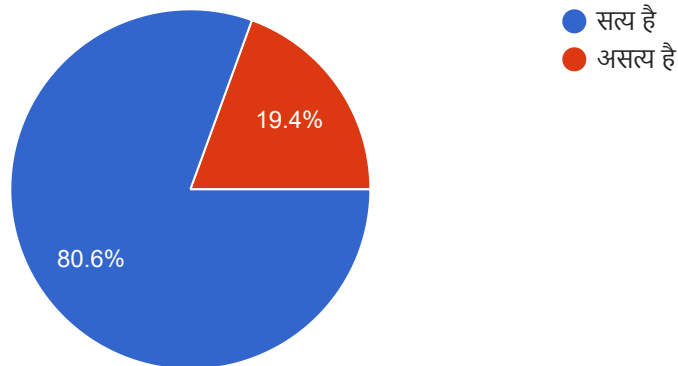
36 responses



"सामाजिक कल्याण फलन में नैतिक निर्णयों को अत्यधिक महत्व दिया गया है " - यह कथन

 Copy

36 responses

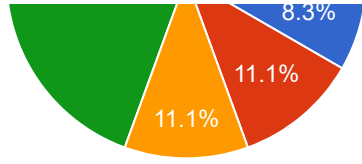


परेटो अनुकूलतम की निम्नलिखित मान्यताएँ है/हैं

 Copy

36 responses





Submission ID (skip this field)

2 responses

uXM6Av1eToUEhTj0

8tebHnXt80HAI8n9

This content is neither created nor endorsed by Google. [Report Abuse](#) - [Terms of Service](#) - [Privacy Policy](#)

Google Forms





पंचम इकाई परीक्षा (समाष्टि अर्थशास्त्र)

5 responses

[Publish analytics](#)

छात्र का पूरा नाम

5 responses

CHANDRAKUMAR

Terisa sori

YASHWANT PIDDA

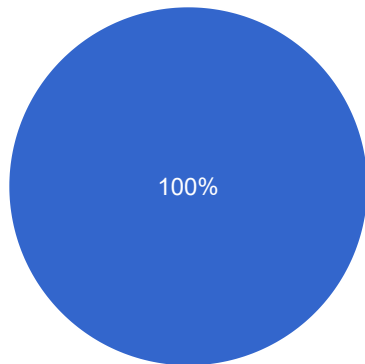
Pradeep Kumar Andhiya

CHANDRABHAN

कक्षा

5 responses

 Copy



● बीए-भाग दो



बहु राष्ट्रीय निगम क्या हैं?

5 responses

एक बहुराष्ट्रीय निगम (MNC) या ट्रांसनैशनल कॉर्पोरेशन (TNC), जिसे बहुराष्ट्रीय उद्यम (MNE) भी कहा जाता है, एक निगम या उद्यम है जो उत्पादन का प्रबंधन करता है या एक से अधिक देशों में सेवाएं प्रदान करता है। इसे अंतर्राष्ट्रीय निगम के रूप में भी संदर्भित किया जा सकता है।

बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ/निगम वह संगठन होते हैं जो अपने देश की तुलना में एक या एक से अधिक देशों में वस्तुओं या सेवाओं के उत्पादन को नियंत्रित करते हैं। इसे अंतर्राष्ट्रीय निगम या एक राज्यविहीन कम्पनी भी कहा जाता है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों की अपने देश के अलावा कम से कम एक अन्य देश में सेवाएं और अन्य संपत्ति होती हैं।

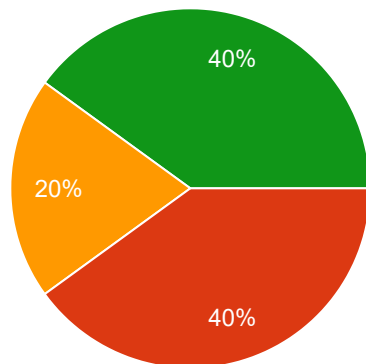
बहुराष्ट्रीय निगम या कंपनी एक ऐसी कंपनी या उद्यम है जिसकी औद्योगिक इकाई या कंपनी एक से अधिक देशों में फैली होती है। बहुराष्ट्रीय निगम वित्तीय रूप से काफी सुदृढ़ होते हैं, जिसका बहुराष्ट्रीय प्रबंध होता है और स्वामित्व बहुराष्ट्रीय होता है।

बहुराष्ट्रीय कंपनियां नियम व संगठन होते हैं जो देश की तुलना में एक या एक से अधिक देशों में वस्तुओं या सेवाओं के उत्पादन को नियंत्रित करते हैं इसे अंतरराष्ट्रीय निगम या एक राज्य विन कंपनी भी कहा जाता है

IBRD की स्थापना का प्रारंभिक उद्देश्य क्या था?

 Copy

5 responses



- द्वितीय विश्वयुद्ध से प्रभावित राष्ट्रों का पुनर्निर्माण
- अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा
- पर्यावरण संवर्धन
- इनमें से कोई नहीं

वर्तमान में अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के कितने सदस्य हैं?

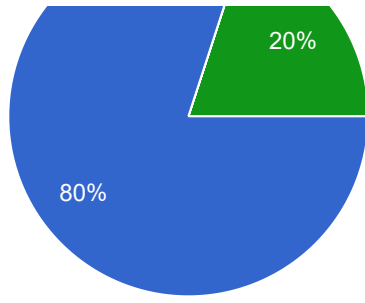
 Copy

5 responses



- 189
- 190



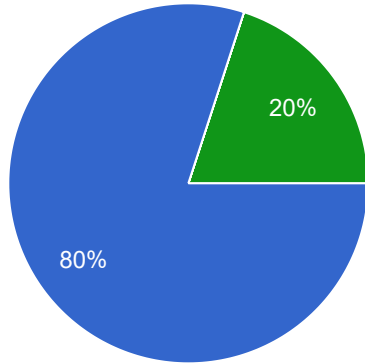


- 191
- 192

निर्यात प्रोत्साहन हेतु भारत सरकार द्वारा क्या कदम उठाये गये हैं?

Copy

5 responses

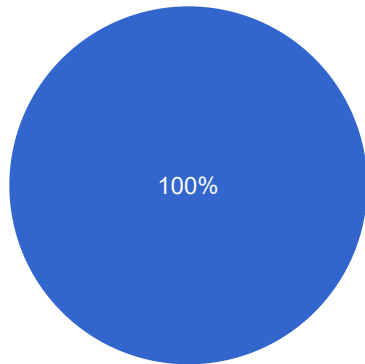


- निर्यातकों को टैक्स में छूट.
- निर्यातकों को आर्थिक सहायता
- आयात-निर्यात पास बुक योजना
- उपर्युक्त सभी

"भुगतान संतुलन में अदृश्य एवं अदृश्य मदों को सम्मिलित किया जाता है" यह कथन

Copy

5 responses

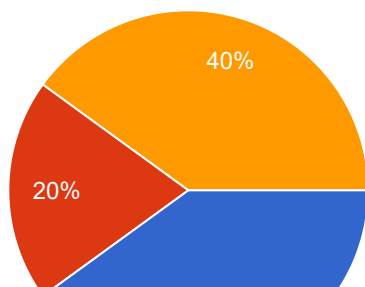


- सत्य है
- असत्य है

भुगतान संतुलन के पूंजी खाता में किस मद को सम्मिलित किया जाता है?

Copy

5 responses



- वस्तुओं का आयात-निर्यात
- सेवाओं का आयात-निर्यात
- विदेशों से ऋण की प्राप्ति
- इनमें से कोई नहीं





This content is neither created nor endorsed by Google. [Report Abuse](#) - [Terms of Service](#) - [Privacy Policy](#)

Google Forms



प्रथम इकाई परीक्षा (ऑनलाईन)

कक्षा : बीए-भाग तीन, विषय : अर्थशास्त्र

(शैक्षणिक सत्र : 2020-21)

शास. शहीद गेंदसिंह महाविद्यालय, चारामा. जिला-कांकेर (छग)

प्रथम इकाई परीक्षा (अर्थशास्त्र)

4 responses

[Publish analytics](#)

छात्र का पूरा नाम

4 responses

Neelam kumeti

Teejan Sewta

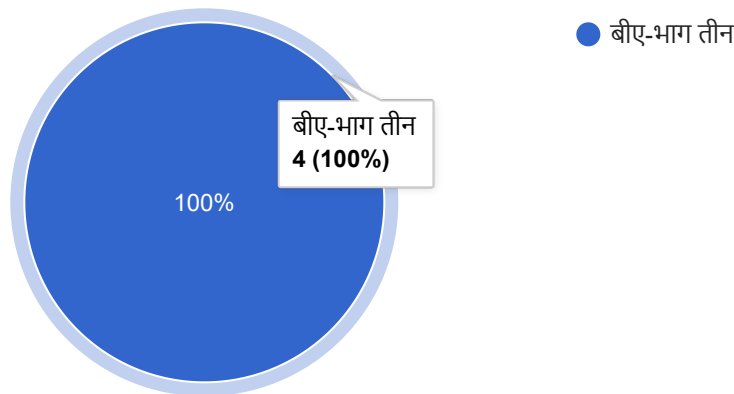
Pushpa patel

Hemant kumar patel

कक्षा

4 responses

[Copy](#)

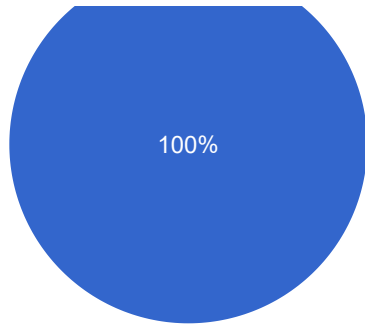


"आर्थिक विकास एक व्यापक अवधारणा है, जबकि आर्थिक वृद्धि एक संकुचित अवधारणा" -यह कथन

4 responses

[Copy](#)

● सत्य है.

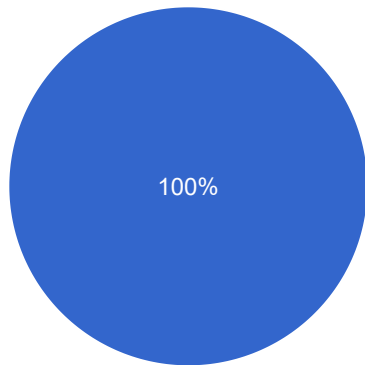


"केंद्रीय प्रवृत्ति के माप के दोष को दूर करने हेतु अपकिरण का प्रयोग किया जाता है... "

Copy

यह कथन

4 responses

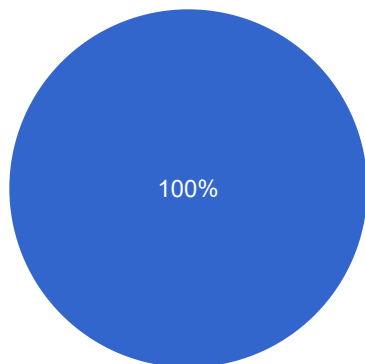


● सत्य है.
● असत्य है.

जिस पद की आवृत्ति सबसे ज्यादा होती है उसे क्या कहते हैं?

Copy

4 responses



● बहुलक
● मध्यका
● माध्य
● विषमता

निर्धनता से क्या आशय है?

4 responses

निर्धनता वह स्थिति या स्तर है जहाँ पर व्यक्ति अपनी आधारभूत जरूरतों को भी पूरा करने में सक्षम नहीं होता है।

निर्धनता वह स्थिति या स्तर है जहाँ पर व्यक्ति की आय इतनी कम हो जाती है कि वह व्यक्ति अपनी आधारभूत जरूरतों को भी पूरा करने में सक्षम नहीं होता है। वर्तमान समय में निर्धनता के आकलन के लिए उपभोग और व्यय विधि दोनों का प्रयोग सरकारों द्वारा किया जाता है।



Nirdhanta vah sthiti ya itar hai, Jahan per vyakti Ki aay itni kam hoti hai ki vah vyakti apni Aadhar Bhoot jarurato ko bhi pura karne mein saksham nahin hota hai.

निर्धनता वह स्थिति या स्तर है जहां पर व्यक्ति की आय इतनी कम हो जाती है की वह व्यक्ति अपनी आधारभूत जरूरतों को pura करने में सक्षम नहीं होता है वर्तमान समय में निर्धनता के आंकलन के लिए उपभोग और व्यय विधि दोनों का प्रयोग सरकार द्वारा किया जाता है।

विकासशील अर्थव्यवस्था से आप क्या समझते हैं?

4 responses

विकासशील अर्थव्यवस्था वह होती है जो अपने देश के विभिन्न मुद्दों पर जीत हासिल नहीं कर पाती, जैसे हम कह सकते हैं कि भारत की अर्थव्यवस्था एक विकासशील अर्थव्यवस्था है।

वे देश जो की आर्थिक विकास के प्रारंभिक चरण से गुजर रहे जहां पर लोगों की प्रति व्यक्ति आय कम होती है गरीबी और बेरोजगारी का स्तर अधिक होता है लोगों का रहन सहन का स्तर अच्छा नहीं होता है और देश की आधारभूत संरचना का विकास नहीं हुआ होता है ऐसे देश को विकासशील देश की संज्ञा दी जाती है।

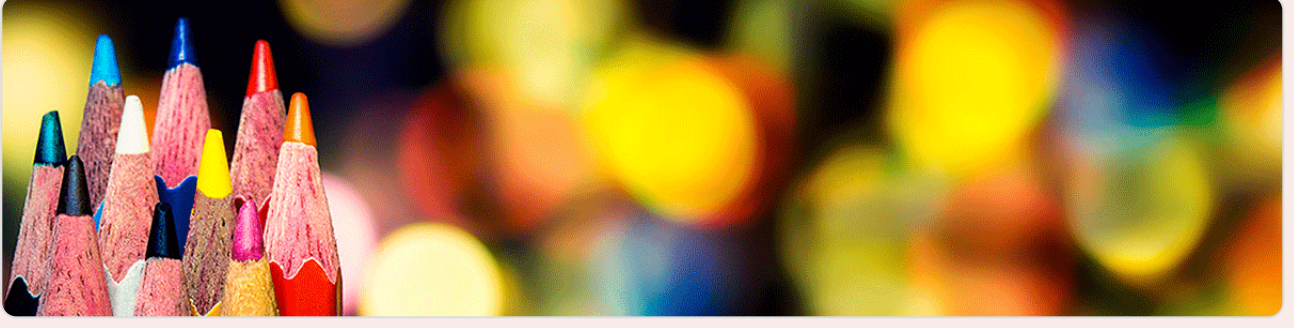
Ve desh jo ki aarthik vikas k prarambhik Charan se gujar rahe hai,jahan par logo ki prati vyakti aay kam Hoti hai, garibi aur berojgari ka star adhik hota hai. Logon ke rahan sahan ka star achcha nahin hota hai. Aur desh ki Aadhar boot sar Rachna ka Vikas nahin hua hota hai, aise desh ko vikassheel desh ki sangya Di jaati hai.

जो विकास करने की प्रक्रिया में हो अर्थात पूर्ण विकसित न हुआ हो परंतु विकसित होने के लिए प्रयासरत हो विकासशील कहलाता है। जैसे कोई पुष्प जो की बीज से विकसित होकर कली रूप में तो आ चुका है लेकिन अभी पूर्ण रूप से पुष्प में परिवर्तित नहीं हो पाया है विकासशील है।

This content is neither created nor endorsed by Google. [Report Abuse](#) - [Terms of Service](#) - [Privacy Policy](#).

Google Forms





प्रथम इकाई परीक्षा (समाष्टि अर्थशास्त्र)

12 responses

[Publish analytics](#)

छात्र का पूरा नाम

12 responses

Yashwant pidda

Narendra kumar

Tikeshwar Prasad Sinha

CHANDRABHAN

Vijay Kumar Nishad

Devendra Kumar kunjam

Pradeep kumar andhiya

Terisa sori

Pushpendra kumar

Himalay

unita yadav

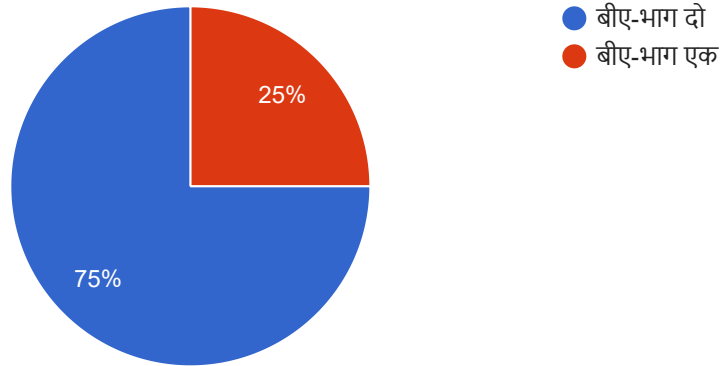
Chandrakumar



कक्षा

Copy

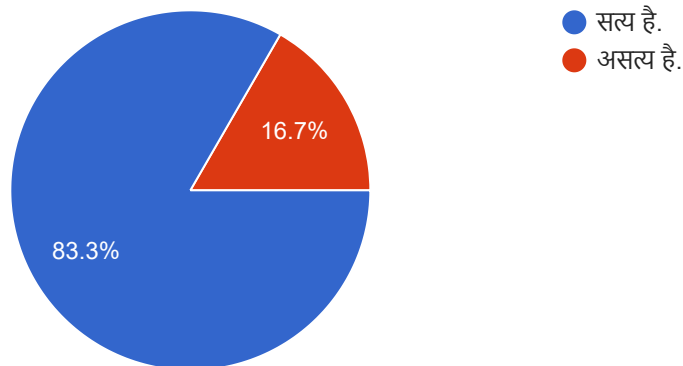
12 responses



"राष्ट्रीय आय की गणना में गैर कानूनी ढंग से प्राप्त आय को सम्मिलित नहीं किया जाता है"- यह कथन

Copy

12 responses



"पूर्ति अपनी माँग स्वयं पैदा करती है"- यह किसका कथन है?

Copy

12 responses

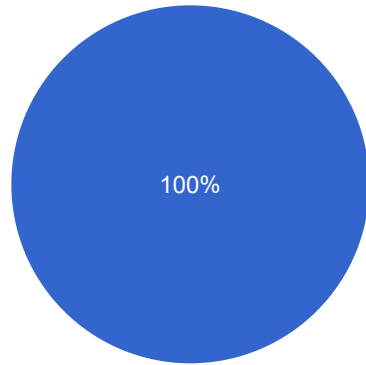




"The General Theory Employment, Interest & Money" किस अर्थशास्त्री की पुस्तक का नाम है?

Copy

12 responses

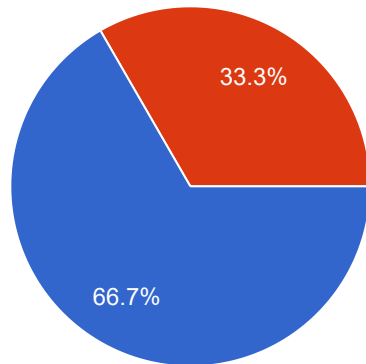


- कीन्स
- रॉबर्टसन
- जे आर हिक्स
- इनमें से कोई नहीं

"प्रभावपूर्ण माँग, कुल माँग फलन और कुल पूर्ति फलन पर निर्भर करता है" - यह कथन

Copy

12 responses

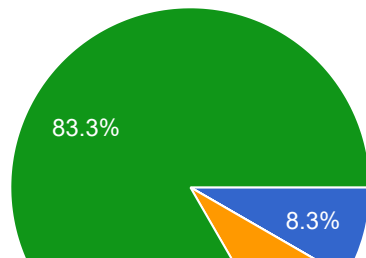


- सत्य है.
- असत्य है.

सकल घरेलू उत्पाद का सूत्र है

Copy

12 responses



- GDP=GNP-(E-I)
- GDP=GNP+(E-I)
- GDP=GNP+(E+I)
- इनमें से कोई नहीं.





राष्ट्रीय आय क्या है?

12 responses

किसी देश की उत्पादन व्यवस्था से अंतिम उपभोक्ता के हाथों में जाने वाली वस्तुओं या देश के पूँजीगत साधनों के विशुद्ध जोड़ को ही राष्ट्रीय आय कहते हैं। किसी देश के नागरिकों का सकल घरेलू एवं विदेशी आउटपुट सकल राष्ट्रीय आय कहलाता है

किसी देश की उत्पादन व्यवस्था से अंतिम उपभोक्ता के हाथों में जाने वाली वस्तुओं या देश के पूँजीगत साधनों के विशुद्ध जोड़ को ही राष्ट्रीय आय कहते हैं

किसी भी देश की अर्थव्यवस्था द्वारा पूरे वर्ष में उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं के शुद्ध मूल्य के योग को राष्ट्रीय आय कहते हैं

किसी देश की उत्पादन व्यवस्था से अंतिम उपभोक्ता के हाथों में जाने वाली वस्तुओं या देश के पूँजीगत साधनों के विशुद्ध जोड़ को ही राष्ट्रीय आय कहते हैं।

राष्ट्रीय आय

किसी भी देश में 1 वर्ष में जितनी वस्तुओं (FINAL GOODS) तथा सेवाओं का उत्पादन होता है उनका कुल मूल्य या कीमत उस देश की राष्ट्रीय आय कहलाती है।

राष्ट्रीय आय का निर्धारण देशों के खनिज, 1 अथवा उपजाऊ भूमि जैसी प्राकृतिक संपदा से नहीं की जाता है, अगर ऐसा होता है तो अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के देश सबसे अधिक समृद्ध होते।

आर्थिक संपत्ति अथवा किसी देश के धनी होने के लिए उसके पास सिर्फ संसाधनों का होना आवश्यक नहीं है, मुख्य बात यह है कि इन संसाधनों का उपयोग कैसे किया जाए जिससे उत्पादन का प्रवाह (flow) निरंतर बना रहे तथा इससे आय और संपत्ति का सृजन हो सके

साइमन कुजनेट्स को राष्ट्रीय आय लेखांकन का जन्मदाता माना जाता है।

भारत में सांख्यिकी विभाग के अंतर्गत केंद्रीय सांख्यिकी संगठन (CSO) राष्ट्रीय आय का आकलन एवं प्रकाशन करता है।

भारत आधिकारिक तौर पर राष्ट्रीय आय की गणना साधन लागत (FACTOR COST) पर किया करता था जनवरी 2015 से केंद्रीय सांख्यिकी संगठन द्वारा राष्ट्रीय आय की गणना बाजार मूल्य (MARKET COST) पर की जा रही है।

राष्ट्रीय आय का अर्थ है, किसी भी राष्ट्र की अर्थव्यवस्था द्वारा पूरे वर्ष में उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं के शुद्ध मूल्य के योग को राष्ट्रीय आय कहते हैं।



राष्ट्रीय आय अथवा लाभांश उत्पादन के साधनों द्वारा किसी एक निश्चित समय में (प्रायः 1 वर्ष) में उत्पादन किए गए पदार्थों एवं सेवाओं की शुद्ध मात्रा होती है अर्थात् 1 वर्ष की अवधि में किसी देश में जितनी वस्तुओं और सेवाओं का कुल उत्पादन होता है उसे ही उस देश का वास्तविक राष्ट्रीय आय कहते हैं

राष्ट्रीय आय किसी भी देश के लिए महत्वपूर्ण होता है। राष्ट्रीय आय संबंधित देश के आर्थिक विकास का दर्पण होता है। अतः राष्ट्रीय का आंकलन या गणना महत्वपूर्ण होता है। एक देश की सीमा की अंदर एक वित्तीय वर्ष में उत्पादित समस्त वस्तुओं एवं सेवाओं का शुद्ध मौद्रिक मूल्य जिसमें विदेशों से प्राप्त आय भी सम्मिलित की जाती है, राष्ट्रीय आय कहलाता है।

प्रो. साइमन कुजनेटस के अनुसार, "राष्ट्रीय आय वस्तुओं और सेवाओं का वह वास्तविक उत्पादन है जो एक वर्ष की अवधि में देश की उत्पादन प्रणाली से अंतिम उपभोक्ताओं के हाथों में पहुँचता है।

किसी देश की उत्पादन व्यवस्था से अंतिम उपभोक्ता के हाथों में जाने वाली वस्तुओं या देश के पूँजीगत साधनों के विशुद्ध जोड़ को ही राष्ट्रीय आय कहते हैं। किसी देश के नागरिकों का सकल घरेलू एवं विदेशी आउटपुट सकल राष्ट्रीय आय कहलाता है।

किसी भी राष्ट्र की अर्थव्यवस्था द्वारा पूरे वर्षों में उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं के शुद्ध मूल्य के योग को राष्ट्रीय आय कहते हैं।

राष्ट्रीय आय या साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद को समझने को भी समझना पड़ेगा।

- (1) सकल घरेलू उत्पाद
- (2) शुद्ध घरेलू उत्पाद

किसी देश की उत्पादन व्यवस्था से अंतिम उपभोक्ता के हाथों में जाने वाली वस्तुओं या देश के पूँजीगत साधनों के विशुद्ध जोड़ को राष्ट्रीय आय कहते हैं।

This content is neither created nor endorsed by Google. [Report Abuse](#) - [Terms of Service](#) - [Privacy Policy](#)

Google Forms



छःमाही परीक्षा (ऑनलाईन)

कक्षा : बीए-भाग तीन, विषय : अर्थशास्त्र

(शैक्षणिक सत्र : 2020-21)

शास. शहीद गेंदसिंह महाविद्यालय, चारामा. जिला-कांकेर (छग)

तिमाहा पराक्षा (द्वितीय प्रश्न पत्र)

3 responses

[Publish analytics](#)

छात्र का पूरा नाम

3 responses

Hemant Kumar

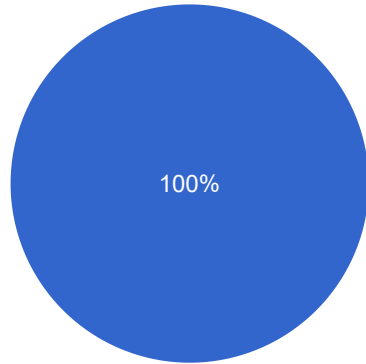
Pushpa patel

Teejan sewta

कक्षा

[Copy](#)

3 responses



● बीए-भाग तीन

3 responses

3 responses

निम्न समंको से कार्ल पीयर्सन का सह-सम्बन्ध गुणांक ज्ञात कीजिये

3 responses

3 responses



3 responses

This content is neither created nor endorsed by Google. [Report Abuse](#) - [Terms of Service](#) - [Privacy Policy](#).

Google Forms



तिमाही परीक्षा (ऑनलाईन)

कक्षा : बीए-भाग दो ,विषय : अर्थशास्त्र

(शैक्षणिक सत्र : 2020-21)

शास. शहीद गेंदसिंह महाविद्यालय, चारामा. जिला-कांकेर (छग)

तिमाहा पराक्षा (मुद्रा, बाकग एव राजस्व)

7 responses

[Publish analytics](#)

छात्र का पूरा नाम

7 responses

Chandrakumar

Terisa sori

Pushendra Kumar

Yashwant pidda

Tikeshwar Prasad Sinha

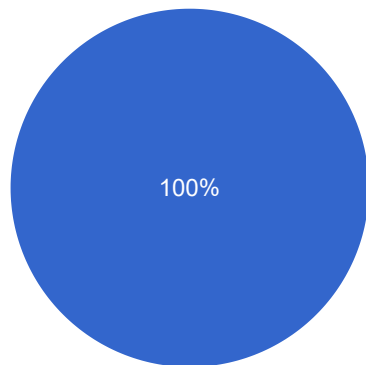
Tileshwar Kumar sen

CHANDRABHAN

कक्षा

[Copy](#)

7 responses



● बीए-भाग दो

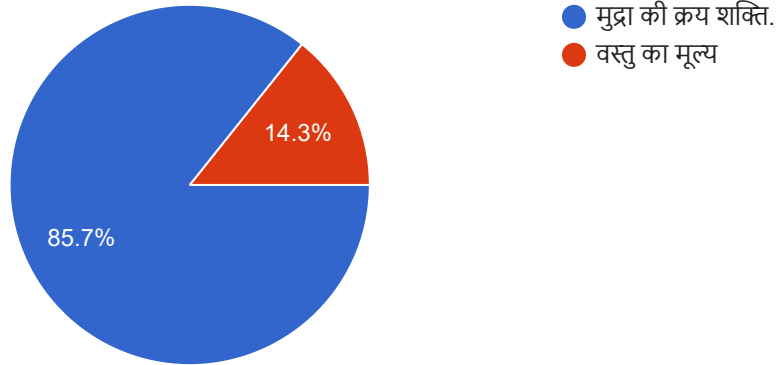
100%



मुद्रा के मूल्य का क्या अर्थ है?

Copy

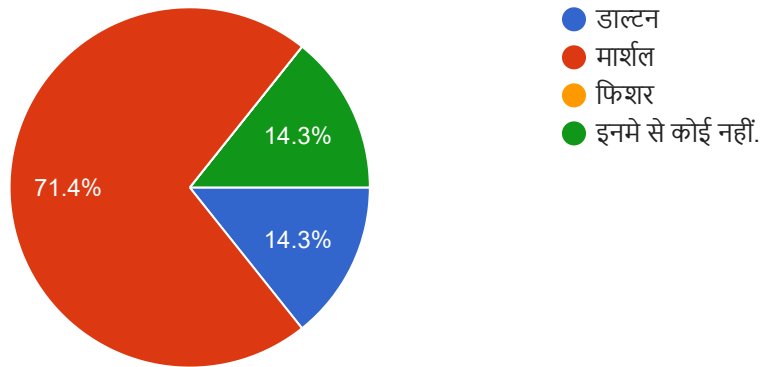
7 responses



निम्नलिखित अर्थशास्त्रियों में कौन अर्थशास्त्री कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से सम्बंधित है?

Copy

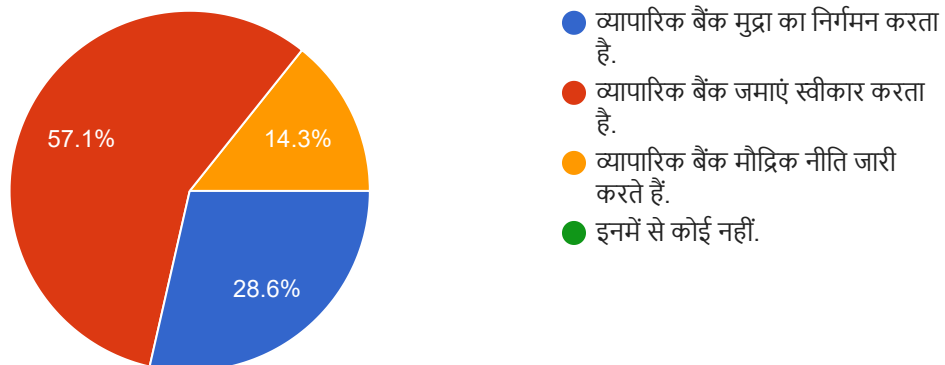
7 responses



व्यापारिक बैंक के सन्दर्भ में क्या सही है?

Copy

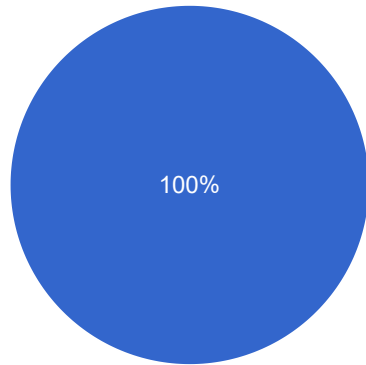
7 responses



भारतीय रिज़र्व बैंक की स्थापना कब हुई?

 Copy

7 responses

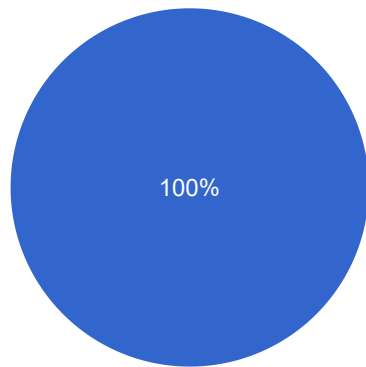


- 01 अप्रैल, 1935
- 01 अप्रैल, 1949
- 01 अप्रैल, 1947
- इनमें से कोई नहीं.

"भारतीय रिज़र्व बैंक सरकार का बैंकर है" यह कथन

 Copy

7 responses



- सत्य है
- असत्य है



ग्रेशम के नियम की संक्षिप्त व्याख्या कीजिये.

7 responses

इतिहास प्रसिद्ध ग्रेशम का नियम मानव स्वभाव की स्थिति पर आधारित है कि व्यक्ति अच्छी वस्तुओं को अपने उपयोग तथा संसद के लिए रखना चाहता है और घटिया निम्न कोटि की वस्तुओं को अन्य व्यक्तियों को देना चाहता है

इतिहास - प्रसिद्ध 'ग्रेशम का नियम' मानव - स्वभाव की इस प्रवृत्ति पर आधारित है कि व्यक्ति अच्छी वस्तुओं को अपने उपभोग तथा संचय के रखना चाहता है और घटिया तथा निम्न कोटि की वस्तुओं को अन्य व्यक्तियों को देना चाहता है।

ग्रेशम के नियम की व्याख्या इस प्रकार की जाती है, "खराब मुद्रा अच्छी मुद्रा को चलन से बाहर निकाल देने की प्रवृत्ति रखती है।" (Bad money tends to drive good money out of circulation.) और अधिक स्पष्ट शब्दों में ग्रेशम ने इस नियम की व्याख्या इस प्रकार की "अन्य बातें समान रहने पर, जब किसी देश में दो या दो से अधिक प्रकार की मुद्राएँ एक ही समय में चलन में होती हैं तो बुरी मुद्रा अच्छी मुद्रा को चलन से बाहर निकाल देती है।"

इतिहास प्रसिद्ध ग्रेशम का नियम मानव स्वभाव की इस प्रवृत्ति पर आधारित है कि व्यक्ति अच्छी वस्तुओं को अपने उपभोग तथा संचय के लिए रखना चाहता है और घटिया तथा निम्न कोटि की वस्तुओं को अन्य व्यक्तियों को देना चाहता है

ग्रेशम का नियम यह है कि वो मुद्रा के सफ़िती में अंतर बताता है

यदि एक ही धातु के सिक्के एक ही अंकित मूल्य के किंतु विभिन्न तौल एवं धात्विक गुणधर्म के एक साथ ही प्रचलन में रहते हैं, बुरा सिक्का अच्छे सिक्के को प्रचलन से निकाल बाहर करता है पर अच्छा कभी भी बुरे को प्रचलन से निकाल बाहर नहीं कर सकता।"

"यदि एक ही धातु के सिक्के एक ही अंकित मूल्य के किंतु विभिन्नता तौल एवं धात्विक गुणधर्म के एक साथ ही प्रचलन में रहते हैं, बुरा सिक्का अच्छे सिक्के को प्रचलन से निकाल बाहर करता है पर अच्छा कभी भी बुरे को प्रचलन से निकाल बाहर नहीं कर सकता।"

यदि एक ही धातु के सिक्के एक ही अंकित मूल्य के किंतु विभिन्न तौल एवं धात्विक गुणधर्म के एक साथ ही प्रचलन में रहते हैं बुरा सिक्का अच्छे सिक्के को प्रचलन से निकाल बाहर करता है पर अच्छा कभी भी बुरे को प्रचलन से निकाल बाहर नहीं कर सकता



व्यापारिक बैंक से आप क्या समझते हैं?

7 responses

वाणिज्य बैंक उन बैंक को कहा जाता है जो धन जमा करने का व्यवसाय करने के लिए रिबर देने वाली सेवाएं प्रदान करती है व्यापारिक बैंक रुपयों को क्षमा के रूप में स्वीकार करती है जब लोगों को मुद्रा की जरूरत होती है तो ऋण के रूप में उधार भी देती है

वे बैंक जो सामान्य बैंकिंग कार्य करते हैं व्यापारिक या वाणिज्यिक बैंक कहलाते हैं। ये बैंक सामान्यतः व्यापार का ही अर्थ प्रबंधन करते हैं, अतः इन्हें व्यापारिक बैंक कहा जाता है। इन बैंकों की पूंजी अनेक अंशों में विभाजित होती है और ये अंश विभिन्न व्यक्तियों या संस्थाओं द्वारा क्रय किये हुए होते हैं। ये बैंक व्यापारिक उद्देश्यों के लिए अल्पकालीन ऋणों की व्यवस्था करते हैं। आधुनिक बैंकों से तात्पर्य व्यापारिक बैंकों से ही है।

वे बैंक जो सामान्य बैंकिंग कार्य करते हैं व्यापारिक बैंक कहलाते हैं। ये बैंक सामान्यतः व्यापार का ही अर्थ प्रबंधन करते हैं, अतः इन्हें व्यापारिक बैंक कहा जाता है। इन बैंकों की पूंजी अनेक अंशों में विभाजित होती है और ये अंश विभिन्न व्यक्तियों या संस्थाओं द्वारा क्रय किये हुए होते हैं। ये बैंक व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए अल्पकालीन ऋणों की व्यवस्था करते हैं। आधुनिक बैंकों से तात्पर्य व्यावसायिक बैंक से ही है।

व्यापारिक बैंक में लोगों को व्यापार या धंधा करने के लिए ऋण देते हैं जिसके बदले बैंक का ब्याज दर बढ़ता है जिससे उस बैंक को फायदा होता है

वाणिज्य बैंक बैंकों को कहते हैं जो धन जमा करने, व्यवसाय के लिये ऋण देने जैसी सेवाएँ प्रदान करते हैं। व्यापारिक बैंक लोगों के रुपये को जमा के रूप में स्वीकार करती है तथा जब लोगों को मुद्रा की जरूरत होती है तो उन्हें ऋण के रूप में उधार भी देती है।

ग्राहकों की जमा स्वीकारता है तथा चालू या बचत खातों की छोटी-छोटी बचत जमा करता है वाह बचतों को एकत्रित कर ग्राहकों को ब्याज देता है।

व्यापारिक बैंक उन बैंकों को कहते हैं जो धन जमा करने व्यवसाय के लिए ऋण देने जैसे सेवाएं प्रदान करते हैं। व्यापारिक बैंक के लोगों के रुपए को जमा के रूप में स्वीकार करती है तथा जब लोगों को मुद्रा की जरूरत होती है तो उन्हें ऋण के रूप में उधार भी देती है

"मुद्रा वही है जो मुद्रा का कार्य करती है" व्याख्या कीजिये.

7 responses

केंद्रीय बैंक से आप क्या समझते हैं? केंद्रीय बैंक के कार्यों की व्याख्या कीजिये.

7 responses

Google Forms



तिमाही परीक्षा (ऑनलाईन)

कक्षा : बीए-भाग तीन, विषय : अर्थशास्त्र

(शैक्षणिक सत्र : 2020-21)

शास. शहीद गेंदसिंह महाविद्यालय, चारामा. जिला-कांकेर (छग)

तिमाहा पराक्षा (द्वितीय प्रश्न पत्र)

7 responses

[Publish analytics](#)

छात्र का पूरा नाम

7 responses

Gopichand dhruw

Manjusha mandavi

Hemant Kumar Patel

Neelam kumeti

Teejan sewta

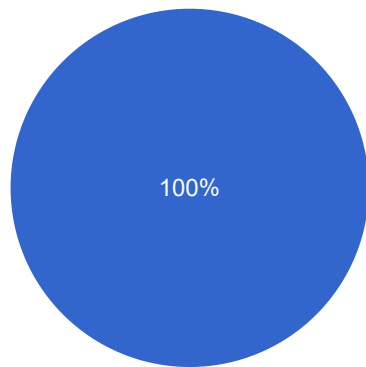
Pushpa patel

NAGESHWARI KOUMARY

कक्षा

7 responses

[Copy](#)



● बीए-भाग तीन



सांख्यिकी से आप क्या समझते हैं?

7 responses

ख्यिकी, गणित की वह शाखा है जिसमें आँकड़ों का संग्रहण, प्रदर्शन, वर्गीकरण और उसके गुणों का आकलन का अध्ययन किया जाता है। सांख्यिकी एक गणितीय विज्ञान है जिसमें किसी वस्तु/अवयव/तंत्र/समुदाय से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रह, विश्लेषण, व्याख्या या स्पष्टीकरण और प्रस्तुति की जाती है

आज के युग में सनकी का उपयोग ज्ञान या विज्ञान के प्रति क्षेत्र में होने लगा है यहां अत्यंत उपयोगी विज्ञान तथा वैज्ञानिक विधि है क्योंकि इसके द्वारा तथ्यों की संख्या तमाशा पहलू को सरल संचित अतुलनीय तथा अविश्वसनीय बनाने की कार्य में किए जाते हैं यही कारण है कि एच डी एच जी वेल्स ने कहा है कि कुशल नागरिकता के लिए सकारात्मक रूप से सूचना एवं एक दिन उतना ही आवश्यक हो जाएगा

संखाकिय शब्द से आशय, आंकड़ों से लिया जाता है जिसमें संख्यात्मक तथ्यों को महत्व दिया जाता है जैसे - राष्ट्रीय आय के आंकड़े, जनगणना के आंकड़े, कृषि समंक आदि।
सांख्यिकीय वह विज्ञान है जिसके अंतर्गत आंकड़ों के संकलन, विश्लेषण एवम निर्वचन से संबंधित विभिन्न संखिय रितियों को उचित रूप से अध्ययन किया जाता है।

गणना अथवा अनुमानों के संग्रह के विश्लेषण के आधार पर प्राप्त परिणामों से सामूहिक, प्राकृतिक अथवा सामाजिक घटनाओं पर निर्णय करने की रीति को सांख्यिकी विज्ञान कहते हैं।

सांख्यिकी गणित की वह शाखा है जिसमें आंकड़ों का संग्रहण प्रदर्शन वर्गीकरण और उसके गुणों का अध्ययन किया जाता है सांख्यिकी एक गणितीय विज्ञान है जिसमें किसी वस्तु अवयव यंत्र समुदाय से संबंधित आंकड़ों का संग्रह विश्लेषण व्याख्या या स्पष्टीकरण और प्रस्तुति की जाती है।

Shankhiyki ganit ki wah shakha hai, jismein aankdo ka sangrah, pradarshan, vargikaran aur uske gunon ka, aaklan ka adhyayn kiya jata hai. sankhiyki ek ganitiya vigyan hai, jismein kisi vastu, avyav, yantra, samuday se sambandhit aankdo ka sangrah vishleshan, vyakhya ya spashtikaran or prastuti ki jati hai.

वर्तमान समय में, सांख्यिकी वह विज्ञान एवं कला है जिसमें किसी अनुसन्धान के क्षेत्र से सम्बन्धित और विविध कारणों से प्रभावित सामूहिक संख्यात्मक तथ्यों के संग्रहण परस्तुतीकरण विश्लेषण एव विवेचन की रीतियों का अध्ययन किया जाता है। सांख्यिकी को दो रूपों में परिभाषित किया गया है। बहुवचन के रूप में और एकवचन के रूप में।

7 responses

7 responses

निम्न समंको से कार्ल पीयर्सन का सह-सम्बन्ध गुणांक ज्ञात कीजिये



This content is neither created nor endorsed by Google. [Report Abuse](#) - [Terms of Service](#) - [Privacy Policy](#).

Google Forms



तिमाही परीक्षा (ऑनलाईन)

कक्षा : बीए-भाग तीन, विषय : अर्थशास्त्र

(शैक्षणिक सत्र : 2020-21)

शास. शहीद गेंदसिंह महाविद्यालय, चारामा. जिला-कांकेर (छग)

तिमाहा पराक्षा (प्रथम प्रश्न पत्र)

6 responses

[Publish analytics](#)

छात्र का पूरा नाम

6 responses

Gopichand dhruw

HEMANT KUMAR PATEL

Neelam kumeti

Manjusha mandavi

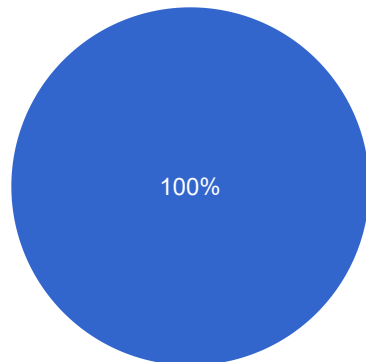
Teejan sewta

Pushpa Patel

कक्षा

6 responses

[Copy](#)

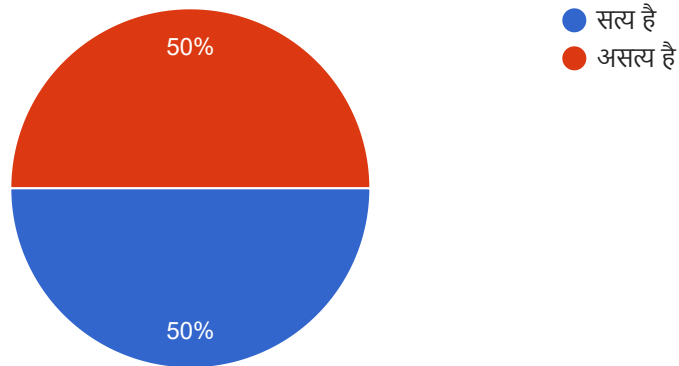


● बीए-भाग तीन

"आर्थिक वृद्धि का सम्बन्ध केवल राष्ट्रीय आय में वृद्धि से होता है" यह कथन

 Copy

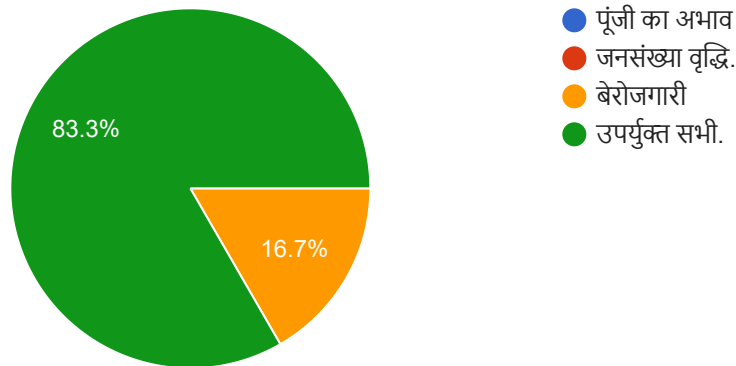
6 responses



आर्थिक विकास के मार्ग निम्नलिखित समस्याएँ होती हैं :-

 Copy

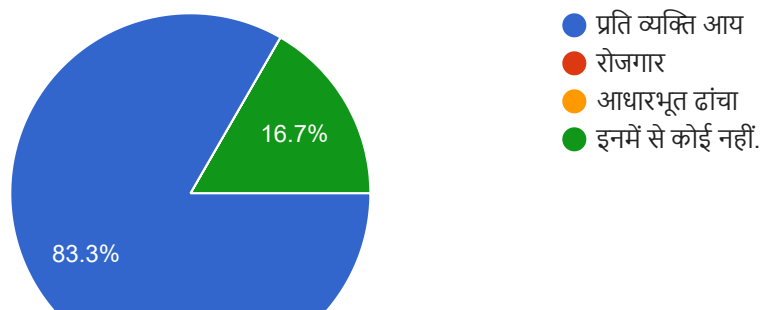
6 responses



निम्नलिखित में से कौन मानव विकास सूचकांक(HDI) का निर्धारक तत्त्व है ?

 Copy

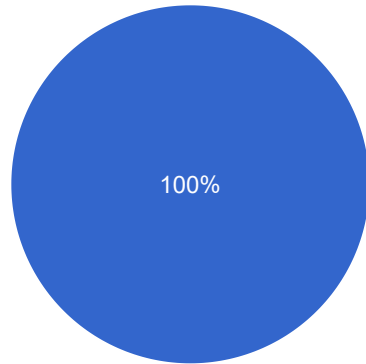
6 responses



कार्ल मार्क्स की पुस्तक का नाम क्या है?

 Copy

6 responses

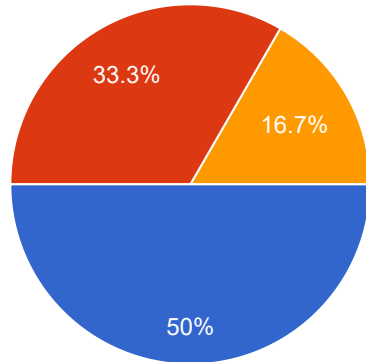


- दास कैपिटल
- जनरल थ्योरी ऑफ़ एम्प्लॉयमेंट, इंटररेस्ट एंड मनी
- वेलथ ऑफ़ नेशनस
- इनमें से कोई नहीं

विकासशील अर्थव्यवस्था की क्या विशेषताएं होती हैं?

 Copy

6 responses



- उच्च प्रति व्यक्ति आय
- उच्च जीवन प्रत्याशा
- गरीबी
- इनमें से कोई नहीं



आर्थिक वृद्धि से क्या आशय है?

6 responses

कुछ अर्थशास्त्रियों ने इसमें भेद प्रस्तुत करने का प्रयास किया है और स्पष्ट किया है कि आर्थिक संवृद्धि से अभिप्राय किसी समयावधि की तुलना में उत्पादन में हुई मात्रात्मक वृद्धि से है

किसी अर्थ व्यवस्था द्वारा उत्पन्न वस्तुओं और सेवाओं की कुल मात्रा में वृद्धि करना आर्थिक वृद्धि कहलाता है। यह वृद्धि निरंतर व दीर्घ काल तक जारी रहना चाहिए..... आर्थिक वृद्धि के लिए यह आवश्यक नहीं की अर्थव्यवस्था में सभी वस्तुओं और सेवाओं की मात्रा में एक समान वृद्धि हो।

किसी देश के द्वारा अपनी वास्तविक आय को बढ़ाने के लिए सभी उत्पादक साधनों का कुशलतम प्रयोग करना आर्थिक विकास है।

किसी भी देश की प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि आर्थिक वृद्धि कहलाती है आर्थिक विधि केवल उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं पर परिमाण बनाती है

किसी देश की प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि आर्थिक वृद्धि कहलाती है। आर्थिक वृद्धि केवल उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं का परिमाण बताती है।

Kisi desh ki prati vyakti sakal gharelu utpad mein ,vridhhi arthik vridhhi kahlati hai .arthik vridhhi Keval utpadit vastuon AVN Sevaon ka pariman batati hai.



निर्धनता के कारणों को बिन्दुवार बताइये.

6 responses

Nil

निर्धनता के कारण

1. आर्थिक कारण- भारत में विकाश की आसमानता दर, पूंजी की कमी, कुशल मानवीय संसाधन का अभाव मुद्रा का संतुलन, मुद्रा स्फीति की समस्या ऐसे कारक है जो अर्थ व्यवस्था को प्रभावित करते है ।

2. जनांकिय कारक- निर्धनता के जनांकिय करको में स्वास्थ्य, परिवार का आकार, कार्यशिल आयु से अधिक आयु के व्यक्ति यानी वृदो कि परिवार, निर्भरता इत्यादि निर्धनता के कारण है ।

3. सामाजिक कारण- भारतीय समाज में जतिभेद, लिंग, सांप्रदायिक छेत्र बाद जैसी समस्याओं से जकड़ा है इससे निर्धनता के स्फीति को बढ़ावा मिलता है ।

4.- भारत में संतोष परम सुखम्म की भावना की वजह से गरीबी बड़ी है ।

1.किसी समाज में सम्पदा के वितरण में विषमता।। 2.दुष्चक्र सिद्धान्त जिसके अनुसार गरीब लोग धन की कमी के कारण गरीब बने रहते हैं। 3.भौगोलिक पहलू जिसके अनुसार लोग जिन क्षेत्रों में रहते हैं वे अनुत्पादक है, जिस कारण वे निर्धनता के शिकार होते हैं।

भारत में निर्धनता का प्रमुख कारण निम्न है जनसंख्या में उच्च से वृद्धि शोषण निरक्षरता के कारण रिवर मजदूर और किसानों का हर कोई शोषण करता हमें जिससे उचित मजदूरी नहीं मिल पाती और निर्धनता बढ़ता ही जाता है भूमि साधनों में कमी और बेरोजगारी

- १)अधिक जनसंख्या
- २)जाति प्रथा
- ३)कृषि पर अत्यधिक निर्भरता
- ४)कालाबाजारी
- ५)अज्ञानता एवं अंधविश्वास
- ६)बेरोजगारी
- ७)प्रतिकूल जलवायु

- (1) jansankhya vridhhi.
- (2) kalabazari.
- (3) berojgari.
- (4) jaati pratha.
- (5) krishi ner atvadhik nirbharta



(5) कृषि पर अत्याधिक निर्भरता.

(6) प्रतिकूल जलवायु.

(7) जीवन की समस्या.

(8) अज्ञानता, अविश्वास.

आर्थिक विकास से आप क्या समझते हैं? आर्थिक विकास को प्रभावित करने वाले तत्वों की व्याख्या कीजिये.

6 responses

कार्ल मार्क्स के आर्थिक विकास सिद्धांत की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिये.

6 responses

This content is neither created nor endorsed by Google. [Report Abuse](#) - [Terms of Service](#) - [Privacy Policy](#)

Google Forms



तिमाही परीक्षा (ऑनलाईन)

कक्षा : बीए-भाग दो ,विषय : अर्थशास्त्र

(शैक्षणिक सत्र : 2020-21)

शास. शहीद गेंदसिंह महाविद्यालय, चारामा. जिला-कांकेर (छग)

तिमाहा परीक्षा (समाष्टि अर्थशास्त्र)

8 responses

[Publish analytics](#)

छात्र का पूरा नाम

8 responses

Chandrakumar nayak

Terisa sori

Pushendra Kumar

Yashwant pidda

Tikeshwar Prasad Sinha

Rupwati salam

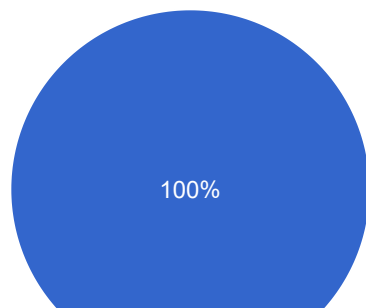
Tilshwar Kumar sen

CHANDRABHAN

कक्षा

[Copy](#)

8 responses



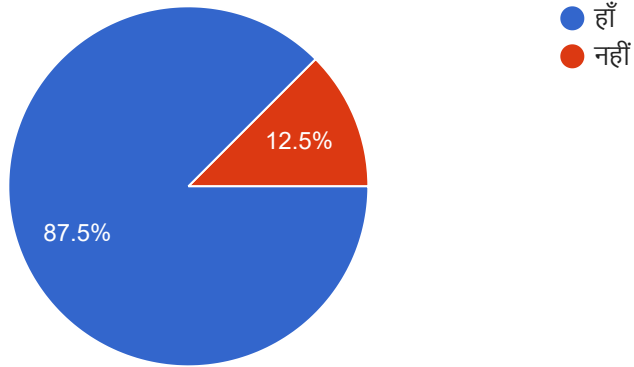
● बीए-भाग दो



"शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद = शुद्ध घरेलु उत्पाद + आयात-निर्यात का अंतर" यह सूत्र शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद की सही व्याख्या करता है?

 Copy

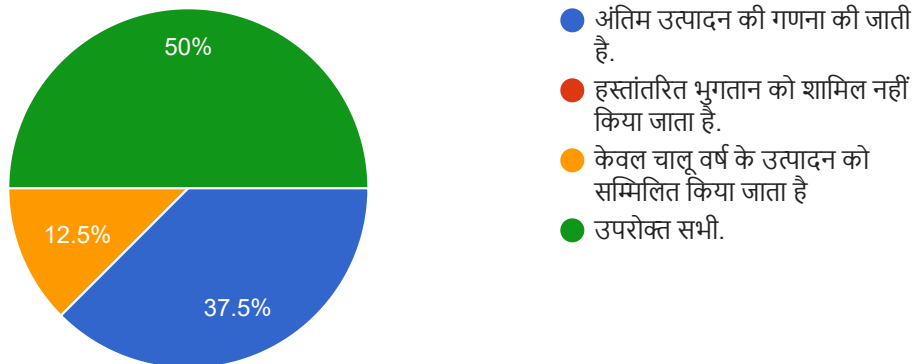
8 responses



जीएनपी के सन्दर्भ में निम्नलिखित कौन सा कथन सही है?

 Copy

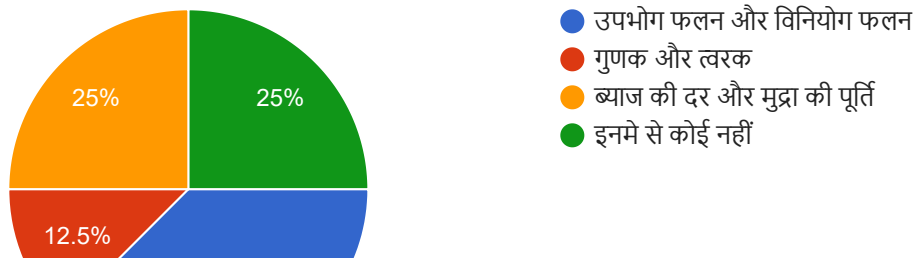
8 responses

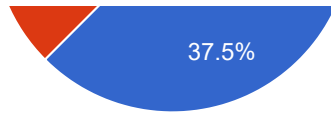


कीन्स के रोजगार सिद्धांत में कुल मांग फलन निर्भर करता है

 Copy

8 responses

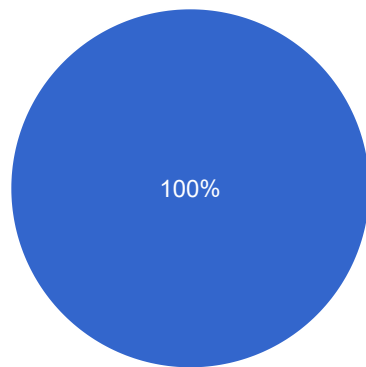




"GENERAL THEORY OF EMPLOYMENT, INTEREST AND MONEY" किस अर्थशास्त्री के किताब का नाम है ?

Copy

8 responses

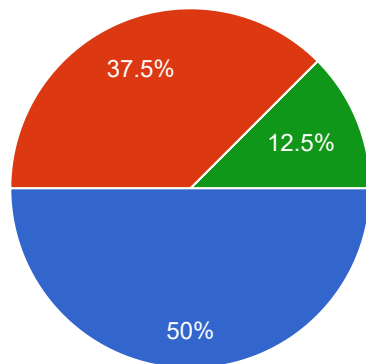


- कीन्स
- मार्शल
- पीगू
- इनमे से कोई नहीं

व्यापार चक्र का नवप्रवर्तन सिद्धांत किसका है?

Copy

8 responses



- कीन्स
- शुम्पीटर
- पीगू
- इनमे से कोई नहीं



प्रभावपूर्ण मांग क्या है?

8 responses

अर्थशास्त्र में बाजार में प्रभावी मांग एक उत्पाद या सेवा की मांग है जो तब होती है खरीदार एक अलग बाजार में बाध्य होते हैं सामानों के लिए एकत्रित बाजार में मांग विचारसिल या प्रभावी मांग कहलते हैं

कीन्स के अनुसार, प्रभावपूर्ण मांग आय को खर्च करने में प्रतिबिंबित होती है। प्रभावपूर्ण मांग मुख्य रूप से आय पर निर्भर करती है और आय में वृद्धि से रोजगार का स्तर किसी देश में बढ़ता है। इस प्रकार, "प्रभावपूर्ण मांग उस संपूर्ण व्यय को व्यक्त करती है जो कि रोजगार के किसी संतुलन स्तर पर किये गये कुल उत्पादन पर किया जाता है"। संक्षेप में किसी देश में वस्तुओं एवं सेवाओं की कुल मांग को प्रभावपूर्ण मांग कहते हैं।

प्रभावपूर्ण मांग उस सम्पूर्ण व्यय को व्यक्त करती है जो कि रोजगार के किसी संतुलन स्तर पर किये गये कुल उत्पादन पर किया जाता है। इस प्रकार प्रभावपूर्ण मांग कुल व्यय का सूचक है। प्रो. डडले डिलार्ड के अनुसार, कीन्स के रोजगार सिद्धान्त का प्रारम्भिक तर्कपूर्ण बिन्दु प्रभावपूर्ण मांग है। कुल रोजगार कुल मांग पर निर्भर रहता है तथा कुल मांग में कमी से बेरोजगारी फैल जाती है। कीन्स के अनुसार प्रभावपूर्ण मांग आय को खर्च करने में प्रतिबिम्ब होती है। प्रभावपूर्ण मांग मुख्य रूप से आय पर निर्भर रहती है और आय की वृद्धि रोजगार की मात्रा पर निर्भर करती है।

प्रभावपूर्ण मांग किसी वस्तु के बनावट अथवा वस्तु के मांग के ऊपर होता है जब वस्तु की मांग आधिक हो जाती है त उसका मांग बढ़ जाता है इससे मांग प्रभावित हो जाती है

अर्थशास्त्र में, बाजार में प्रभावी मांग (एक उत्पाद या सेवा की मांग है जो तब होती है जब खरीदार एक अलग बाजार में बाध्य होते हैं। सामानों के लिए एकत्रित बाजार में, मांग, विचारशील या प्रभावी, को कुल मांग के रूप में जाना जाता है।

कींस वादी अर्थशास्त्र के विख्यात लेखन प्रो. डडर्ड अनुसार किस के रोजगार सिद्धान्त का पारंपरिक तरुण बिंदु प्रभावपूर्ण मांग है रोजगार कुल मांग पर निर्भर रहता है तथा कुल मांग के कमी से बेरोजगारी मांगा है किसके अनुसार आय आय को खर्च करने में प्रतिबंधित होती है प्रभावपूर्ण माउंट मुख्य रूप से आए पर निर्भर रहती है और आई की विधि रोजगार की मात्रा पर निर्भर करता है

प्रभावपूर्ण मांग से आशय मुद्रा या माल की उस मात्रा से है जिसे एक निश्चित समय में एक देश के समस्त नागरिक उपभोग तथा विनियोग कहते हैं।

अर्थशास्त्र में बाजार में प्रभावित मांग (ईडी) एक उत्पाद या सेवा की मांग है जो तब होती है जब खरीदा अलग बाजार में होते हैं।... सामानों के लिए एकत्रित बाजार में, मांग, विचारशील या प्रभावी, को कुल मांग के रूप में जाना जाता है।



व्यापार चक्र क्या है?

8 responses

बाजार अर्थव्यवस्था में एक वर्ष अथवा कुछ माह में उत्पादन व्यापार और सम्बंधित गतिविधि को सदर्थ करने वाले को एक शब्द है व्यापारिक चक्र के अलावा चढ़ाव के दौरान उची राष्ट्रीय आय अधिक उत्पादन अधिक रोजगार या उची कीमतें पायी जाती हैं वहा व्यापार चक्र कहलाता है।

व्यापार चक्र का आशय आर्थिक क्रियाओं में होने वाले चक्राकार उतार- चढ़ावों से ही होता है, जो कि नियत समय पर बार-बार उत्पन्न होते रहते हैं। व्यापार चक्र के सम्बन्ध में विभिन्न लेखकों ने अपनी परिभाषाएं निम्नलिखित प्रकार से दी है:-

प्रो. बेरहम के अनुसार, "व्यापार चक्र वैभव एवं सम्पन्नता का एक ऐसा काल है, जिसके पश्चात् मंदी या अवकाश का आना स्वाभाविक हो जाता है।"

कीन्स के अनुसार, "व्यापार चक्र से आशय अच्छे व्यापार समय, जो बढ़ते मूल्य एवं निम्न बेरोजगार प्रतिशत को बताता है एवं इसके विपरीत बुरे व्यापार समय, जो गिरते मूल्य एवं उँचे रोजगार द्वारा प्रदर्शित होता है।

कीन्स के अनुसार, व्यापार-चक्र से आशय अच्छे व्यापार समय, जो बढ़ते मूल्य एवं निम्न बेरोजगार प्रतिशत को बताता है एवं इसके विपरीत बुरे व्यापार समय, जो गिरते मूल्य एवं उँचे रोजगार द्वारा प्रदर्शित होता है, से लगया जाता है।

व्यापार चक्र अर्थव्यवस्था में एक वर्ष या कुछ माह में उत्पादन और व्यापार सम्बन्धित गतिविधियों को संदर्भित करने वाला एक शब्द है किसी अर्थव्यवस्था में एक निश्चित समय अंतराल पर आर्थिक क्रियाओं में होने वाले बदलाव को व्यापार चक्र कहते हैं।

व्यापार चक्र बाजार अर्थव्यवस्था में एक वर्ष अथवा कुछ माह में उत्पादन, व्यापार और सम्बंधित गतिविधि को संदर्भित करने वाला एक शब्द है। व्यापारिक-चक्र के चढ़ाव के दौरान उँची राष्ट्रीय आय, अधिक उत्पादन, अधिक रोजगार तथा उँची कीमतें पाई जाती हैं।

व्यापार चक्र बाजार अर्थव्यवस्था 1 वर्ष अथवा कुछ माह में उत्पन्न अपार और संबन्धित गतिविधियों को संदर्भित करने वाला शब्द है जिसका अभी पर मैं व्यापारिक कार्यकलाप में समय-समय पर होने वाले उत्तर चढ़ाव से है किसी भी समाज के लिए लाभप्रद नहीं होते और समय के सभी वर्ग को गीत इनकी रोकथाम में निहित है अर्थशास्त्रियों गम्मत है आधुनिक अर्थशास्त्र के रहते हुए व्यापार चक्र और तब से संबन्धित विभिन्न और मार्क्स ने कुछ समय पश्चात व्यक्त कर दिया था यहां विचार ने १०० वर्ष पहले ने कुछ समय पश्चात अरे यार व्यापार चक्र उचित हल ढूंढने उसे व्यापार चक्र कहते हैं।

व्यापार चक्रों से आशय संगठित समुदायों की आर्थिक क्रियाओं में होने वाले उच्चावचनो की श्रृंखला से होता है। चूंकि यह व्यापार चक्र है।



व्यापार चक्र अथवा आर्थिक चक्र अथवा बूम बस्ट चक्र) बाजार अथव्यवस्था म 1 वष अथवा कुछ माह म उत्पादन व्यापार और संबंधित गतिविधियां को संदर्भित करने वाला एक शब्द है। व्यापारिक -चक्र के चढ़ाव के दौरान ऊंची राष्ट्रीय आय अधिक उत्पादन अधिक रोजगार तथा ऊंची कीमतें पाई जाती है।

कीन्स के रोजगार सिद्धांत की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिये.

8 responses

राष्ट्रीय आय को परिभाषित करते हुए इसके मापन के विधियों की' व्याख्या कीजिये.

8 responses

This content is neither created nor endorsed by Google. [Report Abuse](#) - [Terms of Service](#) - [Privacy Policy](#).

Google Forms



छ:माही परीक्षा (ऑनलाईन)

कक्षा : बीए-भाग तीन, विषय : अर्थशास्त्र

(शैक्षणिक सत्र : 2020-21)

शास. शहीद गेंदसिंह महाविद्यालय, चारामा. जिला-कांकेर (छग)

छ:माहा पराक्षा (प्रथम प्रश्न पत्र)

3 responses

छात्र का पूरा नाम

3 responses

Hemant Kumar

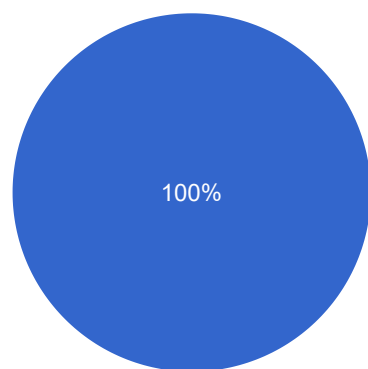
Ku. Teejan Sewta

Pushpa patel

कक्षा

 Copy

3 responses

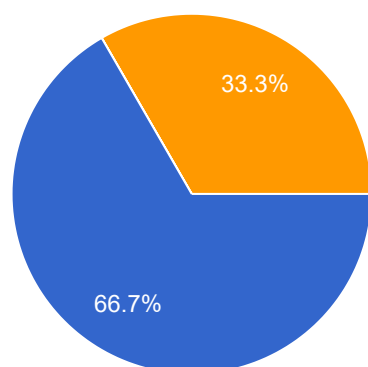


● बीए-भाग तीन

अतिरेक मूल्य को कार्ल मार्क्स मानते हैं -

 Copy

3 responses



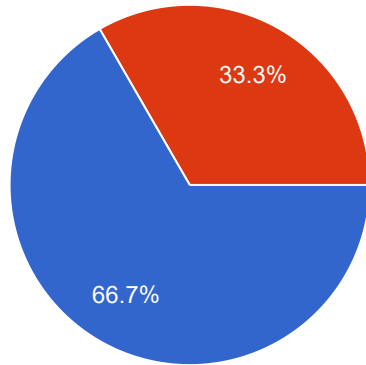
- श्रमिकों का शोषण
- सरकार का शोषण
- पूंजीपतियों का शोषण
- सम्पूर्ण समाज का शोषण



जनांकिकीय संक्रमण सिद्धांत के अनुसार सामाजिक विकास के प्रथम अवस्था में -

 Copy

3 responses

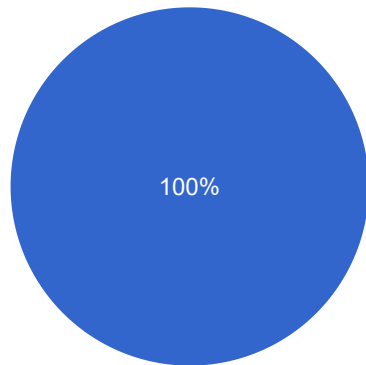


- जन्म दर और मृत्यु दर समान होती है.
- जन्म दर और मृत्यु दर में बड़ा अंतर होता है.

"जनांकिकीय संक्रमण सिद्धांत की पांचवी अवस्था में जन्म दर, मृत्यु दर से कम हो जाती है" यह कथन

 Copy

3 responses

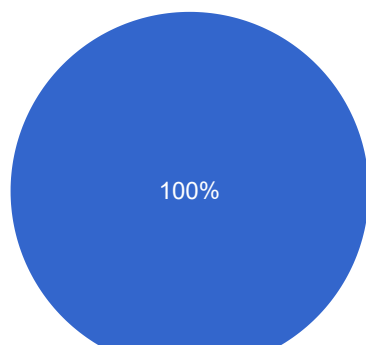


- सत्य है
- असत्य है

भारत में गरीबी रेखा के निर्धारण के लिए सरकार द्वारा कौन सी समिति का गठन किया गया था?

 Copy

3 responses



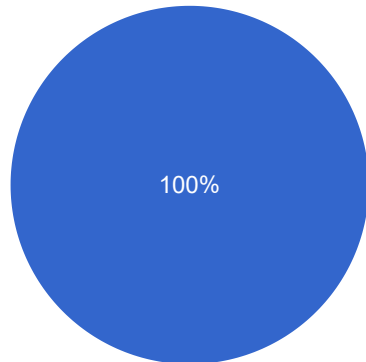
- सी रंगराजन समिति
- मनमोहन सिंह समिति
- मेहता समिति
- इनमें से कोई नहीं.



निम्नलिखित में से कौन मानव विकास सूचकांक(HDI) का निर्धारक तत्त्व है ?

 Copy

3 responses

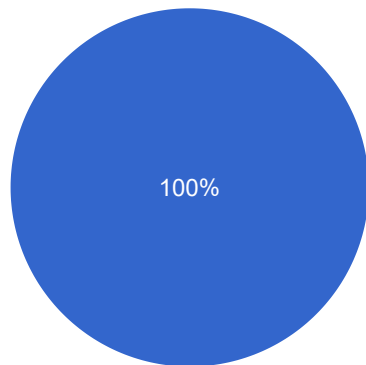


- प्रति व्यक्ति आय
- रोजगार
- आधारभूत ढांचा
- इनमें से कोई नहीं.

विश्व मानव विकास सूचकांक(HDI) किसके द्वारा जारी की जाती है ?

 Copy

3 responses

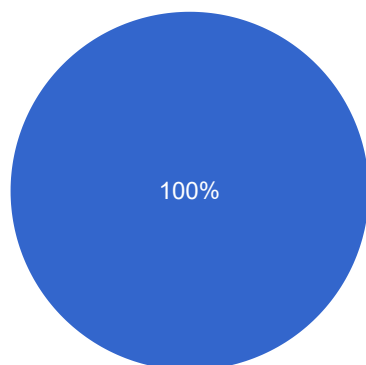


- संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम
- भारत सरकार
- अमेरिका
- इनमें से कोई नहीं

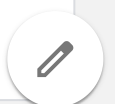
मानव विकास सूचकांक को बनाने का श्रेय किस अर्थशास्त्री को जाता है?

 Copy

3 responses



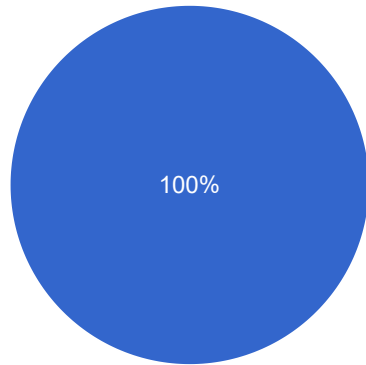
- मेहबूब-उल-हक
- एडम स्मिथ
- अल्फ्रेड मार्शल
- इनमें से कोई नहीं.



कार्ल मार्क्स की पुस्तक का नाम क्या है?

 Copy

3 responses

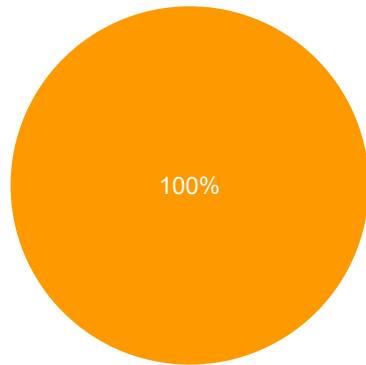


- दास कैपिटल
- जनरल थ्योरी ऑफ़ एम्प्लॉयमेंट, इंटरैस्ट एंड मनी
- वेल्थ ऑफ़ नेशनस
- इनमें से कोई नहीं

विकासशील अर्थव्यवस्था की क्या विशेषताएं होती हैं?

 Copy

3 responses

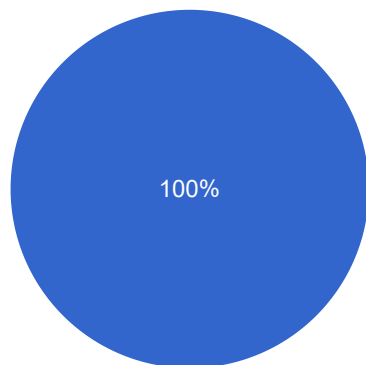


- उच्च प्रति व्यक्ति आय
- उच्च जीवन प्रत्याशा
- गरीबी
- इनमें से कोई नहीं

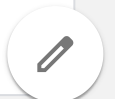
"जनसंख्या में वृद्धि के साथ-साथ पर्यावरण प्रदूषण बढ़ता जाता है " यह कथन

 Copy

3 responses



- सत्य है.
- असत्य है.



आर्थिक वृद्धि से क्या आशय है?

3 responses

किसी अर्थव्यवस्था द्वारा उत्पादित वस्तुओं सेवाओं की कुल मात्रा में वृद्धि करना आर्थिक वृद्धि कहलाता है। यह वृद्धि निरंतर व दीर्घकाल तक जारी रहना चाहिए,,,,, आर्थिक वृद्धि के लिए यह आवश्यक नहीं की अर्थव्यवस्था में सभी वस्तुएं और सेवाओं की मात्रा में एक समान वृद्धि हो।

किसी देश की प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि आर्थिक वृद्धि कहलाती है। आर्थिक वृद्धि केवल उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं का परिमाण बताती है।

Kisi desh ki prati vyakti aay ,sakal gharelu utpad mein arthik vridhhi kahlati hai .arthik vridhhi Keval utpadit vastuon AVN Sevaon ka pariman batati hai.



निर्धनता के कारणों को बिन्दुवार बताइये.

3 responses

निर्धनता के निम्नलिखित कारण है

1, आर्थिक कारण _ भारत में विकाश की असमानता दरपूंजी की कमी, कुशल मानवीय संसाधन का अभाव,मुद्रा का संतुलन, मुद्रा स्फीति की समस्या ऐसे कारक है। जो अर्थ व्यवस्था को प्रभावित करते है।

2, जन्नकीय कारक_ निर्धनता के जन्नकीय कारकों में स्वास्थ्य, परिवार का आकार, कार्य शील आयु से अधिक आयु के व्यक्ति यानी वृद्धकी परिवार निर्भरता इत्यादि निर्धत्ता के कारक है।

3, सामाजिक कारक_ भारतीय समाज में जाति भेद, लिंग, संप्रदाय, छेत्र जैसे समस्याओं से जकड़ा हैइससे निर्धनता के स्फीति को बढ़ावा मिलता है।

4, भारत में संतोष व परम सुख की भावनाकी वजह से गरीबी बड़ी है।

5, निर्धनता के कारण राष्ट्रीय आय पर बुरा असर पड़ता है।

(1) जाति प्रथा

(2) अधिक जनसंख्या

(3)कृषि पर अत्यधिक निर्भरता

(4)कालाबाजारी

(5)अज्ञानता एवं अंधविश्वास

(6)बेरोजगारी

(7)प्रतिकूल जलवायु

(1) adhik jansankhya.

(2)jati pratha.

(3) krishi par atyadhik nirbharta.

(4) kalabazari.

(5) berojgari.

(6) prati kul jalvayu.

(7) jivan ki samasya.

(8) agyanta AVN andhvishwas.



सापेक्ष और निरपेक्ष गरीबी क्या है?

3 responses

सापेक्ष गरीबी _ सापेक्ष गरीबी यह एस्पास्ट करती है की विभिन्न आय वर्गों के बिच कितना विषमता है प्रायः इस को मापने की दो विधि है

1, लारेंज वक्र।

2, गिनी गुणांक

निरपेक्ष गरीबी_ निरपेक्ष गरीबी का निर्धारण करते समय मनुष्य के पोषक आवश्यकताओतथा अनिवार्यताओके आधार परआय अथवा उपभोग व्यय के नुनतम स्तर को ज्ञात किया जाता हैं।

सापेक्ष गरीबी:-

सापेक्ष गरीबी से अभिप्राय विभिन्न वर्ग के लोगों में दूसरे देशों की तुलना में पायी जाने वाली निर्धनता से है जिसे देश राज्य वर्ग का जीवन स्तर दूसरे देश राज्य वर्ग से नीचे पाया जाता है सापेक्ष रूप से वे निर्धन माने जाते हैं।

निरपेक्ष गरीबी:-

निरपेक्ष गरीबी वह स्थिति है जिसमें कोई व्यक्ति जीवन के लिए आवश्यक मूलभूत आवश्यकताओं की भी पूर्ति नहीं कर सकता ऐसे परिवार को गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करना पड़ता है।

Sapeksh garibi se abhipray vibhinn varg ke logon mein ,dusre deshon ki tulna mein ,Pai jaane wali nirdhanta se hai, jise Desh Rajya varg ka jivan star ,dusre Desh Rajya varg se niche paya jata hai .shapeksh roop se ve nirdhan Mane jaate Hain.

Nirpeksh garibi vah sthiti hai ,jismein koi vyakti jivan ke liye avashyak mulbhut avashyaktaon ki bhi purti nahin kar sakta aise Parivar ko garibi rekha se niche jivan yapan karna padta hai.

जनसंख्या संक्रमण सिद्धांत की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिए.

3 responses

आर्थिक वृद्धि और आर्थिक विकास में अंतर स्पष्ट करते हुए आर्थिक विकास को प्रभावित करने वाले घटकों की व्याख्या कीजिये.

3 responses

This content is neither created nor endorsed by Google. [Report Abuse](#) - [Terms of Service](#) - [Privacy Policy](#).

Google Forms





छः माहा पराक्षा (समाष्टि अर्थशास्त्र)

7 responses

[Publish analytics](#)

छात्र का पूरा नाम

7 responses

CHANDRAKUMAR

Tikeshwar Prasad Sinha

Terisa sori

Tilshwar Kumar sen

Himalay

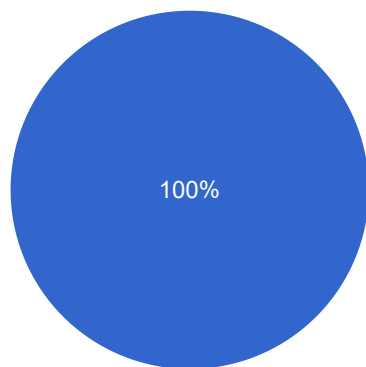
Yashwant pidda

Pradeep kuamr

कक्षा

7 responses

[Copy](#)



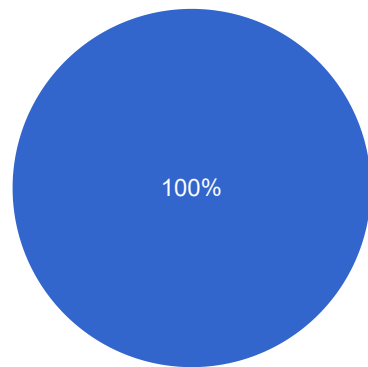
● बीए-भाग दो



"शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद= शुद्ध घरेलु उत्पाद + आयात-निर्यात का अंतर" यह सूत्र शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद की सही व्याख्या करता है?

 Copy

7 responses

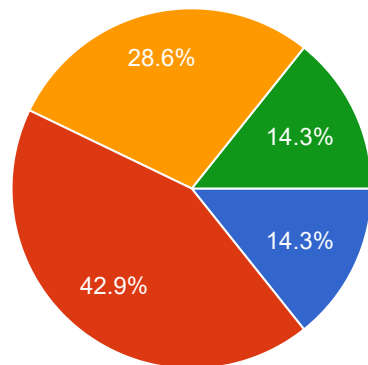


- हाँ
- नहीं

जीएनपी के सन्दर्भ में निम्नलिखित कौन सा कथन सही है?

 Copy

7 responses

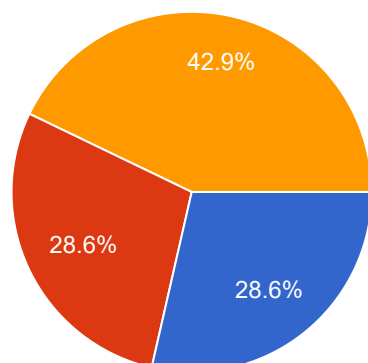


- अंतिम उत्पादन की गणना की जाती है.
- हस्तांतरित भुगतान को शामिल नहीं किया जाता है.
- केवल चालू वर्ष के उत्पादन को सम्मिलित किया जाता है
- उपरोक्त सभी.

कीन्स के रोजगार सिद्धांत में कुल मांग फलन निर्भर करता है

 Copy

7 responses



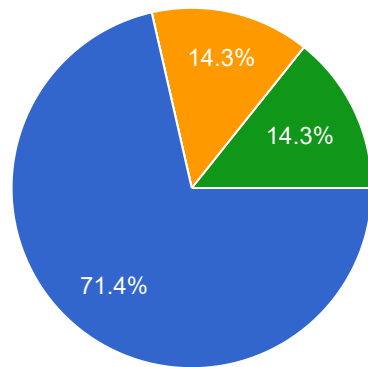
- उपभोग फलन और विनियोग फलन
- गुणक और त्वरक
- ब्याज की दर और मुद्रा की पूर्ति
- इनमे से कोई नहीं



"GENERAL THEORY OF EMPLOYMENT, INTEREST AND MONEY" किस अर्थशास्त्री के किताब का नाम है ?

 Copy

7 responses

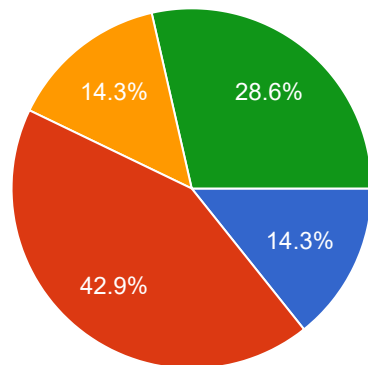


- कीन्स
- मार्शल
- पीगू
- इनमे से कोई नहीं

व्यापार चक्र का नवप्रवर्तन सिद्धांत किसका है?

 Copy

7 responses

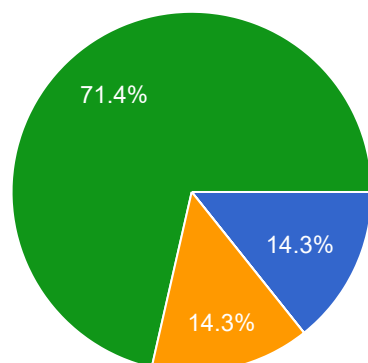


- कीन्स
- शुम्पीटर
- पीगू
- इनमे से कोई नहीं

राष्ट्रीय आय की गणना में क्या-क्या कठिनाइयाँ होती हैं?

 Copy

7 responses



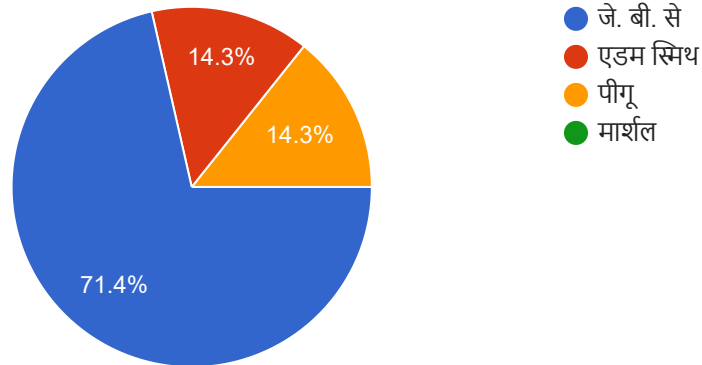
- दोहरी गणना
- अर्थव्यवस्था में अमौद्रिक क्षेत्र
- गैर-कानूनी रूप से अर्जित आय
- उपर्युक्त सभी



"पूर्ति स्वयं अपनी माँग पैदा करती है" - यह किसका कथन है?

 Copy

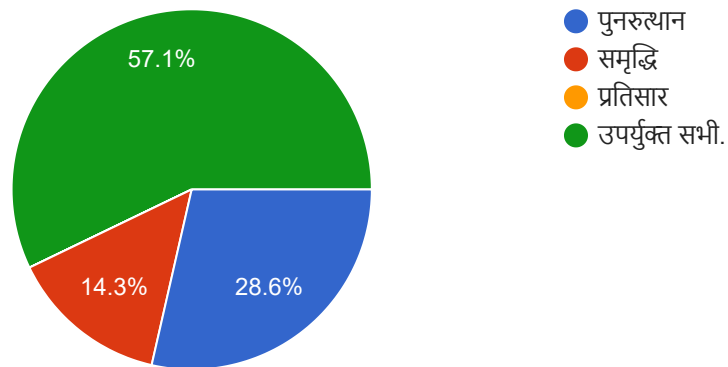
7 responses



व्यापार चक्र की अवस्थाएं हैं

 Copy

7 responses



गुणक में रिसाव के कारण क्या-क्या हैं?

7 responses

व्यवहार में अनेक कारण ऐसे होते हैं जो प्रारम्भिक विनियोग में वृद्धि के परिणाम स्वरूप कुल आय में होने वाली कई गुना वृद्धि में बाधा उत्पन्न करते हैं, इन्हें गुणक के रिसाव कहा जाता है। गुणक रिसाव के कारण - 1. व्यक्ति अपनी बढ़ी आय के एक भाग से पुराने का भुगतान कर देते हैं।

(Ans)

व्यवहार में अनेक कारण ऐसे होते हैं जो प्रारम्भिक विनियोग में वृद्धि के परिणाम स्वरूप कुल आय में होने वाली कई गुना वृद्धि में बाधा उत्पन्न करते हैं, इन्हें गुणक के रिसाव कहा जाता है। गुणक रिसाव के कारण - 1. व्यक्ति अपनी बढ़ी आय के एक भाग से पुराने का भुगतान कर देते हैं।

व्यवहार में अनेक कारण ऐसे होते हैं जो प्रारम्भिक विनियोग में वृद्धि के परिणाम स्वरूप कुल आय में होने वाली कई गुना वृद्धि में बाधा उत्पन्न करते हैं, इन्हें गुणक के रिसाव कहा जाता है।

1. बचत- आय में हुई सम्पूर्ण वृद्धि उपभोग पर व्यय नहीं की जाती बल्कि उसके कुछ भाग को बचा लिया जाता है।
2. ऋण की अदायगी- आय की नवीन वृद्धि का कुछ अंश पुराने ऋणों के भुगतान में व्यय हो जाता है।

1. व्यक्ति अपने बढ़ी आय का एक भाग से पुराने का भुगतान कर देता है।
2. वही आए का एक हिस्सा निष्क्रिय खातों में जमा कर दिया जाता है।
3. आय वृद्धि के एक भाग के आयतित वस्तुओं के उपभोग पर व्यय कर दिया जाता है।
4. मुद्रास्फीति के कारण व्यक्तियों की वास्तविक आय कम हो जाती है।

गुणक में रिसाव के निम्न हैं

- 1_ व्यक्ति अपनी बढ़ी आय के एक भाग से पुराने का भुगतान कर देते हैं
- 2_ बहीआय का एक हिस्सा nishkrya बैंक खातों में जमा कर दिया जाता है
- 3_ आय vidhi के एक भाग के आयतित वस्तुओं के उपभोग पर व्यय कर दिया जाता है
- 4_ mudrasfity के कारण व्यक्तियों की vastvik आय कम हो जाती है

(1) (बचत) आय में हुई संपूर्ण वृद्धि उपभोग व्यय नहीं की जाती बल्कि उसके कुछ भाग को बचा लिया जाता है जिसके कारण गुणक का परिणाम सीमित हो जाती है

(2) (ऋण की आदएगी) आय की नवीन वृद्धि का कुछ अंश पुराने ऋण के भुगतान में व्यय हो जाता है।



व्यापार चक्र के क्या-क्या कारण हैं ?

7 responses

सैम्युअलसन का व्यापार चक्र का सिद्धान्त अर्थव्यवस्था में चक्रीय परिवर्तन गुणक तथा त्वरक की अंतर्क्रियाओं का परिणाम है। हिक्स का व्यापार चक्र का सिद्धान्त निवेश में परिवर्तन के कारण गुणक तथा त्वरक में अन्तर्व्यवहार को बताता है जिसके कारण चक्रीय उतार-चढ़ाव होते हैं।

(Ans)

व्यापार चक्र अर्थवा आर्थिक चक्र बाजार अर्थव्यवस्था में एक वर्ष अथवा कुछ माह में उत्पादन, व्यापार और सम्बंधित गतिविधि को सन्दर्भित करने वाला एक शब्द है। ... व्यापारिक-चक्र के चढ़ाव के दौरान ऊँची राष्ट्रीय आय, अधिक उत्पादन, अधिक रोज़गार तथा ऊँची कीमतें पाई जाती हैं।

सैम्युअलसन का व्यापार चक्र का सिद्धांत अर्थव्यवस्था में चक्रित परिवर्तन गुणक तथा त्वरक की अंत क्रियाओं का परिणाम है। हिक्स का व्यापार चक्र का सिद्धांत निवेश में परिवर्तन के कारण गुणक तथा त्वरक में अंत व्यवहार को बताता है जिसके कारण चक्रीय उतार-चढ़ाव होते हैं।

व्यापार चक्र में उतारो एवं चढ़ाव को ही व्यापार चक्र के मुख्य कारण है।

व्यापार चक्र के निम्न कारण है

एक उद्योग के भीतर या यहा तक कि सामान्य रूप से arthvyavastha मे व्यपार् चक्र कई करणों से आ सकते है। एक चक्र के अंत और एक नई कि शुरुआत कि आसंका एक कंपनी कि वित्तीय भलाई के लिए बहुत आवश्यक है,

- (1) (आकस्मि में परिवर्तन पैदा करने वाले कारण) ये परिवर्तन आकस्मि में होते हैं एवं इनकी कोई भविष्यवाणी नहीं की जा सकती यह परिवर्तन अकाल, बाढ़, भूकंप, आदि कारणे से उत्पन्न होते हैं।
- (2) (मौसमी परिवर्तन)कुछ मौसमी तत्वों के कारण भी अर्थव्यवस्था का संतुलन बिगड़ जाता है वह मांग पूर्ति में भारी परिवर्तन होते हैं।



गुणक क्या है?

7 responses

गुणक से आप क्या समझते हैं? उत्तर: आय में परिवर्तन से निवेश आय में परिवर्तन का अनुपात गुणक कहलाता है अर्थात् गुणक की अवधारणा आय उत्पादन व रोजगार के सिद्धान्त के लिए महत्वपूर्ण घटक है। यह प्रारम्भिक निवेश और इसके परिणामस्वरूप आय में होने वाली वृद्धि के बीच सम्बन्ध बताता है।

(Ans)

आय में परिवर्तन से निवेश आय में परिवर्तन का अनुपात गुणक कहलाता है अर्थात् गुणक की अवधारणा आय उत्पादन व रोजगार के सिद्धान्त के लिए महत्वपूर्ण घटक है। यह प्रारम्भिक निवेश और इसके परिणामस्वरूप आय में होने वाली वृद्धि के बीच सम्बन्ध बताता है।

आधुनिक आय तथा रोजगार के सिद्धांत में गुणक के सिद्धांत का महत्वपूर्ण स्थान है। गुणक का सिद्धांत सर्वप्रथम एफ. ए. काहन ने प्रस्तुत किया था, परंतु कींस ने इसको अधिक विकसित और विस्तृत किया। वह गुणक कहलाता है।

गुणांक एक गुणता कारक होता है जो किसी अनुनादी परिपथ के अनुनाद तीक्ष्णता को व्यक्त करता है।

- (1) किन्से का गुणक के सिद्धांत समय अन्तराल की अपेक्षा करता है
- (2) उपभोक्ता व्यय ये वृद्धि के नियोग समय अन्तर्गत की अपेक्षा
- (3) पो गार्डन के अनुसार गुणक सिद्धांत की एकड़ कमजोर है यह कि यह उपभोग पर समस्त जोड़ देता है

वह राशि या संख्या जिसमे दूसरी राशि या संख्या को गुना किया जाता है Adhyapak जी छात्रों को गुणक और गुणनफल के बारे में बता रहे हैं।

आधुनिक आय तथा रोजगार के सिद्धांत में गुणक के सिद्धांत का महत्वपूर्ण स्थान है। गुणक के सिद्धांत सर्वप्रथम (F.A.kahan) ने प्रस्तुत किया था परंतु किंस ने इसको अधिक विकसित और विस्तृत किया। काहन गुणांक रोजगार कहलाता है



उपभोग फलन क्या है?

7 responses

उपभोग फलन, अर्थशास्त्र में, उपभोक्ता खर्च और इसे निर्धारित करने वाले विभिन्न कारकों के बीच संबंध। घरेलू या पारिवारिक स्तर पर, इन कारकों में आय, धन, भविष्य की आय या धन के स्तर और जोखिम, ब्याज दरों, आयु, शिक्षा और परिवार के आकार के बारे में अपेक्षाएं शामिल हो सकती हैं

(Ans)

उपभोग फलन को परिभाषित करते हुए ने कहा है कि 'उपभोग फलन यह बतलाता है कि उपभोक्ता आय के प्रत्येक सम्भव स्तर पर उपभोग की वस्तुओं पर कितना खर्च करना चाहेंगे। Page 3 का कहना है कि "उपभोग क्रिया यह बताती है कि उपभोक्ता आय के प्रत्येक सम्भव स्तर पर उपभोग पदार्थों और सेवाओं पर कितना व्यय करना चाहेंगे।

आय के भिन्न-भिन्न स्तरों पर उपभोग पर कितना- कितना व्यय किया जायेगा तो यह उपभोग प्रवृत्ति कहीं जायेगी। संक्षेप में, "उपभोग और आय के संबंध के ही उपभोग प्रवृत्ति या उपभोग फलन कहते हैं।

उपभोग फलन यह बताता है कि उपभोक्ता आय के प्रत्येक संभव स्तर पर उपभोग की वस्तु पर कितना खर्च करना चाहेगा।

उपभोक्ता

उपभोक् फलन एक क्रिया है जिसके द्वारा अपनी pratyksh santusti के लिए वस्तुओं और सेवाओं का उपभोक् किया जाता है और इसकी upyogita का मूल्य को उपभोक्ता द्वारा चुकाया जाता है

उपभोग प्रवृत्ति की धारण को समझने के लिए हमारे कुल उपभोग शब्द को समझना आवश्यक है। अर्थव्यवस्था की कुल निश्चित आय में से लोग अपनी इच्छाओं की पूर्ति हेतु वस्तुओं और सेवाओं को खरीदने के लिए मुद्रा कि जो राशि वह करते हैं उसे कुल उपभोग कहते हैं।

कीन्स के रोजगार सिद्धांत की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिये.

6 responses

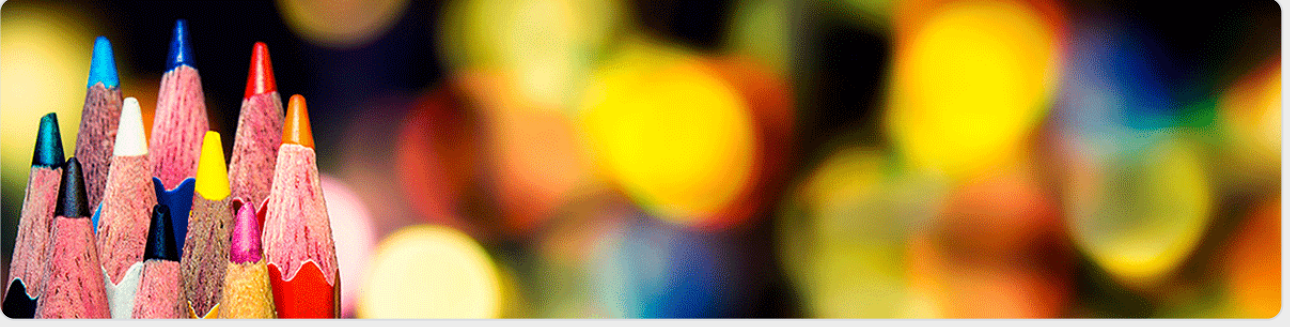
राष्ट्रीय आय को परिभाषित करते हुए इसके विभिन्न अवधारणों की व्याख्या कीजिये.

7 responses

This content is neither created nor endorsed by Google. [Report Abuse](#) - [Terms of Service](#) - [Privacy Policy](#).

Google Forms





छ: माहा पराक्षा (मुद्रा, बाकग एव राजस्व)

6 responses

[Publish analytics](#)

छात्र का पूरा नाम

6 responses

CHANDRAKUMAR

Tikeshwar Prasad Sinha

Tilshwar Kumar sen

Terisa sori

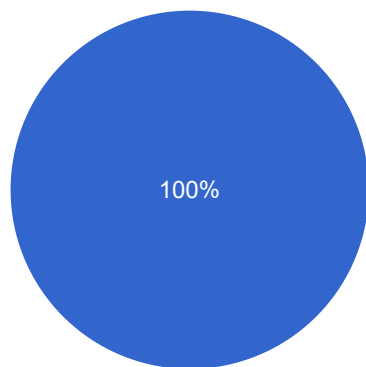
Pradeep kuamr

Himalay

कक्षा

6 responses

[Copy](#)



● बीए-भाग दो

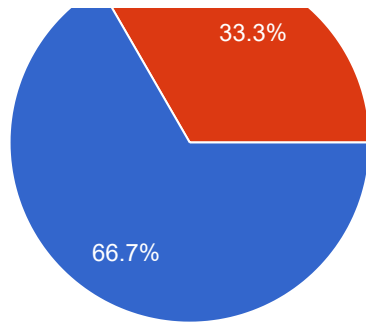
मुद्रा के मूल्य का क्या अर्थ है?

6 responses

[Copy](#)

● मुद्रा की क्रय शक्ति.

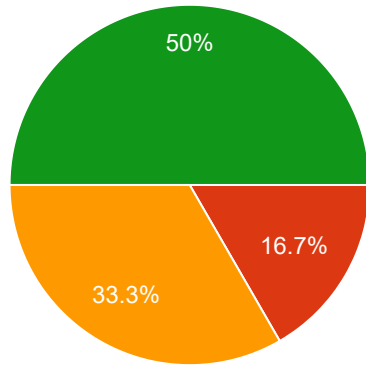




निम्नलिखित अर्थशास्त्रियों में कौन अर्थशास्त्री कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से सम्बंधित है?

Copy

6 responses

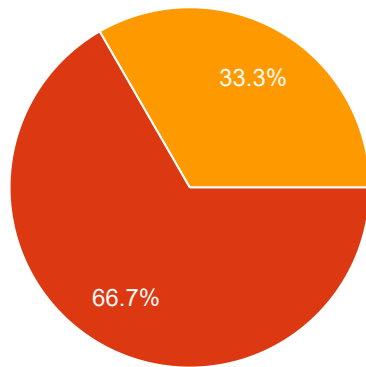


- डाल्टन
- मार्शल
- फिशर
- इनमे से कोई नहीं.

व्यापारिक बैंक के सन्दर्भ में क्या सही है?

Copy

6 responses

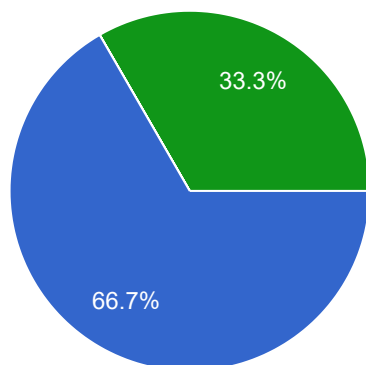


- व्यापारिक बैंक मुद्रा का निर्गमन करता है.
- व्यापारिक बैंक जमाएं स्वीकार करता है.
- व्यापारिक बैंक मौद्रिक नीति जारी करते हैं.
- इनमें से कोई नहीं.

भारतीय रिज़र्व बैंक की स्थापना कब हुई?

Copy

6 responses



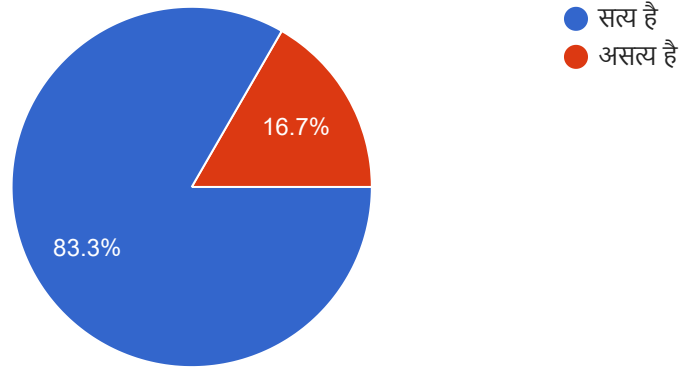
- 01 अप्रैल, 1935
- 01 अप्रैल, 1949
- 01 अप्रैल, 1947
- इनमें से कोई नहीं.



"भारतीय रिज़र्व बैंक सरकार का बैंकर है" यह कथन

 Copy

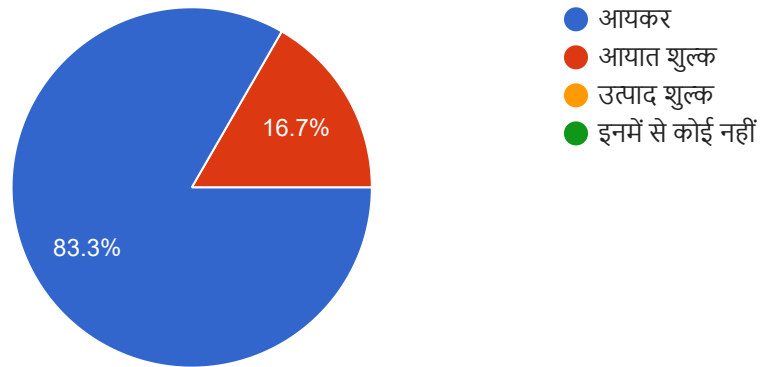
6 responses



निम्नलिखित में से क्या प्रत्यक्ष कर है?

 Copy

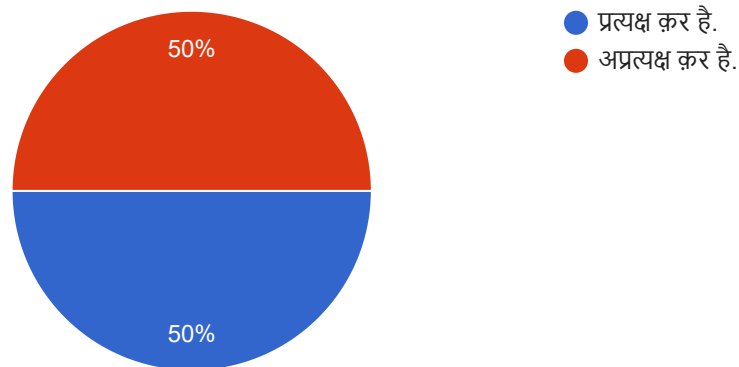
6 responses



वस्तु एवं सेवा कर (GST)

 Copy

6 responses



गेशम के नियम की संक्षिप्त व्याख्या कीजिये.

6 responses

गेशम का नियम मानव स्वभाव की इस प्रवृत्ति पर आधारित है कि व्यक्ति अच्छी वस्तुओं को अपने उपभोग या संचय लिए रखना चाहता है और घटिया निम्न कोटि वस्तुओं को अन्य व्यक्तियों को देना चाहता है

(Ans)

यदि एक ही धातु के सिक्के एक ही अंकित मूल्य के किंतु विभिन्न तौल एवं धात्विक गुणधर्म के एक साथ ही प्रचलन में रहते हैं, बुरा सिक्का अच्छे सिक्के को प्रचलन से निकाल बाहर करता है पर अच्छा कभी भी बुरे को प्रचलन से निकाल बाहर नहीं कर सकता।"

यदि एक ही धातु के सिक्के एक ही अंकित मूल्य के किंतु विभिन्न तौल एवं धात्विक गुणधर्म के एक साथ ही प्रचलन में रहते हैं, बुरा सिक्का अच्छे सिक्के को प्रचलन से निकाल बाहर करता है पर अच्छा कभी भी बुरे को प्रचलन से निकाल बाहर नहीं कर सकता।

'गेशम का नियम' मानव- स्वभाव की इस प्रवृत्ति पर आधारित हैं कि व्यक्ति अच्छी वस्तुओं को अपने उपभोग तथा संचय के लिए रखना चाहता है और घटिया तथा निम्न कोटि की वस्तुओं को अन्य व्यक्तियों को देना चाहता हैं। गेशम के नियम की व्याख्या इस प्रकार की जाती है, "खराब मुद्रा अच्छी मुद्रा को चलन से बाहर निकाल देने की प्रवृत्ति रखती हैं।" और अधिक स्पष्ट शब्दों में गेशम ने इस नियम की व्याख्या इस प्रकार की "अन्य बातें समान रहने पर जब किसी देश में दो या दो से अधिक प्रकार की मुद्राएँ एक ही समय में चलन में होती हैं तो बुरी मुद्रा अच्छी मुद्रा को चलन से बाहर निकाल देती हैं।

इतिहास प्रसिद्ध गेशम का नियम मानव स्वभाव की इस प्रकृति पर आधारित है कि व्यक्ति अच्छी वस्तुओं को अपने भोग तथा संचार के लिए रखना चाहता है और घटिया तथा निम्न कोटि की वस्तुओं को अन्य व्यक्तियों को देना चाहता

इतिहास प्रसिद्ध गेशम का मानव स्वभाव की इस प्रकृति पर आधारित है व्यक्ति अच्छी वस्तुओं को अपने भोग तथा संचार के लिए रखना चाहता है और पटिया तथा निम्न कोटि की वस्तुओं को अन्य व्यक्तियों को देना चाहता है



व्यापारिक बैंक से आप क्या समझते हैं?

6 responses

वाणिज्य बैंक (कॉमर्शियल बैंक) उन बैंकों को कहते हैं जो धन जमा करने, व्यवसाय के लिये ऋण देने जैसी सेवाएँ प्रदान करते हैं। ... व्यापारिक बैंक लोगों के रुपये को जमा के रूप में स्वीकार करती है तथा जब लोगों को मुद्रा की जरूरत होती है तो उन्हें ऋण के रूप में उधार भी देती है।

(Ans)

वाणिज्य बैंक उन बैंकों को कहते हैं जो धन जमा करने, व्यवसाय के लिये ऋण देने जैसी सेवाएँ प्रदान करते हैं। व्यापारिक बैंक लोगों के रुपये को जमा के रूप में स्वीकार करती है तथा जब लोगों को मुद्रा की जरूरत होती है तो उन्हें ऋण के रूप में उधार भी देती है।

व्यापारिक बैंक लोगों के रुपए को जमा के रूप में स्वीकार करती है तथा जब लोगों को मुद्रा की जरूरत होती है तो उन्हें ऋण के रूप में उतार देती है।

वे बैंक जो सामान्य बैंकिंग कार्य करते हैं व्यापारिक बैंक कहलाते हैं। ये बैंक सामान्यतः व्यापार का ही अर्थ प्रबंधन करते हैं, अतः इन्हें व्यापारिक बैंक कहा जाता है। इन बैंकों की पूंजी अनेक अंशों में विभाजित होती है और ये अंश विभिन्न व्यक्तियों या संस्थाओं द्वारा क्रय किये हुए होते हैं। ये बैंक व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए अल्पकालीन ऋणों की व्यवस्था करते हैं। आधुनिक बैंकों से तात्पर्य व्यावसायिक बैंकों से ही है।

वे बैंक जो सामान्य बैंकिंग कार्य करते हैं व्यापारी के वाणिज्यिक बैंक कहलाते हैं यह बैंक सामान्यतः व्यापार का ही अर्थ प्रबंधन करते हैं तथा इन्हें व्यापारिक बैंक कहा जाता है।

वे बैंक सामान्य बैंकिंग कार्य करते हैं व्यक्तियों के वाणिज्यिक बैंक कहलाते हैं बैंक सामान्य व्यापार का ही प्रबंधन करते हैं तथा इन्हें व्यापारिक बैंक कहा जाता है।



मौद्रिक नीति के उपकरण क्या-क्या हैं?

6 responses

रेपो रेट (रीपो रेट, रीपरचेज़ रेट -Repo Rate, Repurchase Rate)
 रिवर्स रेपो रेट (रिवर्स रीपरचेज़ रेट, - Reverse Repo Rate, Reverse Repurchase Rate)
 नकद आरक्षी अनुपात (कैश रिज़र्व रेशो, सी आर आर - Cash Reserve Ratio, CRR)
 ओपन मार्केट ऑपरेशन खुले बाजार मै क्रय विक्रय (ओ एम ओ, Open Market Operations)

(Ans)

मौद्रिक नीति से अभिप्राय किसी भी राष्ट्र के केंद्रीय बैंक द्वारा विभिन्न उपकरणों जैसे कैश रिज़र्व रेशो (CRR), वैधानिक तरलता अनुपात(SLR-Statutory liquidity ratio), बैंक दर, रेपो दर, रिवर्स रेपो दर आदि के उपयोग से मुद्रा और ऋण की उपलब्धता पर नियंत्रण स्थापित करना है।

मौद्रिक नीति के उपकरण पहला प्रत्यक्ष कर दूसरा अप्रत्यक्ष कर होता है।

मौद्रिक नीति सरकार तथा केन्द्रीय बैंक की उस नियन्त्रण नीति को कहा जाता है, जिसके अंतर्गत कुछ निश्चित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मुद्रा की मात्रा, उसकी लागत अर्थात् ब्याज- दर तथा उसके उपयोग को नियन्त्रित करने के उपाय किये जाते हैं। लेकिन मौद्रिक नीति का यह संकुचित अर्थ है। मौद्रिक नीति के अन्तर्गत मुद्रा तथा लागत आदि को प्रभावित करने वाले मौद्रिक उपायों के अतिरिक्त ऐसी अमौद्रिक निधियां और उपाय भी सम्मिलित किये जाते हैं, जिसका प्रभाव देश में स्थिति पर पड़ता है।

- (1) (विनियम स्थिरता)- मौद्रिक नीति का उद्देश्य विनियम दर में स्थिरता बनाए रखना है। विनियम स्थिरता का आशय विनियम दर को स्थाई रखने से है
- (2) (विदेशी पूंजी पतियों को अविश्वास) विनियम दर में भारी उच्चावच से विदेशी पूंजी हो पतियों का विश्वास उठ जाता है।

- (1) विनियम स्थिरता मौद्रिक नीति का उद्देश्य विनियम दर में स्थिरता बनाए रखना है विनियम स्थिरता का आशय विनियम दर को स्थाई रखने से है
- (2) विदेशी पूंजी के आविश्वास विनियम दर में भारी उच्चवत से विदेशी पूंजी हो पतियों का विश्वास आ जाता है



सार्वजनिक आय के स्रोत क्या-क्या हैं?

6 responses

सार्वजनिक आय – सरकार को विभिन्न प्रकार के स्रोतों से जो आय प्राप्त होती है वह सार्वजनिक आय कहलाती है। सार्वजनिक आय के अन्तर्गत कर, शुल्क, कीमत, अर्थदण्ड, सार्वजनिक उपक्रमों से प्राप्त आय, सरकारी एवं गैर-सरकारी बचते आदि आते हैं।

(Ans)

सार्वजनिक आय क्या है ? - सार्वजनिक व्यय (पब्लिक एक्सपेन्डीचर) से अभिप्राय उन सब खर्चों से है जिन्हें किसी देश की केन्द्रीय, राज्य तथा स्थानीय सरकारें अपने प्रशासन, सामाजिक कल्याण, आर्थिक विकास तथा अन्य देशों की सहायता के लिए करती है।

सर्वजनिक आय -सरकार को विभिन्न प्रकार के स्रोतों से जो आय प्राप्त होती है वहीं सार्वजनिक कार्य कहलाती है। सार्वजनिक आय के अंतर्गत कर ,शुल्क ,कीमत, अर्थदंड, तथा सार्वजनिक उपकरणों से प्राप्त आय, सरकारी तथा गैर सरकारी बचते आदि हैं।

सार्वजनिक आय- सरकार को विभिन्न प्रकार के स्रोतों से जो आय प्राप्त होती है वह सार्वजनिक आय कहलाती है। सार्वजनिक आय के अन्तर्गत कर, शुल्क, कीमत, अर्थात्, सार्वजनिक उपक्रमों से प्राप्त आय, सरकारी एवं गैर-सरकारी बचते आदि आते हैं।

(1) एडम स्मिथ- के अनुसार राज्य की आय के स्वभाव एवं सिद्धांतों की छान बिन को राजस्व कहते हैं।
(2) श्रीमती उर्सला हिक्स - के अनुसार राजस्व का मुख्य विषय उन टांगों की परीक्षा एवं मूल्यांकन करना है जिसके द्वारा शासन संस्थाए आवश्यकताओं की सामूहिक संतुष्टि के लिए व्यवस्था करती है।

(1) विनिमय स्थिरता मोद्रिक नीति का उद्देश्य विनिमय दर में स्थित बनाए रखना है विनिमय स्थिरता का आशय विनिमय दर को स्थिर रखने से है
(2) विदेशी पूंजी पतियों को आविच्चास विनिमय दर में भारी उच्चवत से विदेशी पूंजी हो पतियों का विश्वास आ जाता है

अधिकतम सामाजिक लाभ के सिद्धांत की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिए.

6 responses

केंद्रीय बैंक से आप क्या समझते हैं? केंद्रीय बैंक के कार्यों की व्याख्या कीजिये.

6 responses

करारोपण के प्रभावों की व्याख्या कीजिये.

6 responses



This content is neither created nor endorsed by Google. [Report Abuse](#) - [Terms of Service](#) - [Privacy Policy](#).

Google Forms



पंचम इकाई परीक्षा (भारतीय अर्थव्यवस्था)

परीक्षा तिथि : 08/05/2021

समय : प्रातः 10:30 से 11:30 बजे तक

अधिकतम अंक :15

निर्देश :

(1) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं.

(2) सभी विद्यार्थियों का परीक्षा में सम्मिलित होना अनिवार्य है.

(3) अनुपस्थिति के कारण भविष्य में किसी भी प्रकार की समस्या(आंतरिक परीक्षाओं के आधार पर वार्षिक परीक्षा का परिणाम) होने पर, इसकी समस्त जिम्मेदारी सम्बंधित विद्यार्थी की होगी.

(4) इकाई परीक्षा 100% ऑनलाइन माध्यम से है. किसी और माध्यम से इकाई परीक्षा नहीं होगी.

***Required**

1. छात्र का पूरा नाम *

2. कक्षा *

Mark only one oval.

बीए-भाग एक

3. मौद्रिक नीति का क्या अर्थ है? *

5 points

उत्तर संक्षेप (4-5 पंक्ति) में टाइप करके लिखें.

4. मौद्रिक नीति का उद्देश्य है/हैं? *

2 points

Mark only one oval.

- आर्थिक विकास
- तटस्थ मुद्रा नीति
- पूर्ण रोजगार
- उपर्युक्त सभी

5. राजकोषीय नीति के उपकरण है/हैं? *

2 points

Mark only one oval.

- बजट नीति
- सार्वजनिक व्यय
- करारोपण
- उपर्युक्त सभी

6. राष्ट्रीय आय की गणना की कठिनाई/कठिनाईयां है/हैं? *

2 points

Mark only one oval.

- अमौद्रिक क्षेत्र
- आर्थिक असमानता
- मंदी की स्थिति
- इनमें से कोई नहीं

7. भारत का भुगतान संतुलन कब भारत के पक्ष में था? *

2 points

Mark only one oval.

- 1972-73 एवं 1976-77
- 1990-91 एवं 1995-96
- 2001-02 एवं 2006-07
- इनमें से कोई नहीं

8. वर्तमान में भारत के कुल आयात में सबसे ज्यादा भाग किसका है? *

2 points

Mark only one oval.

- खनिज तेल
- आर्गेनिक रसायन
- फार्मास्यूटिकल उत्पाद
- इनमें से कोई नहीं

9. Submission ID (skip this field) *

⚠ DO NOT EDIT this field or your time will not be recorded.

This content is neither created nor endorsed by Google.

Google Forms

छःमाही परीक्षा (ऑनलाईन)

कक्षा : बीए—भाग एक ,विषय : अर्थशास्त्र

(शैक्षणिक सत्र : 2020—21)

शास. शहीद गेंदसिंह महाविद्यालय, चारामा. जिला—कांकेर (छग)

छःमाहा पराक्षा (सूक्ष्म अर्थशास्त्र)

37 responses

[Publish analytics](#)



छात्र का पूरा नाम

37 responses

Divya dewangan

Uma sahu

Chandni Sinha

DURGESHWARI SAHU

Anita Korram

SAHIL KUMAR MARKAM

SUSHILA NISHAD

MANISH KUMAR DEWANGAN

Deepak Kumar sahu

BHOJBALA JAIN

SAHIL NETAM

CHANDRAHAS MARKAM

Tejkumar

TULSI DEWANGAN

Satish yadav

Aarti Taram



Savita sanu

Lomeshwari Sahu

Thaneshwari sahu

DEVIKA PATEL

Harsh Dewangan

PRIYA MAHLA

Bhagwat prasad taram

HEMLATA SALAM

Chhabila gajendra

Khomendra Kumar

Gendlal chakradhari

SEEMA ACHLE

Kaleshwar sahu

varsha netam

AARTI YADAV

NIRAJ PATEL

JITENDRA VERMA

Yashoda Dewangan

Madhuri sonwani

Manki

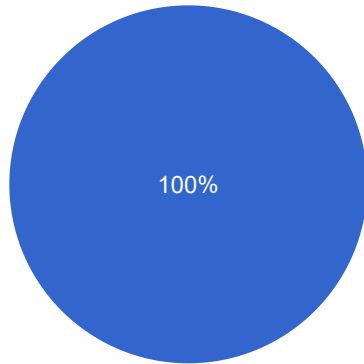
Kajal,sahu



कक्षा

Copy

37 responses

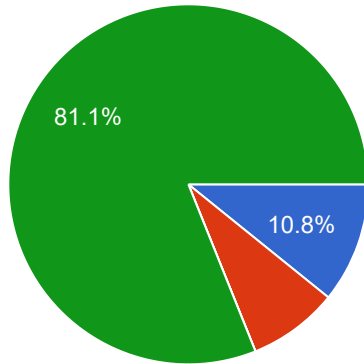


● बीए-भाग एक

बाजार के लिए आवश्यक तत्व है/हैं

Copy

37 responses



● क्षेत्र

● एक वस्तु

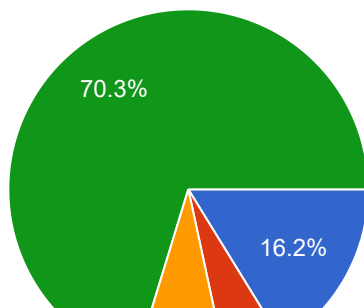
● स्वतंत्र प्रतियोगिता

● उपर्युक्त सभी

पूर्ण प्रतियोगिता की मान्यताएं क्या-क्या है / हैं?

Copy

37 responses



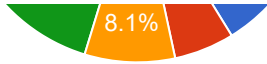
● वस्तुएँ समरूप होती हैं.

● वस्तु कीमत का निर्धारण उद्योग के द्वारा किया जाता है.

● फर्मों का उद्योग में प्रवेश तथा बहिर्गमन पर कोई प्रतिबन्ध नहीं होता है.

● उपर्युक्त सभी

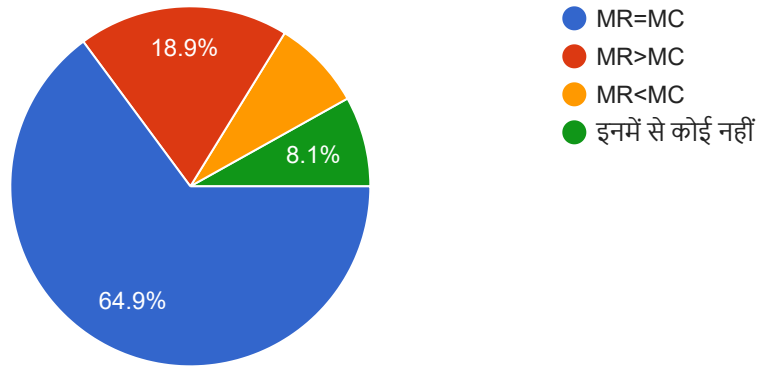




पूर्ण प्रतियोगिता में एक फर्म के अधिकतम लाभ या संतुलन की शर्त क्या है?

Copy

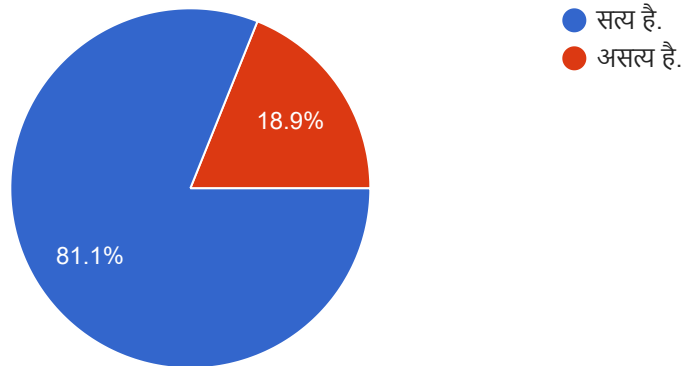
37 responses



"तरलता पसंदगी का क्या अर्थ है मुद्रा को अपने पास नकद रखना" यह कथन

Copy

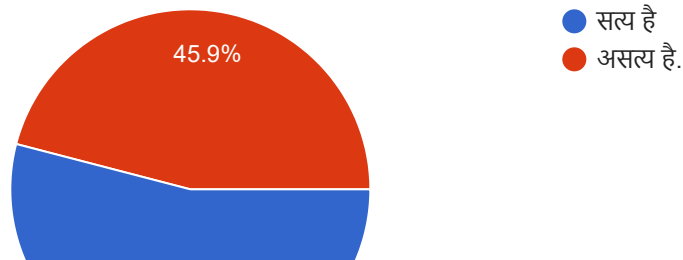
37 responses



"एकाधिकार के अंतर्गत दीर्घकाल में एक एकाधिकारी हमेशा असामान्य लाभ प्राप्त करता है" -यह कथन

Copy

37 responses



54.1%

बाजार का अर्थ स्पष्ट कीजिये.

37 responses

बाजार” शब्द से तात्पर्य एक ऐसे स्थान या केन्द्र से होता है, जहाँ पर वस्तु के क्रेता और विक्रेता भौतिक रूप से उपस्थित होकर क्रय-विक्रय का कार्य करते हैं। उदाहरण के लिए शहरों में स्थापित व्यापारिक केन्द्र जैसे कपड़ा बाजार या गाँवों में लगने वाले हाट। अर्थशास्त्र में बाजार शब्द का अर्थ सामान्य अर्थ से भिन्न होता है। अर्थशास्त्र में बाजार शब्द का तात्पर्य उस सम्पूर्ण क्षेत्र से होता है, जहाँ कि वस्तु के क्रेता एवं विक्रेता आपस में और परस्पर प्रतिस्पर्धा के द्वारा उस वस्तु का एक ही मूल्य बने रहने में योग देते हैं।

प्रो. ऐली के अनुसार: “बाजार से तात्पर्य उस सामान्य क्षेत्र से होता है, जहाँ पर किसी वस्तु विशेष के मूल्य को निर्धारित करने वाली शक्तियाँ क्रियाशील होती हैं।”

Ardh Shastra mein bajar ka Arth sthan Vishesh se na hokar use sampurn Kshetra Se hota hai Jahan per vastu Vishesh ki kharidi bikri ki jaati hai isliye main din Se a sampurna bajar mein vastu ka ek hi mulya hota hai bajar Shabd ka ashraha kisi sthan Vishesh se nahin hota hai Jahan vastuon kharidi AVN bikri ki jaati hai balki use samast Kshetra Se hota hai Jahan cretone vikretaon mein aapas mein main main aisi Swatantra pratiyogita hoti hai ki ki use samast Kshetra main main vastu ke mulya mein sigaretta AVN saralta se a ek honi ki pravritti Pai jaati hai.

Bajar ka arth va pribhasha aarthshastr me bajar ka arth sthan vishes se na hokar us sampudr kshetr se hota hai jha par vastu vishes ki khridi aur bikri ki jati hai.

बाजार शब्द की भिन्न-भिन्न अर्थशास्त्रियों के द्वारा भीम भीम परी भाषाओं को दी गई है इसके प्रमुख को परिभाषा ऊपर नीचे दिया गया है वाला कू नो (cournot)के अनुसार अर्थशास्त्र में बाजार शब्द का अर्थ किसी एक ऐसे स्थान विशेष से नहीं लगाया जाता है उस वस्तु का क्रय विक्रय किया जाता है वरन उस समस्त क्षेत्र से होता है जिससे वस्तु की समस्त नेताओं तथा विक्रेताओं के बीच इस प्रकार स्वतंत्र संपर्क होता है कि वस्तु की कीमत की प्रवृत्ति शीघ्रता वसंतम के समान होने की पाई जाती है प्रो. सीजी निक (prof sidgwick) के अनुसार बाजार व्यक्तियों के समूह को समुदाय को कहते हैं जिसके बीच इस प्रकार के प्रसारित वाणिज्य संबंध हो कि प्रत्येक व्यक्ति को सम्मत से इस बात का पूर्ण ज्ञान हो जाएगी दूसरे व्यक्ति समय-समय पर कुछ वस्तुओं व सेवाओं का विनिमय किन मूल्यों पर करती है बाजार की विशेषताएं पहला ए क्षेत्र दूसरा एक वस्तु तीसरा करता हूं एवं विक्रेता चौथा स्वतंत्र प्रतियोगिता पांचवा एक मूल्य

अर्थशास्त्र में बाजार शब्द का अर्थ किसी एक ऐसे स्थान विशेष के नहीं लगाया जाता है |जहां वस्तुओं का क्रय विक्रय किया जाता है वह समस्त क्षेत्र से होता है| जिसमें वस्तु के समस्त विक्रेताओं तथा विक्रेताओं के बीच किस प्रकार से संस्कृत संपर्क होता है |की वस्तु की कीमत की प्रवृत्ति शीघ्रता सुगमता से समान होने की पाई जाती है।

अर्थशास्त्र में बाजार शब्द के लिए किसी स्थान विशेष का होना आवश्यक नहीं है बल्कि अर्थशास्त्र में जिस क्षेत्र तक

वस्तुओं की मांग एवं पूर्ति होती है वह समस्त क्षेत्र उन वस्तुओं का बाजार कहलाता है दूसरे शब्दों में अर्थशास्त्र में बाजार का अर्थ उस समस्त क्षेत्र से होता है जिसमें उस वस्तु के क्रेता एवं विक्रेता फैले होते हैं तथा परस्पर प्रतियोगिता करते हैं वह बाजार कहलाती है।

सामान्य अर्थ में बाजार शब्द से तात्पर्य एक ऐसे स्थान या केंद्र से होता है जहां पर वस्तु के क्रेता और विक्रेता भौतिक रूप से उपस्थित होकर क्रय विक्रय का कार्य करते हैं। उदाहरण के लिए शहरों में स्थापित व्यापारिक केंद्र जैसे कपड़ा बाजार या गांव में लगने वाले हॉट । अर्थशास्त्र में बाजार शब्द का अर्थ सामान्य अर्थ से भिन्न होता है । अर्थशास्त्र में बाजार शब्द का तात्पर्य उस संपूर्ण क्षेत्र से होता है जहां की वस्तु के क्रेता एवं विक्रेता आपस में और परस्पर प्रतिस्पर्धा के द्वारा उस वस्तु का एक ही मूल्य बने रहने में योग्य देते हैं।

अर्थशास्त्र में बाजार शब्द के लिए किसी स्थान विशेष का होना आवश्यक नहीं बल्कि अर्थशास्त्र में जिस क्षेत्र तक वस्तुओं की मांग एवं पूर्ति होती है वह समस्त क्षेत्र उन वस्तुओं का बाजार कहलाता है । दूसरे शब्दों में अर्थशास्त्र में बाजार का अर्थ उन समस्त क्षेत्र से होता है जिसने उस वस्तु के क्रेता विक्रेता पहले होते हैं तब रस पर प्रतियोगिता करते हैं।

Bajar ka tatpary us sthan se hai jha kreta aor wikreta wastua khridne aor bechne ke liye milte hai yh sthan ek ahata ho sakta hai ya ek mkan lekin arthsastra me bajar ka arth isse bhinn hai wrtman waigyanik yug me kreta apne ghar pr rahte huye wisw ke kisi bhi kone me wikreta se wstu ka kray wikray kr sakta hai atah arthsastra me bajar ka wistrit arth liya jata hai.

बाज़ार ऐसी जगह को कहते हैं जहाँ पर किसी भी चीज़ का व्यापार होता है। आम बाज़ार और खास चीज़ों के बाज़ार दोनों तरह के बाज़ार अस्तित्व में हैं। बाज़ार में कई बेचने वाले एक जगह पर होते हैं ताकि जो उन चीज़ों को खरीदना चाहें वे उन्हें आसानी से ढूँढ सकें। बाजार जहां पर वस्तुओं और सेवाओं का क्रय व विक्रय होता है उसे बाजार कहते हैं .

सामान्यतः बाजार का अर्थ उस स्थान से लगाया जाता है, जहाँ भौतिक रूप से उपस्थित क्रेताओं द्वारा वस्तुओं को खरीदा तथा बेचा जाता है। उदाहरण के लिए: सर्राफा बाजार में सोने-चाँदी का क्रय-विक्रय होता है, अनाज मण्डी में खाद्यान्नों का क्रय-विक्रय होता है तथा वस्त्र बाजार में वस्त्रों का क्रय-विक्रय होता है। अर्थशास्त्र के अंतर्गत बाजार शब्द से अभिप्राय उस समस्त क्षेत्र से है, जहाँ किसी वस्तु के क्रेता-विक्रेता आपस में स्वतन्त्रतापूर्वक प्रतिस्पर्द्धा करते हैं

बाजार का अर्थ:-

सामान्य अर्थ में "बाजार"शब्द से आशय ऐसे स्थान या केंद्र से होता है, जहां पर वस्तु के क्रेता व विक्रेता भौतिक रूप से उपस्थित होकर क्रय विक्रय का कार्य करते हैं।

उदाहरण के लिए शहरों में स्थापित व्यापारिक केंद्र जैसे कपड़ा बाजार या गांव में लगने वाले हाट।

अर्थशास्त्र में बाजार शब्द का तात्पर्य उस संपूर्ण क्षेत्र से होता है, जहां वस्तु के क्रेता और विक्रेता आपस में परस्पर प्रतिस्पर्धा के द्वारा उस वस्तु का एक ही मूल्य बने रहने में योग्य देते हैं।

प्रो. ऐली के अनुसार "बाजार से तात्पर्य उस सामान्य क्षेत्र से होता है, जहां पर किसी वस्तु विशेष के मूल्य को निर्धारित करने वाली शक्तियां क्रियाशील होती है।"

उत्तर: -- साधारण बोलचाल की भाषा में बाजार शब्द का प्रयोग उस स्थान से है! जहां पर वस्तु के क्रेता -विक्रेता भौतिक रूप से उपस्थित होकर वस्तुओं के क्रय -विक्रय का कार्य करते हैं!

अर्थशास्त्र में, -- बाजार शब्द का अभिप्राय उस संपूर्ण क्षेत्र से है! जहां पर किसी वस्तु के अनेक क्रेता विक्रेता होते हैं !

जिसमें मांग प्रतियोगिता होती है । और उसके संपूर्ण क्षेत्र में मांग व विक्रय का कार्य करते हैं।



।जनम स्वतंत्र प्रातयागता हाता ह !जार उसक फलस्वरूप क्रय संपूर्ण क्षेत्र म वस्तु का मूल्य समान हाता ह!

Samanya Arth Mein Bajar Shabd se Tat Par Ek aise hi sthaniya Kendra Se Hota Hai Jahan per vastu ke creta vikreta Bharti group se upsthit hokar Quikr ka Karya Karte Hain udaharan ke liye Shahar Mein sthapit vyaparik Kendra Jaise Kapda Bajar Gaon Mein lagne wale hath

उत्तर - बाजार शब्द का अर्थ

सामान्य अर्थ में "बाजार" शब्द से तात्पर्य एक ऐसे स्थान या केन्द्र से होता है, जहाँ पर वस्तु के क्रेता और विक्रेता

भौतिक रूप से उपस्थित होकर क्रय-विक्रय का कार्य करते हैं। उदाहरण के लिए शहरों में स्थापित व्यापारिक केन्द्र जैसे कपड़ा बाजार या गाँवों में लगने वाले हाट।

बाजार वह पद्धति है जिसके द्वारा विक्रेता और क्रेता एक - दुसरे के सम्पर्क में लाये जाते हैं इसके लिए एक निश्चित स्थान होना आवश्यक नहीं है।

बाजार का अर्थ व परिभाषा-

अर्थशास्त्र में बाजार का अर्थ स्थान विषय से ना होकर उस संपूर्ण क्षेत्र से होता है जहां पर वस्तु विशेष की खरीदी बिक्री की जाती है इस लेनदेन से संपूर्ण बाजार में वस्तु का एक ही मूल्य होता है प्रो.कूर्नो के शब्दों में बजाज शब्द से आशय किसी स्थान विशेष से नहीं होता है जहां वस्तु खरीदी एवं बिक्री की जाती है बल्कि उस समस्त क्षेत्र से होता जहां नेताओं एवं विक्रेताओं में आपस में ऐसी स्वतंत्रता प्रतियोगिता होती है कि उस समस्त क्षेत्र में वस्तु के मूल्य में शीघ्रता एवं सरलता से एक होने की प्रवृत्ति पाई जाती है।

साधारण बोलचाल में बाजार का तात्पर्य उस स्थान विशेष से है जहां क्रेता और विक्रेता खरीदने और बेचने के लिए मिलते हैं यह स्थान एक अहाता हो सकता है या एक मकान लेकिन अर्थशास्त्र जार का अर्थ इससे भिन्न है वर्तमान वैज्ञानिक युग में क्रेता अपने घर पर रहते हुए विश्व के किसी भी कोने में विक्रेता से वस्तु का क्रय विक्रय कर सकता है अतः अर्थशास्त्र में बाजार का विस्तृत अर्थ लिया जाता है इसके अनुसार किसी स्थान विशेष पर क्रेता व विक्रेता की सह एवं सदेह उपस्थिति आवश्यक नहीं है ये लोग डाक द्वारा भी संपर्क स्थापित कर सकते है अस्तु क्रेता और विक्रेता कहीं भी हो उनमें प्रतियोगिता होना एक आवश्यक बात है।

बाजार शब्द का अर्थ

सामान्य अर्थ में "बाजार" शब्द से तात्पर्य एक ऐसे स्थान या केन्द्र से होता है, जहाँ पर वस्तु के क्रेता और विक्रेता भौतिक रूप से उपस्थित होकर क्रय-विक्रय का कार्य करते हैं। उदाहरण के लिए शहरों में स्थापित व्यापारिक केन्द्र जैसे कपड़ा बाजार या गाँवों में लगने वाले हाट।

बाजार का अर्थ- अर्थशास्त्र में बाजार का आरती स्थान विशेष से ना होकर वह संपूर्ण क्षेत्र से होता है जहां पर वस्तु विशेष की खरीदी बिक्री की जाती है इस लेनदेन से संपूर्ण बाजार में वस्तु का है कि मूल्य होता है। प्रोफ़ेसर कुरनो के शब्द में बाजार शब्द से आशय किसी स्थान विशेष से नहीं होता है जहां वस्तुएं खरीदी एवं बिक्री की जाती है बल्कि उसे समस्त क्षेत्र से होता जहां क्रेता और एवं विक्रेताओं में आपस में ऐसी स्वतंत्र प्रतियोगिता होती है कि उस समस्त क्षेत्र में वस्तु के मूल्य में शीघ्रता एवं सरलता से एक होने की प्रवृत्ति पाई जाती है।

बाज़ार ऐसी जगह को कहते हैं जहाँ पर किसी भी चीज़ का व्यापार होता है। आम बाज़ार और खास चीज़ों के बाज़ार दोनों तरह के बाज़ार अस्तित्व में हैं। बाज़ार में कई बेचने वाले एक जगह पर होते हैं ताकि जो उन चीज़ों को खरीदना चाहें वे उन्हें आसानी से ढूँढ सकें। बाजार जहां पर वस्तुओं और सेवाओं का क्रय व विक्रय होता है उसे बाजार कहते हैं .

सामान्य अर्थों में बाजार उस स्थान विशेष को कहते है जहा क्रेता- विक्रेता एकत्रित होकर भौतिक रूप में वस्तुओं का क्रय -विक्रय करते हैं, किन्तु अर्थशास्त्र में बाजार का अर्थ उस सम्पूर्ण क्षेत्र से होता है जहां वस्तुओं के क्रेता-विक्रेता स्वतंत्र रूप से प्रतियोगिता दर्शाया निर्धारण कीमत पर क्रय-विक्रय करते हैं।



बाजार शब्द से तात्पर्य :- एक ऐसा स्थान या केंद्र से होता है जहां पर वस्तु के क्रेता और विक्रेता भौतिक रूप से उपस्थित होकर क्रय विक्रय का कार्य करते हैं। उदाहरण के लिए शहरों में स्थापित व्यापारिक केंद्र जैसी कपड़ा बाजार या गांव में लगने वाला हाट।

शास्त्र में बाजार का अर्थ स्थान विशेष सेना होकर उस संपूर्ण क्षेत्र से होता है, जहां पर वस्तु विशेष की खरीदी बिक्री की जाती है। इस लेनदेन से संपूर्ण बाजार में वस्तु का एक ही मूल्य होता है। प्रो. रूम कुनो केशब्दों में बाजार शब्द से आशय किसी स्थान विशेष से नहीं होता है, जहां वस्तुएं खरीदी एवं बिक्री की जाती है, बल्कि उस समाज क्षेत्र से होता है, जहां क्रेताओं एवं विक्रेताओं में आपस में ऐसी प्रतियोगिता होती है कि उस समस्त क्षेत्र में वस्तु के मूल्य में शीघ्रता एवं सरलता से एक होने की प्रकृति पाई जाती है।

समानता बाजार शब्द का अर्थ उस स्थान विशेष से लगाया जाता है जहां पर वस्तुओं के क्रेता तथा विक्रेताओं एकत्रित होकर अपनी अपनी वस्तुओं को बेचने तथा खरीदने का कार्य करते हैं जो कि अर्थशास्त्र के अंतर्गत हम जिस बाजार का अध्ययन करते हैं उसमें उपर्युक्त शर्तों का होना आवश्यक नहीं है इसके लिए एक स्थान पर क्रेताओं तथा विक्रेताओं का होना आवश्यक नहीं है उनके प्रतिनिधि वस्तु विशेष का सौदा तार तथा टेलीफोन से भी कर सकते हैं ऐसी दशा में भी वस्तुओं का क्रय विक्रय होता है बाजार के लिए यह भी आवश्यक नहीं है कि जिस स्थान पर वस्तु का स्टॉक होता है वहीं पर उसका क्रय विक्रय को अथवा उसकी वह डिलीवरी दी जाए प्रायः व्यवहार में वस्तु का स्टॉक किसी एक स्थान पर रहता है और उस वस्तु का सौदा किसी दूसरे स्थान पर किया जाता है और उसकी डिलीवरी किसी तीसरे स्थान पर दी जाती है तो इस क्रिया को भी अर्थशास्त्र में बाजार कहा जाता है व्यवहार में वस्तुओं के निर्माता विदेशों में भी करते हैं वस्तुएं अमेरिका इंग्लैंड जापान तक में फैली रहती है और उन वस्तुओं के ग्राहक भी अनेक अनेक देशों में होते हैं जो संचार साधनों से वस्तुओं का क्रय विक्रय कर लेते हैं तो ऐसी दशा में या पूरा क्षेत्र बाजार के अंतर्गत आ जाता है

कुनो के अनुसार अर्थशास्त्र में बाजार शब्द का अर्थ किसी एक ऐसे स्थान विशेष से नहीं लगाया जाता है जहां वस्तुओं का क्रय विक्रय किया जाता है वरन उस समस्त क्षेत्र से होता है जिसमें वस्तु के समस्त क्रेताओं तथा विक्रेताओं के बीच इस प्रकार स्वतंत्र संपर्क होता है कि वस्तु की कीमत की प्रवृत्ति शीघ्रता व सुगमता से समान होने की पाई जाती है

बाजार का सामान्य अर्थ बाजार शब्द से तात्पर्य एक ऐसे स्थान या केंद्र हैं जहां पर वस्तु के क्रेता और विक्रेता भौतिक रूप में उपस्थित होकर क्रय विक्रय करते हैं।

Arthsastri bajar sabd se arth kisi sthan vishes se nahi lete jaha par ki wastuoo ka kry vikry hota hy balki uss samast chetrh se lete jishme kretaye awam vikreta me iss prakar ka sawatntrata sambandh hota hy

बाजार का अर्थ व परिभाषा, अर्थशास्त्र में बाजार का अर्थ स्थान विशेष सेना होकर उस संपूर्ण क्षेत्र से होता है जहां पर वस्तु विशेष की खरीदी बिक्री की जाती है। इस लेनदेन से संपूर्ण बाजार में वस्तु का एक ही मूल्य होता है पुरुष के शब्दों में बाजार सबसे आशय किसी स्थान विशेष से नहीं होता है जहां वस्तुएं खरीदी एवं बिक्री की जाती है बल्कि उस समाज क्षेत्र से होता है जहां कृपा एवं विक्रेताओं में आपस में ऐसी स्वतंत्र प्रतियोगिता होती है कि उस समय क्षेत्र में वस्तु के मूल्य में शीघ्रता एवं सरलता से एक होने की प्रवृत्ति पाई जाती

बाजार शब्द से तात्पर्य एक ऐसे स्थान केंद्र से होता है जहां पर वस्तु के क्रेता और विक्रेता भौतिक रूप से उपस्थित होकर क्रय विक्रय का कार्य करते हैं उदाहरण के लिए शहरों में स्थापित व्यापारिक केंद्र जैसे कपड़ा बाजार या गांवों में लगने वाले हाट ।

बाजार का अर्थ-- बजाज शब्द की भिन्न-भिन्न अर्थशास्त्रियों के द्वारा भिन्न-भिन्न परिभाषाएं दी गई है इनमें से प्रमुख परिभाषाओं को नीचे दिया गया है. कुनो-- अर्थशास्त्र में बाजार शब्द का अर्थ किसी एक ऐसे स्थान विशेष से नहीं लगाया जाता है जहां वस्तुओं का क्रय विक्रय किया जाता है वरन उस समस्त क्षेत्र से होता है जिसमें वस्तु के समर्थक नेताओं तथा विक्रेताओं के बीच इस प्रकार स्वतंत्र संपर्क होता है कि वस्तु की कीमत की प्रवृत्ति शीघ्रता व सुगमता से



समान होने को पाई जाती है।

प्रोफेसर कुर्ली के अनुसार अर्थशास्त्र में बाजार शब्द का अर्थ किसी एक शब्द ऐसे स्थान विशेष से नहीं लगाया जाता है जहां वस्तुओं का क्रय विक्रय किया जाता है वरन् उस समस्त क्षेत्र से होता है जिसमें वस्तु के समस्त क्रेतों तथा विक्रेताओं के बीच इस प्रकार स्वतंत्र संपर्क होता है वस्तु की कीमत की प्रवृत्ति शीघ्रता एवं सुगमता से समान होने की पाई जाती है।

बाजार जहां पर वस्तुओं और सेवाओं का क्रय विक्रय होता है उसे बाजार कहते हैं।

बाजार से आशा है कि वह संपूर्ण क्षेत्र जहां एक निश्चित कीमत पर क्रेता और विक्रेताओं के बीच वस्तुओं का क्रय विक्रय किया जाता है।

बाजार के आवश्यक तत्व:-

- (1) एक क्षेत्र :- एक बाजार के लिए एक चित्र का होना अति आवश्यक है।
- (2) एक वस्तु:- बाजार में एक निश्चित वस्तुओं का होना अति आवश्यक होता है।
- (3) स्वतंत्र प्रतियोगिता :- बाजार में प्रीता और विक्रेताओं के बीच स्वतंत्र प्रतियोगिता होता है।
- (4) क्रेता एवं विक्रेता:-बाजार में वस्तुओं के क्रेता एवं विक्रेता का होना भी अति आवश्यक होता है।
- (5) निश्चित कीमत :- बाजार में वस्तुओं की एक निश्चित कीमत होनी चाहिए।

अर्थशास्त्र में जिस क्षेत्र तक वस्तुओं की मांग एवं पूर्ति होती है वह समस्त क्षेत्र उन वस्तुओं का बाजार कहलाता है

बाजार का अर्थ - अर्थशास्त्र में बाजार का अर्थ स्थान विशेष से न होकर उस सम्पूर्ण क्षेत्र से होता है, जहां पर वस्तु विशेष की खरीदी बिक्री की जाती है। इस लेन देन से सम्पूर्ण बाजार में वस्तु का एक ही मूल्य होता है।

परिभाषा- प्रो. कुर्ली के शब्दों में, "बाजार शब्द से आशय किसी स्थान विशेष से होता है, जहां वस्तुएं खरीदी एवं बिक्री की जाती हैं, बल्कि उस समस्त क्षेत्र से होता, जहां क्रेताओं एवम् विक्रेताओं में आपस में ऐसी स्वतंत्र प्रतियोगिता होती है कि उस समस्त क्षेत्र में वस्तु के मूल्य में शीघ्रता एवं सरलता से एक होने की प्रवृत्ति पाई जाती है।"

चैपसेन के अनुसार - " बाजार का शब्द का अर्थ किसी स्थान विशेष से नहीं है वरन् इसका संबंध एक या अनेक वस्तुओं और उनके क्रेताओं और विक्रेतों से है जिनमें आपस में प्रतियोगिता होती है।"

बाजार जहां लेन देन होता है जिसे उपभोक्ता जरूरत कि समान खरीदते है जिसमे हम खरीद दारी करते है कोई भी व्यक्ति को बाजार का ध्यान होन आवश्यक है

सामान्य अर्थ मे बाजार साब्द से तात्पर्य ऐसे इस्थन् या केन्द्र से होता है जन्हा पर् वस्तु के केर्ता विकेर्ता भौतिक रूप से उपस्थित होकर कर्य विकर्य क कार्य करते है



पूर्ण प्रतियोगिता से क्या आशय है?

37 responses

पूर्ण प्रतियोगिता:- वह बाजार है, जिसमें क्रेता व विक्रेता के बीच वस्तुओं का क्रय-विक्रय प्रतियोगिता के आधार पर होता है। इसके अतिरिक्त व्यक्तिगत रूप से कोई भी फर्म या व्यक्ति वस्तु के मूल्य को प्रभावित नहीं कर सकता है। पूर्ण प्रतियोगिता में वस्तुओं का मूल्य प्रत्येक स्थान पर एक समान रहता है।

विशेषताएं

- (1) क्रेता एवं विक्रेताओं की अधिक संख्या का होना,
- (2) वस्तुएं रूप-रंग, गुण एवं वचन में एक समान होना,
- (3) बाजार का पूर्ण ज्ञान,
- (4) फर्मों का स्वतन्त्र प्रवेश तथा बहिर्गमन,
- (5) उत्पादन के साधनों की पूर्ण गतिशीलता,
- (6) मूल्य नियन्त्रण की अनुपस्थिति,
- (7) औसत तथा सीमान्त भाव का बराबर होना,
- (8) दीर्घकालीन स्थिति में एक मूल्य।

Phone pratiyogita ka bajar vah bajar hai jismein kreta vikreta ke bich vastu ka kray vikray pratiyogita ke Aadhar par hota hai iske atirikt vyaktigat roop se koi bhi vyakti vastu ke mulya ko prabhavit nahin kar sakta hai pratiyogita mein vastu ka mulya pratyek sthan par saman hota hai. Pune pratiyogita ki sthiti ko spasht karne ke liye shrimati e John Robinson ki paribhasha ki sahayata Li ja sakti hai iske anusar Pune pratiyogita tab Pi jaati hai jab pratyek utpadak ke liye ye mang Pune roop se lochdar hoti hai iska Arth hai Pratham vikretaon ki sankhya adhik hoti hai jisse ki kisi ek vikreta ka utpadan used vastu ke kul utpadan ka bahut thoda bhag hota hai tatha dusre sabhi krta pratiyogi vikreta ke bich chunav karne ki Drishti se saman hote Hain jisse ki bajar purn ho jata hai.

Pudr pratiyogita . Ka bajar vha bajar hai jisme kretao aur vikretao ke bich vastu ka krai . Vikrai pratiyogita ke aadhar par hota hai pudr pratiyogita me vastu ka pratiyek Sthan per saman hota hai.

पूर्ण प्रतियोगिता बाजार की स्थिति होती है जिसमें क्रेता और विक्रेताओं की संख्या बहुत अधिक होती है वस्तुओं समरूप होती है तथा क्रेताओं एवं विक्रेताओं को बाजार की पूरी जानकारी रहती है परिणाम स्वरूप किसी फार्म का कीमत एक कोई नियंत्रण नहीं होता उद्योग की कुल मांग एवं पूर्ति द्वारा कीमत निर्धारित की जाती है तथा सभी धर्मों को वह कीमत स्वीकार करनी पड़ती है फार्म दी हुई कीम पर अपनी उत्पादक की जितनी भी मात्रा दे सकती है इसलिए पूर्ण प्रतियोगिता की दशा में एक फार्म के लिए उसी वस्तु की मांग लेता लोचदार होती है एवं उद्योग के संतुलन का अर्थ है कोई फार्म संतुलन में तब कभी आ जाती है जब वह अपनी उत्पादन मात्रा को घटाने बढ़ाने का



प्रयास नहीं करती निश्चित वैसी स्थिति तब होती है जब फार्म अधिकतम लाभ

कोई फार्म संतुलन में तब कहीं जाती है जब वह अपनी उत्पादन मात्रा को घटाने अथवा बढ़ाने का प्रयास करती है। निस्संदेह है ऐसी स्थिति तब उत्पन्न होती है जब फर्म अधिकतम लाभ कमा रही होती है। पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत एक ऐसी फलों का समूह होता है जो केवल एक ही वस्तु का उत्पादन करती है। कोई उद्योग तब संतुलन में कहा जाएगा जब वस्तु की कुल कुल उत्पादन मात्रा में घटने या बढ़ने की कोई प्रगति नहीं होगी।

श्रीमती जान रॉबिंसन के अनुसार पूर्ण प्रतियोगिता तब पाई जाती है जब प्रत्येक उत्पादक के लिए मांग पूर्णतया लोचदार होती है इसका अर्थ है प्रथम विक्रेताओं की संख्या अधिक होती है जिससे कि किसी एक विक्रेता का उत्पादन उस वस्तु के कुल उत्पादन का एक बहुत ही थोड़ा भाग होता है तथा दूसरे सभी क्रेता प्रतियोगी विक्रेताओं के बीच चुनाव करने की दृष्टि से समान होते हैं जिससे बाजार पूर्ण हो जाता है उसे पूर्ण प्रतियोगिता कहते हैं।

अर्थ एवं परिभाषा :- पूर्ण प्रतियोगिता वह बाजार है जिसमें क्रेता और विक्रेता के बीच वस्तुओं का क्रय विक्रय प्रतियोगिता के आधार पर होता है। इसके अतिरिक्त व्यक्तिगत रूप से कोई भी फार्म या व्यक्ति वस्तु के मूल्य को प्रभावित नहीं कर सकता है। पूर्ण प्रतियोगिता में वस्तुओं का मूल्य प्रत्येक स्थान पर एक समान रहता है।

विशेषताएं:-

क्रेता एवं विक्रेताओं की अधिक संख्या का होना।
वस्तुएं रूप रंग गुण एवं वचन में एक समान होना।
बाजार का पूर्ण ज्ञान।
फलों का स्वतंत्र प्रवेश तथा बहिर्गमन।
उत्पादन के साधनों की पूर्ण गतिशीलता।

पूर्ण प्रतियोगिता बाजार के उस रूप को कहते हैं जिसमें किसी समरूप वस्तुओं के बहुत से ग्रह तथा विक्रेता होते हैं तथा वस्तु की कीमत उद्योग द्वारा निर्धारित होती है सभी पर में किसी कीमत पर वस्तु को बेचती है बाजार में वस्तु की एक ही कीमत होती है।

Jb bajar me kisi wastu ke kretao aor wikretao ki sankhya bahut adhik hoti hai to use purn pratiyogita kahte hai purn pratiyogita us dsha me payi jati hai jbk pratyek utpadk ki upj ki mang purntya lochdar hoti hai iska arth yh hai ki pratham wikretao ki sankhya bahut adhik ho jisse kisi ek wikreta ki upj kul utpadn ka ek chhota sa bhag hoti hai aor dusre sabhi kreta pratiyogi wikretao ke bich chunaw karne ki dristi se saman hote hai jisse bajar purn hota hai.

पूर्ण प्रतियोगिता वह बाजार है, जिसमें क्रेता व विक्रेता के बीच वस्तुओं का क्रय-विक्रय प्रतियोगिता के आधार पर होता है। इसके अतिरिक्त व्यक्तिगत रूप से कोई भी फर्म या व्यक्ति वस्तु के मूल्य को प्रभावित नहीं कर सकता है। पूर्ण प्रतियोगिता में वस्तुओं का मूल्य प्रत्येक स्थान पर एक समान रहता है।

विशेषताएं

(1) क्रेता एवं विक्रेताओं की अधिक संख्या का होना, (2) वस्तुएं रूप-रंग, गुण एवं वचन में एक समान होना, (3) बाजार का पूर्ण ज्ञान, (4) फर्मों का स्वतन्त्र प्रवेश तथा बहिर्गमन, (5) उत्पादन के साधनों की पूर्ण गतिशीलता, (6) मूल्य नियन्त्रण की अनुपस्थिति, (7) औसत तथा सीमान्त भाव का बराबर होना, (8) दीर्घकालीन स्थिति में एक मूल्य।

पूर्ण प्रतियोगिता की दशा में मूल्य निर्धारण

पूर्ण-प्रतियोगिता में एक फर्म का साम्य- फर्म के साम्य का अर्थ है, उत्पादन की मात्रा में कोई परिवर्तन न होना, प्रत्येक फर्म अपने लाभ को अधिकतम करना चाहती है, जब तक उसको अधिकतम लाभ प्राप्त नहीं होता, वह उत्पादन की



मात्रा में परिवर्तन करती रहती है, जहाँ उसको अधिकतम लाभ प्राप्त होता है, उसी बिन्दु पर वह अपने उत्पादन की मात्रा को निश्चित कर देती है, अर्थात् यह फर्म साम्य की दशा कहलाती है। पूर्ण प्रतियोगिता में मूल्य निर्धारण को दो भागों में बाँटा जा सकता है

पूर्ण प्रतियोगिता:-

पूर्ण प्रतियोगिता का अर्थ-पूर्ण प्रतियोगिता वह बाजार है, जिसमें क्रेता व विक्रेता के बीच वस्तुओं का क्रय विक्रय प्रतियोगिता के आधार पर होता है। इसके अतिरिक्त व्यक्तिगत रूप से कोई भी फर्म, व्यक्ति वस्तु की कीमत को

प्रभावित नहीं कर सकता। पूर्ण प्रतियोगिता में वस्तुओं का मूल्य प्रत्येक स्थान पर एक समान होता है। इस प्रकार बाजार में क्रेताओं और विक्रेताओं के बीच स्पर्धा होती है। पूर्ण प्रतियोगिता कहलाती है।

उत्तर:- पूर्ण प्रतियोगिता से आशय है जिनमें क्रेता --विक्रेताओं की संख्या काफी अधिक होती है ! और उनमें पूर्ण रूप से स्वतंत्र प्रतिस्पर्धा होती है ! इस प्रतियोगिता में क्रेता एवं विक्रेता दोनों पक्षों की वस्तु का मूल्य पूरा-पूरा या रहता है! वस्तु का मूल्य संपूर्ण बाजार में एक समान रहता है !इस प्रकार बाजार में क्रेता विक्रेताओं के बीच स्पर्धा होती है पूर्ण प्रतियोगिता कहीं जाती है! या पूर्ण प्रतियोगिता कहलाती है!

Arth AVN paribhasha purn Pratiyogita vah Bajar Hai jismein kritya vikreta Ke bich Pashto ka quikrete Pratiyogita ke Aadhar par hota hai Iske atirikt vyakti Roop se koi bhi form Hai vyakti Vastu ke mulya Ko prabhavit Nahin kar sakta hai Kaun Pratiyogita Mein Vaishnav ka mulya pratyay ki Sthan per Ek Saman rahata hai

(1) क्रेता एवं विक्रेताओं की अधिक संख्या का होना, (2) वस्तुएं रूप-रंग, गुण एवं वचन में एक समान होना, (3) बाजार का पूर्ण ज्ञान, (4) फर्मों का स्वतन्त्र प्रवेश तथा बहिर्गमन, (5) उत्पादन के साधनों की पूर्ण गतिशीलता, (6) मूल्य नियन्त्रण की अनुपस्थिति

पूर्ण प्रतियोगिता बाजार की वह स्थिति है जिसमें क्रेता एवं विक्रेताओं के बीच किसी भी प्रकार का बंधन नहीं होता है क्रेता एवं विक्रेताओं के मध्य वस्तु का क्रय - विक्रय प्रतियोगिता के आधार पर होता है क्रेता एवं विक्रेताओं की संख्या अधिक होने के कारण कोई भी पक्ष वस्तु की कीमत को प्रभावित नहीं कर पाता है।

पूर्ण प्रतियोगिता का अर्थ व परिभाषा-

पूर्ण प्रतियोगिता बाजार की वह दशा है , जिसमें किसी वस्तु के बहुत से विक्रेता तथा बहुत से क्रेता होते हैं तथा उनमें प्रतियोगिता होती है परिणाम स्वरूप कोई भी एक नेता एवं विक्रेता व्यक्तिगत रूप से बाजार मूल्य को प्रभावित नहीं कर सकता है इस कारण वस्तु का एक मूल्य प्रचलित होता है श्रीमती जॉन रॉबिन के शब्दों में पूर्ण प्रतियोगिता उस दशा में पाई जाती है जबकि प्रत्येक उत्पादक की उपज की मां पूर्णता लोचदार होती है इसका अर्थ यह है कि प्रथम विक्रेताओं की संख्या अधिक हो जिससे किसी एक विक्रेता की उपज वस्तु की कुल उपज का एक बहुत ही छोटा सा भाग होता है और दूसरे सभी क्रेता प्रतियोगी विक्रेताओं के बीच चुनाव करने की दृष्टि से समान होते हैं जिसे बाजार पूर्ण होता है।

जब बाजार में किसी वस्तु के क्रेताओं और विक्रेताओं की संख्या बहुत अधिक होती है तो उसे पूर्ण प्रतियोगिता कहते हैं श्रीमती जॉन रॉबिसन ने इसकी परिभाषा देते हुए लिखा है पूर्ण प्रतियोगिता उस दशा में पाई जाती है जबकि प्रत्येक उत्पादक की उपज की मांग पूर्णतया लोचदार होती है इसका अर्थ यह है कि विक्रेताओं की संख्या अधिक हो जिससे किसी एक विक्रेता की उपज कुल उत्पादन का एक छोटा सा भाग होती है और दूसरे सभी क्रेता प्रतियोगी विक्रेताओं के बीच चुनाव करने की दृष्टि से समान होते हैं जिससे बाजार पूर्ण होता है उपयुक्त परिभाषा से स्पष्ट है कि पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत क्रेता और विक्रेताओं की संख्या बहुत अधिक होना उन्हें बाजार की परिस्थितियों का पूर्ण ज्ञान होना उनमें पूर्ण प्रतियोगिता पाई जाना एक समान वस्तु एक समान मूल्य उत्पत्ति के साधनों में पूर्ण गतिशीलता फर्म का स्वतंत्र आगमन एवं बहिर्गमन यातायात एवं विज्ञापन के साधन तथा क्रेताओं द्वारा प्रतियोगी विक्रेताओं को समान महत्व देना आदि विशेषता पायी जाती हैं।



पूर्ण प्रतियोगिता वह बाजार है, जिसमें क्रेता व विक्रेता के बीच वस्तुओं का क्रय-विक्रय प्रतियोगिता के आधार पर होता है। इसके अतिरिक्त व्यक्तिगत रूप से कोई भी फर्म या व्यक्ति वस्तु के मूल्य को प्रभावित नहीं कर सकता है। पूर्ण प्रतियोगिता में वस्तुओं का मूल्य प्रत्येक स्थान पर एक समान रहता है।

श्रीमती जॉन रॉबिंसन के अनुसार- पूर्ण प्रतियोगिता तब पाई जाती है जब उत्पादक उत्पादन के लिए मांग पूर्णतया लोचदार होती है। इसका अर्थ है प्रथम विक्रेता की संख्या अधिक होती है जिससे किसी एक विक्रेता उत्पादक का

उत्पादन उस वस्तु के कुल उत्पादन का एक बहुत ही थोड़ा भाग होता है तथा दूसरे सभी क्रेता प्रतिभागी विक्रेताओं के बीच चुनाव करने की दृष्टि से सामान होते हैं जिससे कि बाजार पूर्ण हो जाता है।

उपयोगिता का अर्थ एवं विशेषताएं

उपयोगिता का अर्थ

अर्थशास्त्र में उपयोगिता शब्द का अभिप्राय किसी पदार्थ के उपभोग से मिलने वाली संतुष्टि से है। अर्थात् उपयोगिता किसी वस्तु की वह शक्ति है जो किसी व्यक्ति की आवश्यकता को पूरा करती है।

उपयोगिता की उपस्थिति

जब किसी वस्तु में आवश्यकता संतुष्ट करने की शक्ति होती है तो उसमें उपयोगिता होती है, भले ही उस वस्तु से उपभोक्ता को उससे नुकसान क्यों न हो रहा हो। जैसे नशीले पदार्थों को सामान्य ढंग से अनुपयोगी माना जाता है, परंतु अर्थशास्त्र की भाषा में ये उपयोगिता रखते हैं, क्योंकि ये उपभोक्ता की आवश्यकताओं की संतुष्टि करते हैं।

पूर्ण प्रतियोगिता बाजार की वह दशा है जिसमें क्रेता और विक्रेता दोनों बहुत अधिक मात्रा में होते हैं। अतः कोई एक क्रेता या विक्रेता बाजार की सम्पूर्ण मांग या पूर्ति को प्रभावित नहीं कर पाता है। श्री मती जान राबिंसन के अनुसार"-पूर्ण प्रतियोगिता वह दशा होती है जब प्रत्येक उत्पादक की मांग पूर्णतः लोचदार होती है। इसका मतलब है-प्रथम विक्रेताओं की संख्या बहुत अधिक होती है जिससे किसी एक विक्रेता का उत्पादन वस्तु के कुल उत्पादन का एक बहुत ही थोड़ा सा भाग होता है-तथा दूसरे सभी क्रेता प्रतियोगिता विक्रेताओं के मध्य चुनाव करने की दृष्टि के समान होता है। जिससे बाजार पूर्ण हो जाता है।

पूर्ण प्रतियोगिता वह बाजार है जिसमें क्रेता वा विक्रेता के बीच वस्तुओं का क्रय विक्रय प्रतियोगिता के आधार पर होता है। इसके अतिरिक्त व्यक्तिगत रूप से कोई भी फर्म या व्यक्ति वस्तु के मूल्य को प्रभावित नहीं कर सकता है। पूर्ण प्रतियोगिता में वस्तु का मूल्य प्रत्येक स्थान पर एक समान रहता है।

पूर्ण प्रतियोगिता का बाजार वहां बाजार है जिसमें क्रेता और विक्रेताओं के बीच वस्तु का क्रय विक्रय प्रतियोगिता के आधार पर होती है। इसके अतिरिक्त व्यक्तिगत रूप से कोई भी व्यक्ति वस्तु के मूल्य को प्रभावित नहीं कर सकता है। पूर्ण प्रतियोगिता में वस्तु का मूल्य प्रत्येक स्थान पर समान होता है, प्रतियोगिता की स्थिति को स्पष्ट करने के लिए श्रीमती जान रॉबिंसन की परिभाषा की सहायता ली जा सकती है। के अनुसार पूर्ण प्रतियोगिता तब पाई जाती है जब प्रत्येक उत्पादक के उत्पादन के लिए मांग पूर्णतया लोचदार होती है। इसका अर्थ है प्रथम विक्रेताओं की संख्या अधिक होती है, जिससे कि किसी एक विक्रेता उत्पादक का उत्पादन उस वस्तु के कुल उत्पादन का एक बहुत ही थोड़ा भाग होता है तथा दूसरे सभी क्रेता प्रतियोगिता विक्रेताओं के बीच चुनाव करने की दृष्टि समान होता है, जिससे बाजार पूर्ण हो जाता है।

पूर्ण प्रतियोगिता से यह आशय है कि पूरा प्रतियोगिता का बाजार वह बाजार है जिसमें क्रियाओं और विक्रेताओं के बीच वस्तु का क्रय विक्रय प्रतियोगिता के आधार पर किया जाता है इसके अतिरिक्त व्यक्तिगत रूप से कोई भी व्यक्ति वस्तु के मूल्य को प्रभावित नहीं कर सकता है पूर्ण प्रतियोगिता में वस्तु का मूल्य प्रत्येक स्थान पर समान रहता है पर निकाल देने के बाद पर समान होता है पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति को स्पष्ट करने के लिए श्रीमती जॉन रॉबिंस की परिभाषा की सहायता ली जा सकती है उनके अनुसार पूर्ण प्रतियोगिता तब पाई जाती है जब प्रत्येक उत्पादक के उत्पादन के लिए मांग पूर्णतया लोचदार होती है इसका अर्थ है प्रथम विक्रेताओं की संख्या अधिक होती है जिससे कि



उत्पन्न का लिए मांग पूणतया लाचदार हाता ह इसका अर्थ ह प्रथम विक्रेता का संख्या अधिक हाता ह जिससे किसी एक विक्रेता उत्पादक का उत्पन्न उस वस्तु के कुल उत्पादन का एक बहुत ही थोड़ा भाग होता है तथा दूसरे सभी क्रेता प्रतियोगी विक्रेताओं के बीच चुनाव करने की दृष्टि से समान होते हैं जिससे कि बाजार पूर्ण हो जाता है

पूर्ण प्रतियोगिता वह बाजार है जिसमें क्रेता विक्रेता के बीच वस्तुओं का क्रय विक्रय प्रतियोगिता के आधार पर होता है। इसके अतिरिक्त व्यक्तिगत रूप से कोई भी फर्म या व्यक्ति वस्तु के मूल्य को प्रभावित नहीं कर सकता है।

Kisi wastu ka mulya ushki utpadnn lagat ke duwarra nirdharit hota hy kyuki kisi bhi wastu ka mulya na kewal ushki utpadn lagat duwara nirdharit hota hy na kewal simant upyogita duwara hi balki in dono saktiyo ke smmilit prayas se kisi bhi wastu mulya nidharit hota hy

पूर्ण प्रतियोगिता का बाजार वहां बाजार है जिसमें करता हूं और विक्रेताओं के बीच वस्तु का क्रय विक्रय प्रतियोगिता के आधार पर होता है। इसके अतिरिक्त व्यक्तिगत रूप से कोई भी व्यक्ति वस्तु के मूल्य को प्रभावित नहीं कर सकता है पूरी रामपुर प्रतियोगिता में वस्तु का मूल्य प्रत्येक स्थान पर समान होता है पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति को स्पष्ट करने के लिए श्रीमती जानरा बींस की परिभाषा की सहायता ली जा सकती है उनके अनुसार पूर्ण प्रतियोगिता तक पाई जाती है जब प्रत्येक पाठक के उत्पादन के लिए मांग पूरी तैयार होती है इसकी अर्थ है प्रथम कर्ताओं की संख्या अधिक होती है जिससे किसी एक विक्रेता उत्पादक का उत्पादन उस वस्तु के कुल उत्पादन का एक बहुत ही थोड़ा भाग होता है तथा दूसरे सभी क्रेता प्रतियोगिताओं के बीच चुनाव की दृष्टि से समान होते हैं जिससे कि बाजार पूर्ण हो

पूर्ण प्रतियोगिता वह बाजार है जिसमें क्रेता और विक्रेता के बीच वस्तुओं का क्रयविक्रय प्रतियोगिता के आधार पर होता है इसके अतिरिक्त व्यक्तिगत रूप से कोई भी फर्म या व्यक्ति वस्तु के मूल्य को प्रभावित नहीं कर सकता है पूर्ण प्रतियोगिता में वस्तुओं का मूल्य प्रत्येक स्थान पर एक समान रहता है ।

पूर्ण प्रतियोगिता का अर्थ-- पूर्ण प्रतियोगिता बाजार की वहां स्थिति होती है जिसमें करता हूं तथा विक्रेताओं की संख्या बहुत अधिक होती है वस्तुएं समरूप होती हैं तथा कृपा एवं विक्रेताओं को बाजार की पूरी जानकारी रहती है। रामस्वरूप किसी फर्म का कीमत पर कोई नियंत्रण नहीं होता है। उद्योग की कुल मांग एवं पूर्ति द्वारा कीमत निर्धारित की जाती है तथा सभी फलों को वहां कीमत स्वीकार करनी पड़ती है। फरमाइश दी हुई कीमत पर अपने उत्पाद की कितनी भी मात्रा दे सकती है। इसलिए पूर्ण प्रतियोगिता की दशा में एक फर्म के लिए उसकी वस्तु की मांग पूर्णतया लोचदार होती है।

श्रीमती जॉन रॉबिंसन के अनुसार पूर्ण प्रतियोगिता तब पाई जाती है जब प्रत्येक उत्पादक के उत्पादन के लिए मां पूर्णता लोचदार होती है इसका अर्थ है प्रथम विक्रेताओं की संख्या अधिक होती है जिससे किसी एक विक्रेता की उत्पादन उस वस्तु के कुल उत्पादन दूसरे सभी क्रेता प्रतियोगिता विक्रेता के बीच चुनाव करने की दृष्टि से समान होता है जिससे कि बाजार पूर्ण हो जाता है।

पूर्ण प्रतियोगिता बाजार की वह स्थिति होती है जिसमें एक वस्तु की बहुत अधिक क्रेता तथा विक्रेता होते हैं व वस्तु के क्रय विक्रय के लिए उनमें परस्पर इतनी प्रतिस्पर्धा होती है कि संपूर्ण बाजार में वस्तु का एक ही मूल्य प्रचलित होता है।

पूर्ण प्रतियोगिता बाजार की वह स्थिति है जहां क्रेता और विक्रेता के मध्य वस्तुओं का क्रय विक्रय विक्रय प्रतियोगिता के आधार पर किया जाता है और क्रेता विक्रेताओं की संख्या अधिक होती है जिसके कारण कोई भी वस्तु की कीमत को प्रभावित नहीं कर सकता है।

पूर्ण प्रतियोगिता की विशेषताएं:- (1) क्रेताओं एवं विक्रेताओं की संख्या अधिक होती है।

(2) समरूप वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है।

(3) क्रेताओं एवं विक्रेताओं को बाजार का संपूर्ण ज्ञान होता है।



- (4) उत्पादन के साधन पूर्ण गतिशील होते हैं।
 (5) फर्मों का स्वतंत्र प्रवेश एवं बहिर्गमन होता है।

बाजार के उस रूप को कहते हैं जिसमें किसी समरूप वस्तु के बहुत से क्रेता तथा विक्रेता होते हैं

पूर्ण प्रतियोगिता का अर्थ- पूर्ण प्रतियोगिता बाजार की वह दशा है, जिसमें किसी वस्तु के बहुत से विक्रेता तथा बहुत से क्रेता होते हैं तथा उनमें प्रतियोगिता होती है। परिणामस्वरूप कोई भी एक क्रेता एवं विक्रेता व्यक्तिगत रूप से बाजार

मूल्य को प्रभावित नहीं कर सकता है। इस कारण वस्तु का एक मूल्य प्रचलित होता है।

श्रीमती जान राबिंसन के शब्दों में, " पूर्ण प्रतियोगिता उस दशा में पाई जाती है, जबकि प्रत्येक उत्पादक की उपज की मांग पूर्णतया लोचदार होती है। इसका अर्थ यह है कि प्रथम, विक्रेताओं की संख्या अधिक हो, जिससे किसी एक विक्रेता की उपज, वस्तु की कुल उपज का एक बहुत ही छोटा- सा भाग होता है और दूसरे सभी क्रेता प्रतियोगी विक्रेताओं के बीच चुनाव करने की दृष्टि से समान होते हैं, जिससे बाजार पूर्ण होता है।"

फर्ग्यूसन के अनुसार - " एक उद्योग को पूर्ण प्रतियोगिता वाला तब कहा जाता है, जब प्रत्येक क्रेता और विक्रेता समस्त बाजार की तुलना में इतना छोटा होता है कि वह अपनी खरीदी अथवा उत्पादक में परिवर्तन करके बाजार को प्रभावित नहीं कर सकता है।"

जिसमें जानकारी होना जिसमें पूर्ण ध्यान हो है जो कि हमारे बीच सही तरीके से पूर्ण होना चाहिए।

अर्थ avm परिभाषा पूर्ण प्रतियोगिता के, और विक्रेता के बीच वस्तुओं के विकल्प के आधार पर होता है इसके आन्तरिक व्यक्तिगत के रूप से किया जाता है।

उदासीनता वक्र से आप क्या समझते हैं? इसकी विशेषताओं की व्याख्या कीजिये.

37 responses

रिकार्डों के लगान सिद्धान्त की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिये.

37 responses

This content is neither created nor endorsed by Google. [Report Abuse](#) - [Terms of Service](#) - [Privacy Policy](#).

Google Forms



छःमाही परीक्षा (ऑनलाईन)

कक्षा : बीए—भाग एक ,विषय : अर्थशास्त्र

(शैक्षणिक सत्र : 2020—21)

शास. शहीद गेंदसिंह महाविद्यालय, चारामा. जिला—कांकेर (छग)

छःमाहा पराक्षा (भारताय अर्थव्यवस्था)

35 responses

[Publish analytics](#)



छात्र का पूरा नाम

35 responses

Divya dewangan

Uma sahu

MANISH KUMAR DEWANGAN

Deepak Kumar sahu

BHOJBALA JAIN

CHANDRAHAS MARKAM

DURGESHWARI SAHU

Chhabila gajendra

SAHIL KUMAR MARKAM

SAHIL NETAM

Chandni Sinha

DEVIKA PATEL

TULSI DEWANGAN

gendlal Chakrhadhari

Satish yadav

JITENDRA VERMA

SEEMA AGUJE



SEEMA ACHLE

Harsh Dewangan

Bhagwat Prasad taram

HEMLATA SALAM

Kaleshwar sahu

Lomeshwari Sahu

AARTI YADAV

Tejkumar

Anita Korram

NIRAJ PATEL

Thaneshwari sahu

Savita sahu

Yashoda Dewangan

Madhuri sonwani

PRIYA MAHLA

SUSHILA NISHAD


Kajal,sahu

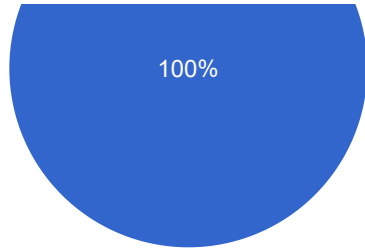
Niranjan Sinha

Sandni Devi Sinha

कक्षा

35 responses

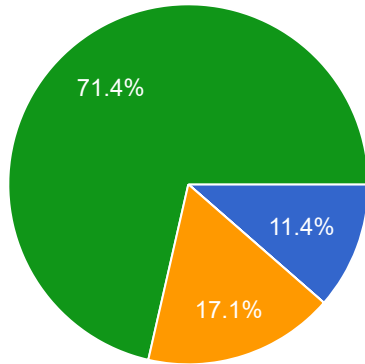
 Copy ● बीए-भाग एक



भारतीय खाद्य निगम का क्या कार्य है/हैं

Copy

35 responses

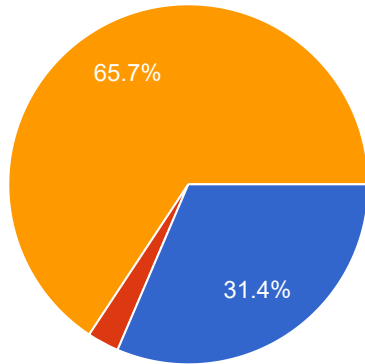


- खाद्यान्न की खरीदी
- खाद्यान्न का भण्डारण.
- खाद्यान्न का वितरण.
- उपर्युक्त सभी.

कृषि साख हेतु संस्थागत स्रोत है

Copy

35 responses

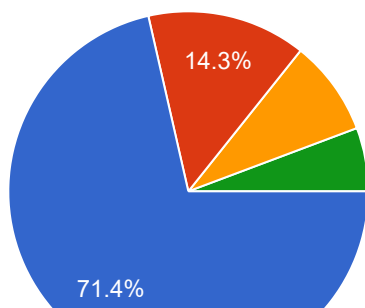


- साहूकार
- देशी बैंकर्स
- क्षेत्रीय ग्राणीण बैंक.
- इनमें से कोई नहीं.

सी रंगराजन समिति के अनुसार ग्रामीण क्षेत्र में निर्धनता रेखा (प्रतिदिन) कितनी है?

Copy

35 responses



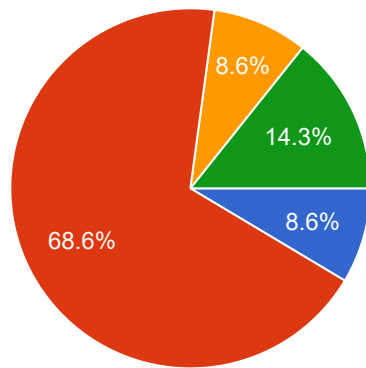
- 32.4 रु प्रतिदिन व्यय.
- 46.9 रु प्रतिदिन व्यय.
- 50 रु प्रतिदिन व्यय.
- इनमें से कोई नहीं.



साधन की सीमांत उत्पादकता किस बेरोजगारी में शून्य होती है?

 Copy

35 responses

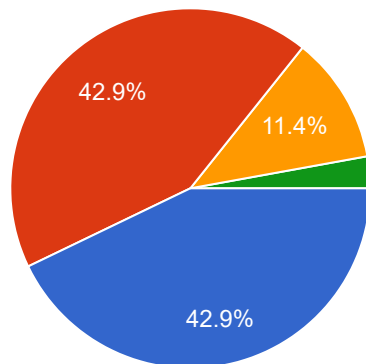


- शिक्षित बेरोजगारी.
- अदृश्य बेरोजगारी.
- मौसमी बेरोजगारी
- इनमें से कोई नहीं.

निजी क्षेत्र के बैंको को 1969 और 1980 में सार्वजनिक क्षेत्र के अधीन लाया गया. यह किसका उदाहरण है?

 Copy

35 responses



- निजीकरण
- राष्ट्रीयकरण
- भूमंडलीकरण.
- इनमें से कोई नहीं.



योजना आयोग का ढांचा और कार्य.

35 responses

योजना आयोग का गठन 15 मार्च 1950 को भूतपूर्व सोवियत संघ के तर्ज पर हुआ था। योजना आयोग देश के विकास से संबंधित योजनाएं बनाने का काम करता था। योजना आयोग ने 12 पंचवर्षीय योजनाएं बनाईं। ... योजना आयोग के पदेन अध्यक्ष प्रधानमंत्री ही होते थे।

भारत का योजना आयोग, भारत सरकार की एक संस्था थी जिसका प्रमुख कार्य पंचवर्षीय योजनायें बनाना था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2014 में अपने पहले स्वतंत्र दिवस के भाषण में यह कहा कि उनका इरादा योजना कमीशन को भंग करना है। ... 15 मार्च 1950 को केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा पारित प्रस्ताव के द्वारा योजना की स्थापना की गई थी।

भारत का योजना आयोग, भारत सरकार की एक संस्था थी जिसका प्रमुख कार्य पंचवर्षीय योजनायें बनाना था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2014 में अपने पहले स्वतंत्र दिवस के भाषण में यह कहा कि उनका इरादा योजना कमीशन को भंग करना है। 2014 में इस संस्था का नाम बदलकर नीति आयोग (राष्ट्रीय भारत परिवर्तन संस्थान) किया गया। भारत में योजना आयोग के संबंध में कोई संवैधानिक प्रावधान नहीं है। 15 मार्च 1950 को केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा पारित प्रस्ताव के द्वारा योजना की स्थापना की गई थी। योजना आयोग का अध्यक्ष प्रधानमंत्री होता है। 13 अगस्त 2014 को योजना आयोग खत्म कर दिया गया और इसके जगह पर नीति आयोग का गठन हुआ। नीति आयोग भारत सरकार की एक थिंक टैंक है। योजना आयोग का हेड क्वार्टर योजना भवन के नाम से जाना जाता था। यह नई दिल्ली में है।

इसके अतिरिक्त इसके अन्य कार्य हैं: -

देश के संसाधनों का आकलन करना।

इन संसाधनों के प्रभावी उपयोग के लिए पंचवर्षीय योजनाओं का निर्माण करना।

प्राथमिकताओं का निर्धारण और योजनाओं के लिए संसाधनों का आवंटन करना।

योजनाओं के सफल कार्यान्वयन के लिए आवश्यक मशीनरी का निर्धारण करना।

योजनाओं की प्रगति का आवधिक मूल्यांकन करना।

देश के संसाधनों का सबसे प्रभावी और संतुलित ढंग से उपयोग करने के लिए योजनाओं का निर्माण करना।

आर्थिक विकास को बाधित करने वाले कारकों की पहचान करना।

योजना के प्रत्येक चरण के सफल क्रियान्वयन के लिए आवश्यक मशीनरी का निर्धारण करना।

Yojana aayog Pune roop se ek Salah khari Sanstha hai jiska ka karya yojnaon ka Nirman karna AVN Yojana na ki e Pragati e mulyankan karna swatantrata prapti ke pakshat Bharat mein Yojana aayog ki sthapna 15 March 1950 main ki gai vartman mein main Yojana aayog ka mukhyalay Yojana bhawan state nai Delhi mein hai 1. Yojana aayog ka sangathan teen prakar Se hua hai. Vishesh vibhag . Vishay vibhag Anya samitiyan karykram mulyankan sangathan prashasan aadi ke dwara uska sangathan hua hai. Yojana aayog ke karya. Yojana aayog ke



Pramukh karya neem likhit hai. Sansadhanon ka anuman lagana. Prathmik taun ka nirdharan Karna. Uplabdh sansadhanon ka batwara. Badhak tatva ki aur Dhyan dilana. Sujhav dena. Yojana ka Nirman karna. Pragati ka mulyankan. Adhi karya hote Hain.

Yojna aayog pudrtai ek slahkari snstha hai jiska kary yojnao ka nirmad krna yojnao ki pragti ka mulyankan krna hai . Savtnrtra prapti ke bad bhart me yojna aayog ki sthapna 15 march 1950 me ki gayi .

Niyojit dang se vikas karne wale desho me ek aisi kendriy satta ki awasyakta hai jo swatantra rup se yojnao ko bnay aor unhe karyanwit krne ke liye upyukt sujhaw de. is yojna tantra ka krtaway hota hai. desh ke sansadhno ke atyadhik santulit upyog ke liye yojna ka nirman krega. aayog yojna ki wibhinn awsthao ko sphltapurwk karyanwit krne ke liye upyukt tantra ki prakriti ka nirdharn krega.

योजना आयोग का ढांचा:-

15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ। भारत की आर्थिक स्थिति शोषण के कारण पहले से खोखली हो चुकी थी। इधर द्वितीय महायुद्ध के कारण भी आर्थिक परिस्थितियों में कई दोष थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारतीय सरकार को विभिन्न समस्याओं के अलावा कुछ और हाथ ना लगा, इन समस्याओं के निपटान के लिए नियोजन विकास की आवश्यकता था। अतः योजना आयोग की स्थापना की आवश्यकता महसूस की जाने लगी थी। श्रद्धेय स्व. जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में एक आर्थिक कार्यक्रम समिति का गठन किया गया जिसने 1948 में एक केंद्रीय योजना आयोग के गठन के लिए सुझाव दिया। फल स्वरूप भारत सरकार द्वारा 15 मार्च 1950 को योजना आयोग का गठन किया गया जिसमें हमारे यहां नियोजित विकास करने की एक महत्वपूर्ण कदम समझा गया।

योजना आयोग के कार्य:-

- देश के संसाधनों का आकलन करना।
- इन संसाधनों के प्रभावी उपयोग के लिए पंचवर्षीय योजनाओं का निर्माण करना।
- प्राथमिकताओं का निर्धारण और योजनाओं के संसाधनों का आवंटन करना।
- योजनाओं के सफल कार्यक्रम के लिए आवश्यक मशीनरी का निर्धारण करना।
- योजनाओं की प्रगति के लिए आवश्यक मूल्यांकन करना।
- देश के संसाधनों का प्रभावी और संतुलित ढंग से उपयोग करने के लिए योजनाओं का निर्माण करना।
- आर्थिक विकास को बाधित करने वाले कारकों की पहचान करना।

योजना आयोग का ढांचा स्वतंत्रता मिलने के पश्चात कांग्रेस जाने एक आर्थिक कार्यक्रम समिति बनाई, जिसमें 1948 में एक स्थाई योजना आयोग स्थापित करने की सिफारिश की जिसमें फल स्वरूप 15 अगस्त ,1950 को योजना आयोग की स्थापना कर दी गई।

योजना आयोग के कार्य=

- 1) संस्थानों का अनुमान लगाना
- 2) प्राथमिकताओं का निर्धारण
- 3) उपलब्ध साधनों का बंटवारा
- 4) बाधक तत्वों की ओर ध्यान दिलाना
- 5) सुझाव देना

15 अगस्त 1947 भारत स्वतंत्र हुआ भारत की आर्थिक स्थिति शोषण के कारण पहले से ही खोखली हो चुकी थी इधर द्वितीय महायुद्ध के कारण भी कई प्रकार से आर्थिक परिस्थितियों में कई अन्य दोष आ गए थे स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ भारतीय सरकार को विभिन्न समस्याओं के अतिरिक्त कुछ हाथ नहीं लगा विभिन्न समस्याओं से उत्पन्न स्थिति से निकालने का एकमात्र मार्ग नियोजित विकास ही थी अतः योजना आयोग की स्थापना की आवश्यकता महसूस की



जान लगा था

योजना आयोग का कार्य:- खोजना आयोग की स्थापना के लिए पारित प्रस्ताव में योजना आयोग के निम्नलिखित कार्य बताए गए हैं।

1 आयोग देश के भौतिक पूंजी संबंधित तथा मानवीय संसाधनों का अनुमान लगाएगा और राष्ट्रीय आवश्यकता से इन साधनों में से जिस की भी कमी होगी उन की वृद्धि की संभावना के संबंध में अन्वेषण करेगा।

2 देश के संसाधनों के अत्यधिक संतुलित उपयोग के लिए योजना का निर्माण करेगा।

3 प्राथमिकताओं के निर्धारण में आयोग उन अवस्थाओं को परिभाषित करता है जिनमें अथवा जिनके आधार पर योजनाएं कार्यान्वित की जाएगी आयोग सभी व्यवस्थाओं को उपयुक्त रूप से कार्यान्वित करने के लिए योजनाओं का

आवंटन करता है

4 आयोग उन घटकों के बारे में इंगित करेगा जो आर्थिक विकास में बाधक हो रहे हैं तथा उन परिस्थितियों का निर्धारण करेगा जो उस समय के वर्तमान सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों के अनुसार योजनाओं को सफलतापूर्वक कार्यान्वित करने के लिए आवश्यक हो

5 योजना आयोग की विभिन्न अवस्थाओं को सफलतापूर्वक कार्य विनीत करने के लिए उपयुक्त तंत्र की प्रकृति का निर्धारण करेगा

6 समय-समय पर योजनाओं में प्राप्त प्रगति का मूल्यांकन करेगा और उस मूल्यांकन के आधार पर विभिन्न नीतियों और अन्य परिस्थितियों में सुधार के लिए आवश्यक सुझाव देगा

योजना आयोग का ढांचा:-

15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ। भारत की आर्थिक स्थिति शोषण के कारण पहले से खोखली हो चुकी थी। इधर द्वितीय महायुद्ध के कारण भी आर्थिक परिस्थितियों में कई दोस थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारतीय सरकार को विभिन्न समस्याओं के अलावा कुछ और हाथ ना लगा, इन समस्याओं के निदान के लिए नियोजन विकास की आवश्यकता थी। अब तो सब योजना आयोग की स्थापना की आवश्यकता महसूस की जाने लगी थी। पंडित जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में एक आर्थिक कार्यक्रम समिति का गठन किया गया जिसने 1948 में एक केंद्रीय योजना आयोग के गठन के लिए सुझाव दिया। फल स्वरूप भारत सरकार द्वारा 15 मार्च 1950 को योजना आयोग का गठन किया गया जिसमें हमारे यहां नियोजित विकास करने की एक महत्वपूर्ण कदम समझा गया।

योजना आयोग के कार्य:-

१) देश के संसाधनों का आकलन करना।

२) इन संसाधनों की प्रभावी उपयोग के लिए पंचवर्षीय योजनाओं का निर्माण करना।

३) प्राथमिकताओं का निर्धारण और योजनाओं के संसाधनों का आवंटन करना।

४) योजनाओं के सफल कार्यक्रम के लिए आवश्यक मशीनरी का निर्धारण करना।

५) योजनाओं की प्रगति के लिए आवश्यक मूल्यांकन करना।

योजना आयोग के कार्य निम्नलिखित हैं पहला संस्थानों का अनुगमन लगाना योजना आयोग का सबसे प्रथम कार्य देश में उपलब्ध भौतिक एवं मानवीय संसाधनों का अनुमान लगाना तथा उन संसाधनों के अत्यंत प्रभाव कमी एवं संतुलित उपयोग के लिए योजना बनाना है दूसरा प्राथमिकताओं का निर्धारण देश में विकास तो सभी और करना है लेकिन यह तय करना है कि पहले विकास किस ओर किया जाता है प्राथमिक निर्धारण करना काल आता है तीसरा उपलब्ध साधनों का बंटवारा देश में जो साधन उपलब्ध है उनका बंटवारा योजनाओं में किस प्रकार से किया जाए यह कार्य योजना के द्वारा किया जाता है चौथा बांध तत्वों की ओर ध्यान दिलाना यदि देश के आर्थिक विकास में कोई तत्व बंधक है या बधाई उपस्थित होने की संभावनाएं हैं तो योजना ऐसी बंधुओं की ओर सरकार का ध्यान आकर्षित करता है पांचवा सुझाव देना आयोग समय-समय पर सरकार की नीतियों की सरकार अपना कार्य उचित ढंग से चला सके जनसाधारण कोष की सेवा कर सके छठवां योजना का निर्माण योजना आयोग का प्रमुख कार्य होना का निर्माण सरकार को सौंप देना है सातवां प्रगति का मूल्यांकन योजना के लागू को हो जाने पर उसके क्या लक्ष्य परिणाम प्राप्त हुए अथवा उनकी मूल्यांकन कटनी उपस्थित हो गई हो तो उनके बारे में सुझाव देने का कार्य योजना का है

योजना आयोग- योजना आयोग पूर्णतया एक सहकारी संस्था है। जिसका कार्य योजनाओं का निर्माण करना एवं योजनाओं की प्रगति का मूल्यांकन करना है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत में योजना आयोग की स्थापना 15 मार्च 1950 में की गई वर्तमान में योजना आयोग का मुख्यालय योजना भवन पार्लियामेंट स्टीट नई दिल्ली में है।



योजना आयोग के कार्य निम्नलिखित हैं-

(1) संसाधनों का अनुमान लगाना (2) प्राथमिकताओं का निर्धारण (3) उपलब्ध साधनों का बंटवारा (4) बाधक तत्वों की ओर ध्यान दिलाना (5) सुझाव देना इत्यादि हैं।

Jojana Aayog Punita Ek salahkari Sansar Hai Jiska Karya yojnaon ka Nirman karna AVN yojnaon ki Pragati Ka mulyankan Karna Hai Swatantrata Prapti ke pakshat Bharat mein Yojana Aayog ki sthapna 15 March 1950 Mein ki gai

Bharat sarkar duwara yojna aayog ke sthan prr niti ayog ka gathhnn kiya gaya hyy
Kary

1' niyojan awam vikas pranali me aawasykk sasodhann ingit krna

2' yysr anya krya jo rajya sarkar duwara supurd kiye gay

3' rajya vibhinn chettro me chettriya tatha samajik aasntulan ko dur karne hetu bhaootik awam kary krrmm ka sujao dena

देश के संसाधनों का आकलन करना।

इन संसाधनों के प्रभावी उपयोग के लिए पंचवर्षीय योजनाओं का निर्माण करना।

प्राथमिकताओं का निर्धारण और योजनाओं के लिए संसाधनों का आवंटन करना।

योजनाओं के सफल कार्यान्वयन के लिए आवश्यक मशीनरी का निर्धारण करना।

योजनाओं की प्रगति का आवधिक मूल्यांकन करना।

देश के संसाधनों का सबसे प्रभावी और संतुलित ढंग से उपयोग करने के लिए योजनाओं का निर्माण करना।

भारत में योजना आयोग का गठन 15 मार्च सन 1950 पंडित जवाहरलाल नेहरू प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में की गई थी।

योजना आयोग का ढांचा और कार्य

1. देश की भक्ति पूंजीगत एवं मानवीय संसाधनों के संबंध में वास्तविक अनुमान लगाकर साधनों की पूर्ति करना।

2. देश के लिए योजनाओं का निर्माण करना।

3. आर्थिक विकास की बाधक तत्व को सुनिश्चित करना तथा योजना को सफलतापूर्वक लागू करना।

4. समय-समय पर योजनाओं की उपलब्धियों की प्रगति का मूल्यांकन करना।

5. देश के आर्थिक विकास के लिए सुझाव देना।

योजना आयोग भारत का योजना आयोग भारत सरकार की एक संस्था थी जिसका प्रमुख कार्य पंचवर्षीय योजनाएं बनाना था। 2014 में अपने पहले स्वतंत्र दिवस के भाषण में यहां कहा कि उनका इरादा योजना कमीशन को भंग करना है। 2014 में इस संस्था का नाम बदलकर नीति आयोग राष्ट्रीय भारत परिवर्तन संस्थान किया गया है। भारत का योजना आयोग भारत सरकार की एक संख्या थी जिसका प्रमुख कार्य पंचवर्षीय योजनाएं बनाना था आयोग राष्ट्रीय भारत परिवर्तन संस्थान किया गया पूरी राम भारत में योजना के संबंध में कोई संवैधानिक प्रावधान नहीं है

योजना आयोग:- योजना आयोग पूर्णतया एक सलाहकारी संस्था है। जिसका कार्य योजना का निर्माण करना एवं योजनाओं की प्रगति का मूल्यांकन करना है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत में योजना आयोग की स्थापना 15 मार्च 1990 में की गई। वर्तमान में योजना आयोग का मुख्यालय योजना भवन पार्लियामेंट स्ट्रीट नई दिल्ली में है।

योजना आयोग के कार्य:-(1) योजना का निर्माण करना।

(2) संसाधनों का अनुमान लगाना।

योजना आयोग भारत का योजना आयोग भारत सरकार की एक संस्था थी जिसका प्रमुख कार्य पंचवर्षीय योजनाएं बनाना था। 2014 में अपने पहले स्वतंत्र दिवस के भाषण में यहां कहा कि उनका इरादा योजना कमीशन को है। 2014 में इस संस्था का नाम बदलकर नीति आयोग राष्ट्रीय भारत परिवर्तन संस्थान किया है। भारत का योजना आयोग भारत सरकार की एक संस्था थी जिसका प्रमुख कार्य पंचवर्षीय योजनाएं बनाना था आयोग राष्ट्रीय भारत



परिवर्तन संस्थान किया गया । भारत में योजना के संबंध में कोई सर्वजनिक परवाह नहीं है

भारत का योजना आयोग, भारत सरकार की एक संस्था थी जिसका प्रमुख कार्य पंचवर्षीय योजनाएं बनाना था। "प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी" ने 2014 में अपने पहले स्वतंत्र दिवस के भाषण में यह कहा कि उनका इरादा योजना कमीशन को भंग करना है 2014 में इस संस्था का नाम बदलकर नीति आयोग (राष्ट्रीय भारत परिवर्तन संस्था) किया गया।

15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ। भारत की आर्थिक स्थिति शोषण के कारण पहले से ही खोखली हो चुकी थी इधर द्वितीय महायुद्ध के कारण भी कई प्रकार से आर्थिक परिस्थितियों में कई अन्य दोस आ गई थे स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ भारतीय सरकार को विभिन्न समस्याओं के अतिरिक्त कुछ हाथ नहीं लगा विभिन्न समस्याओं से उत्पन्न स्थिति से निकलने का एक मात्र मार्ग नियोजित विकास ही था अतः योजना आयोग की स्थापना की आवश्यकता महसूस की जाने लगी थी श्रद्धेय स्व जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में एक आर्थिक कार्यक्रम समिति का गठन किया गया जिसने सन 1948 में एक स्थाई केंद्रीय योजना आयोग की स्थापना के लिए सुझाव दिया। योजना आयोग के कार्य, आयोग देश की भौतिक पूंजी संबंधी तथा मानवीय संसाधनों व्यक्तियों को सम्मिलित करते हुए, का अनुमान लगाएगा और राष्ट्रीय आवश्यकता से इन साधनों इन साधनों में से जिसकी भी कमी होगी उनकी वृद्धि की संभावना के संबंध में अन्वेषण करेगा। 2, देश के संसाधनों के अत्यधिक संतुलित उपयोग के लिए योजना का निर्माण करेगा। 3, प्राथमिकताओं के निर्धारण में आयोग उन अवस्थाओं को परिभाषित करता है जिनमें अथवा जिनके आधार पर योजनाएं कार्यान्वित की जाएगी आयोग सभी व्यवस्थाओं को उपर्युक्त रूप से कार्यान्वित करने के लिए योजनाओं का आवंटन करता है। 4, आयोग उन घटकों के बारे में इंगित करेगा जो आर्थिक विकास में बाधक हो रहे हो तथा उन परिस्थितियों का निर्धारण करेगा जो उस समय के वर्तमान समाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों के अनुसार योजनाओं को सफलतापूर्वक कार्यान्वित करने के लिए आवश्यक हो। 5, आयोग योजना की विभिन्न अवस्थाओं को सफलतापूर्वक कार्यान्वित करने के लिए उपयुक्त तंत्र की प्रकृति का निर्धारण करेगा। 6, समय-समय पर योजनाओं में प्राप्त प्रगति का मूल्यांकन करेगा और उस मूल्यांकन के आधार पर विभिन्न नीतियों और अन्य परिस्थितियों में सुधार के लिए आवश्यक सुझाव देगा।

योजना आयोग के कार्य

1. संसाधनों का अनुमान लगाना।
2. प्राथमिकताओं का निर्धारण।
3. उपलब्ध संसाधनों का वितरण।
4. देश के विकास में बाधक तत्वों का ध्यान कर्षण।
5. योजनाओं का निर्माण।
6. प्रगति का मूल्यांकन।
7. सुझाव देना।

उत्तर :- भारत का योजना आयोग ,भारत सरकार की एक संस्था थी! जिसका प्रमुख कार्य पंचवर्षीय योजनाएं बनाना था! 15 मार्च 1950 को केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा पारित प्रस्ताव के द्वारा योजना आयोग की स्थापना की गई थी ! 13 अगस्त 1914 को योजना आयोग खत्म कर दिया गया ! और इसके बदले नीति आयोग का गठन हुआ !नीति आयोग भारत सरकार की एक थिक टैंक है!

इनके अन्य कार्य हैं ----

- (1.) देश के संस्थानों का आकलन करना !
- (2.) इन संस्थानों के प्रभावी उपयोग के लिए पंचवर्षीय योजनाएं का निर्माण करना !
- (3.) योजनाओं की प्रगति का आवधिक मूल्यांकन करना ,आदि !

नीति आयोग के उप समूह की बैठक के बाद राज्य योजना आयोग का ढांचा बदल जाएगा इनमें हर क्षेत्र के विशेषज्ञों की सेवाएं ली जाएगी साथ ही सीआईए या डायरेक्टर जनरल के नए पद सृजित होंगे मुख्यमंत्री पूर्व की तरह के अध्यक्ष बने रहेंगे इसे लेकर मुख्यमंत्री इस स्तर पर प्रारंभिक चर्चा हो चुकी है बदले हुए ढांचे के साथ आयोग जुलाई



तक काम करना शुरू कर दगा याजना आयाग का काय पहला साधना का अनुमान लगाना याजना आयाग का सबसे प्रथम कार्य देश में उपलब्ध भौतिकी एवं मानवीय संसाधनों का अनुमान लगाना दूसरा प्राथमिकताओं का निर्धारण देश में विकास तो सभी ओर करना है लेकिन यह तय करना कि पहले विकास किस ओर किया जाए प्राथमिकता निर्धारण कहलाता है तीसरा उपलब्ध साधनों का बंटवारा देश में जो साधन उपलब्ध है उनका बटवारा योजनाओं में किस प्रकार किया जाए यह कार्य इसी आयोग के द्वारा किया जाता है चौथा बाधक तत्वों की ओर ध्यान दिलाना यदि देश के आर्थिक विकास में कोई तत्व बाधक है या बंद है उपस्थित होने की संभावनाएं हैं तो आयोग ऐसी बाधाओं की ओर सरकार का ध्यान आकर्षित करता है पांचवा सुझाव देना आयोग समय-समय पर सरकार की नीतियों साधना आवश्यकता व वर्तमान परिस्थितियों पर सरकार को व अन्य विभागों को सुझाव देता रहता है

भारत का योजना आयोग भारत सरकार की एक संस्था थी जिसका प्रमुख कार्य पंचवर्षीय योजनाएं बनाना था।

राज्य के आर्थिक एवं सामाजिक विकास में बाधक कारणों को इंगित करना, योजनाओं के सफल क्रियान्वयन हेतु उसका समाधान ढूंढना तथा उपयुक्त सुझाव प्रदान करना। राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में क्षेत्रीय तथा सामाजिक असंतुलन को दूर करने हेतु नीतियों एवं कार्यक्रमों का सुझाव देना।

योजना आयोग के कार्य

1. आयोग देश के भौतिक पूंजी संबंधी तथा मानवीय साधनों का अनुमान लगाएगा और राष्ट्रीय और सप्ताह से इन साधनों में से जिस की भी कमी होगी उसकी वृद्धि की संभावना के संबंध में अन्वेषण करेगा।
2. देश के साधनों के अत्यधिक संतुलित उपयोग के लिए योजना का निर्माण करेगा।
3. प्राथमिकताओं के निर्धारण में आयोग उन अवस्थाओं को परिभाषित करता है जिनमें अथवा उनके आधार पर योजनाएं कार्यान्वित की जाएगी। आयोग सभी व्यवस्था को उपयुक्त रूप से कार्य कार्यवृत्त करने के लिए योजनाओं का आबटन करता है
4. आयोग उन घटनाओं के बारे में इंगित करेगा जो आर्थिक विकास में बाधक हो रहे हो तथा उन परिस्थितियों का निर्धारण करेगा जो उस समय के वर्तमान सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों के अनुसार योजनाओं को सफलतापूर्वक कार्यवृत्त लिए आवश्यक हो।

15मार्च 1950 को केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा पारित प्रस्ताव के द्वारा योजना की स्थापना की थी।

योजना आयोग पूर्णतया, एक सलाहकारी संस्था है जिसका कार्य योजनाओं का निर्माण करना एवं योजनाओं की प्रगति का मूल्यांकन करना है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत में योजना आयोग की स्थापना 15 मार्च, 1950 में की गई। वर्तमान में योजना आयोग का मुख्यालय 'योजना भवन' पार्लियामेंट स्ट्रीट, नई दिल्ली में है।

योजना आयोग के कार्य =

1. संसाधनों का अनुमान लगाना - योजना आयोग का सबसे पहला कार्य देश में उपलब्ध भौतिक एवं मानवीय संसाधनों का अनुमान लगाना तथा उन संसाधनों के अत्यन्त प्रभावपूर्ण एवं संतुलित उपयोग के लिए योजनाएं बनाना है।
2. प्राथमिकताएं का निर्धारण - योजना आयोग विकास के लिए प्राथमिकताएं का निर्धारण करता है और सुझाव देता है कि किस कार्य को पहले और किस कार्य को बाद में किया जाय।
3. उपलब्ध साधनों का बंटवारा- देश में जो साधन उपलब्ध हैं उनका बंटवारा योजना में किस प्रकार किया जाय? यह कार्य योजना आयोग के द्वारा किया जाता है।
4. योजना का निर्माण- योजना आयोग का प्रमुख कार्य योजना का निर्माण कर सरकार को सौंप देना है।
5. प्रगति का मूल्यांकन- योजना के क्रियान्वयन के बाद उनके क्या वांछित परिणाम प्राप्त हुए या नहीं, उसका मूल्यांकन करना भी योजना आयोग का कार्य है।

योजना आयोग का गठन 15 मार्च 1950को भूतपूर्व सोवियत संघ के तेज पर हुआ था।

भारत का योजना आयोग भारत सरकार की एक संस्था थी जिसका प्रमुख कार्य पंचवर्षीय योजनाएं बनाना था।

योजना आयोग का गठन-- स्वतंत्रता के उपरांत भारतीय संविधान में वर्णित लोक कल्याणकारी राज्य की स्थापना के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने 15 अगस्त 1950 को योजना आयोग के



गठन की घोषणा की आयोग के पदेन अध्यक्ष प्रधानमंत्री रहेंगे आयोग में पांच मनोनीत सदस्य स्थापना के समय रखे गए।

योजना आयोग के कार्यकार्य-

1 साधनों का अनुमान लगाना- योजना आयोग का सबसे प्रथम कार्य देश के उपलब्ध भौतिक एवं मानवीय तकनीकी तथा कर्मचारी वर्ग संबंधी साधनों का अनुमान लगाना जिसकी आवश्यकता की तुलना में कम प्रतीत होने वाले साधनों की वृद्धि की संभावनाओं का पता लगाना।

2 प्राथमिकताओं का निर्धारण - देश में उपलब्ध साधनों तथा लोगों की मूलभूत आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए प्राथमिकताओं का निर्धारण किया जाता है ताकि सीमित साधनों के अंतर्गत विभिन्न उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सकती है।

3 योजना का निर्माण करना -- आयोग देश की प्राथमिकताओं तथा उपलब्ध साधनों के आधार पर पंचवर्षीय योजनाएं तैयार करता है।

4 प्रगति का मूल्यांकन - योजनाओं के लागू हो जाने पर उसकी प्रगति पर नजर रखते हुए लक्ष्यों की प्राप्ति हुई है या नहीं इसका मूल्यांकन करना एवं कारणों को जानकर सरकार को प्रतिवेदन प्रस्तुत करने हेतु सुझाव देना।

भारत का योजना आयोग bhartha सरकार कि एक सन्स्था जिसका पर्मुख कार्य योजन्ये बनना था

देश के सामाजिक आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है योजना आयोग के मुख्य कार्य निम्न लिखित है

- (१) साधनों का अनुमान लगाना
- (२) प्राथमिकताओं का निर्धारण करना
- (३) योजना का निर्माण करना
- (४) प्रगति का मूल्यांकन करना
- (५) योजनाओं को सुचारू रूप से चलाने और लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक तंत्र का निर्धारण करना

योजना आयोग का कार्य -

1.) साधनों का अनुमान लगाना - योजना आयोग का सबसे पहले कार्य देश में उपलब्ध भौतिक एवं मानवीय ,तकनीकी तथा कर्मचारी वर्ग संबंधी साधनों का अनुमान लगाना।

2.) प्राथमिकताओं का निर्धारण - देश में उपलब्ध साधनों तथा लोगों की मूलभूत आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए प्राथमिकताओं का निर्धारण किया जाता है।

3.) योजना का निर्माण करना - आयोग देश की प्राथमिकताओं तथा उपलब्ध साधनों के आधार पर पंचवर्षीय योजनाएं तैयार करता है।

4.) प्रगति का मूल्यांकन योजनाओं के लागू हो जाने पर उसकी प्रगति पर नजर रखते हुए लक्ष्यों की प्राप्ति हुई है।

5.) योजनाओं को सुचारू रूप से चलाने और लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक तंत्र का निर्धारण करना।



नीति आयोग पर एक संक्षिप्त लेख लिखिए.

35 responses

नीति आयोग (राष्ट्रीय भारत परिवर्तन संस्थान) भारत सरकार द्वारा गठित एक नया संस्थान है जिसे योजना आयोग के स्थान पर बनाया गया है।[1] 1 जनवरी 2015 को इस नए संस्थान के सम्बन्ध में जानकारी देने वाला मंत्रिमंडल का प्रस्ताव जारी किया गया।[2] यह संस्थान सरकार के थिंक टैंक के रूप में सेवाएं प्रदान करेगा और उसे निर्देशात्मक एवं नीतिगत गतिशीलता प्रदान करेगा। नीति आयोग, केन्द्र और राज्य स्तरों पर सरकार को नीति के प्रमुख कारकों के संबंध में प्रासंगिक महत्वपूर्ण एवं तकनीकी परामर्श उपलब्ध कराएगा। इसमें आर्थिक मोर्चे पर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय आयात, देश के भीतर, साथ ही साथ अन्य देशों की बेहतरीन पद्धतियों का प्रसार नए नीतिगत विचारों का समावेश और विशिष्ट विषयों पर आधारित समर्थन से संबंधित मामले शामिल होंगे।[3] नीति आयोग के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) अमिताभ कांत हैं। नीति आयोग के सदस्यों में विवेक देवराय, वी.के. सारस्वत, रमेश चंद्र और विनोद पाल शामिल हैं। योजना आयोग और नीति आयोग में मूलभूत अंतर है कि इससे केंद्र से राज्यों की तरफ चलने वाले एक पक्षीय नीतिगत क्रम को एक महत्वपूर्ण विकासवादी परिवर्तन के रूप में राज्यों की वास्तविक और सतत भागीदारी से बदल दिया जाएगा।[1]

नीति आयोग

अवलोकन

गठन

1 जनवरी 2015; 6 वर्ष पहले

पूर्ववर्ती

योजना आयोग

अधिकारक्षेत्र

भारत सरकार

मुख्यालय

नई दिल्ली

कार्यपालक

नरेंद्र मोदी, अध्यक्ष (चेयरपर्सन). (पदेन अध्यक्ष)

Niti aayog Bharat Sarkar dwara gati ek Naya Sansthan hi jise Yojana aayog ke ke sthan per banaya Gaya hai 1 January e 2015 ko is Sansthan ke sambandh mein jankari dekhne wale a mantrimandal ka prastav jari Kiya Gaya Sansthan Sarkar ke a thick track ke roop mein Sevan pradan Karen aur use nirdesh ke anusar nitigat gatishilta pradan Karen ka niti aayog Kendra aur rajya sthal per Sarkar ko kar aaega ismein arthik morche per rashtriy aur antrashtriy aayat Desh ke bhitar sath hi sath Anya deshon ki ki behtarin patiyon ka Prasar nai nitigat vicharon ka samavesh aur aur vishisht vishayon per aadharit samarthan se sambandhit it mein mile samil honge niti aayog ke mukhya karyakari Adhikari arthat ceo Amitabh can't hi niti aayog ke sadasya Hain Vivek Devra. VK sar vaastav. Ramesh Chand aur aur Vinod pal Yojana aayog aur niti aayog mein mulbhut antar hai ki ise Kendra se rajaon ki taraf chalne wali ek pakshiyon



nirgat ka kram ko ek manatvpurn vikas wadi Parivartan ke roop mein rajaon ki vastvik aur satak bhagidari se a Badal Diya jaega. Iska uddeshya . Nitiyon ka nirdharan Karna.

Niti aayog bhart sarkar davra gtit ek nya sanstha hai jise yojna aayog ke sthan par bnaya gya hai 1 January 2015 ko is nye sanstha ke jankari dene wala mantrimndl ka prastav jari kiya gya .

sarkar ne yojna ke sthan pr ek nya sansthan niti aayog banaya hai. naye sansthan ke sambndh me jankari dene wala matrimandal ka prastaw 1 January 2014 ko jari kiya gya tatha 1 January 2015 se niti aayog astitw me aaya. bite warshon ke sath sarkar ka sansthan dancha wiksit aor pripkw hua hai. isse karychhetra me wisheshgyta wiksit hui hai jisne sansthao ko saunpe gay karyon ki wishishtta badhai hai.

नीति आयोग पर लेख:-

समकालीन आर्थिक परिवेश से समन्वय स्थापित करने तथा बाजार केंद्रित अर्थव्यवस्था के प्रति संवेदनशील आवश्यकता को देखते हुए भारत सरकार द्वारा "नीति आयोग" के गठन की घोषणा 1 जनवरी 2015 को की गई। नीति आयोग का पूरा नाम 'नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर ट्रांसफॉर्मिंग इंडिया' है।

योजना आयोग की प्रासंगिकता पर समय-समय प्रश्न उठते रहे हैं। क्योंकि पुराने सोवियत पर आधारित योजना आयोग द्वारा वर्तमान आर्थिक समृद्धि से सामंजस्य बिठाना मुश्किल हो रहा था। वर्तमान दौर परिवर्तन का दौर है। कोई संस्था अथवा संकल्पना जोकि वर्तमान में प्रासंगिक है। यह जरूरी नहीं कि भविष्य में उसकी उतनी ही प्रासंगिकता बनी रहे। इसलिए बदलती परिस्थितियों एवं आवश्यकताओं आदि के आधार पर प्रत्येक संस्था/ संकल्पना में बदलाव जरूरी हो जाता है। इसी क्रम में योजना आयोग के स्थान पर नीति आयोग का गठन किया गया। इस प्रयास के द्वारा जहां एक ओर केंद्र राज्य को बल मिलेगा वहीं दूसरी 'जन केंद्रित सहभागी विकास'की अवधारणा भी मजबूत होगी। नीति आयोग के उद्देश्य:-

- १) राज्यों के सहयोग द्वारा तथा उनको सहयोग प्रदान करने एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण सशक्त राज्य से ही सशक्त राष्ट्र की अवधारणा मुक्त हो सकती है।
- २) नीति आयोग द्वारा जन सहभागिता की अवधारणा को सशक्त करके सहकारी संघवाद की संकल्पना को अधिक मजबूत करना।
- ३) नीति आयोग राष्ट्रीय विकास की योजनाओं और नीतियों का इस प्रकार निर्धारण करेगा जिससे राष्ट्रीय सुरक्षा तथा आर्थिक विकास के बीच समन्वय स्थापित किया जा सके।

नीति आयोग सरकार ने योजना आयोग के स्थान पर एक नया स्थान नीति आयोग (राष्ट्रीय भारत परिवर्तन संस्थान) बनाया है। संस्थान के संबंध में जानकारी देने वाला मंत्रिमंडल का प्रस्ताव 1 जनवरी, 2014 को जारी किया गया था 1 जनवरी, 2015 से नीति आयोग में आया वित्तीय वर्ष के साथ सरकार का संस्थागत ढांचा विकसित और प्राप्त हुआ है इससे कार्य क्षेत्र में स्थित हुई है। जिनमें संस्थाओं को सौंपे गए कार्यों की बढ़ाई नियोजन की प्रक्रिया के शासन की प्रक्रिया को संस्कारवान बनाने की जरूरत है।

सरकार ने नियोजन आयोग के स्थान पर एक नया संस्थान नीति आयोग बनाया है नए संस्थान के संबंध में जानकारी देने वाला मंत्रिमंडल का प्रस्ताव जनवरी 1 2014 को जारी किया गया बीते वर्षों के साथ सरकार का संस्थागत ढांचा विकसित और परिपक्व हुआ है इससे कार्य क्षेत्र में विशेषज्ञता विकसित हुई है जिनसे संस्थाओं को शॉप पर गए कार्यों की विशेषता बढ़ाएं नियोजन की प्रक्रिया के संदर्भ में शासन की प्रक्रिया को शासन की कार्यनीति से अलग करने के साथ ही उसे ऊर्जावान बनाने की जरूरत है

शासन संरचना के संदर्भ में हमारे देश की जरूरतें बदली है ऐसे में एक ऐसे संस्थान की स्थापना की आवश्यकता थी जो सरकार के दिशा धमक और नीति निर्धारक थिंक टैंक के रूप में कार्य करें प्रस्तावित संस्थान प्रत्येक स्तर पर नीति निर्धारण के प्रमुख तत्वों के बारे में महत्वपूर्ण और तकनीकी सलाह देगा इसमें आर्थिक मोर्चों पर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय आयात के मामले देश के भीतर और अन्य देशों में उपलब्ध सर्वोत्तम प्रक्रियाओं के प्रसार ने नीतिगत विचारों को अपनाने और विषय आधारित विशिष्ट सहायता शामिल है या संस्थान लगातार बदल रहे एकीकृत विश्व के अनुरूप कार्य करने में सक्षम होगा भारत जिस का एक भाग है

संस्थान के तहत व्यवस्था में केंद्र से राज्यों की तरफ चलने वाली एकपक्षीय नीतिगत क्रम को एक महत्वपूर्ण



विकासवादी परिवर्तन के रूप में राज्यों की वास्तविक और सतत भागीदारी से बदल दिया जाएगा त्वरित गति से कार्य करने के लिए और सरकार को नीति दृष्टिकोण उपलब्ध कराने के साथ-साथ प्रासंगिक विषयों के संदर्भ में संस्थान के पास आवश्यक संसाधन ज्ञान कौशल और क्षमता होगी।

नीति आयोग

समकालीन आर्थिक परिवेश से समन्वय स्थापित करने तथा बाजार केंद्रित अर्थव्यवस्था के प्रति संवेदनशीलता आवश्यकता को देखते हुए भारत सरकार द्वारा नीति आयोग के गठन की घोषणा 1 जनवरी 2015 को की गई। नीति आयोग का पूरा नाम नेशनल इंडस्ट्री युटुट फॉर ट्रांसफॉर्मिंग इंडिया है।

योजना आयोग की प्रासंगिकता पर समय-समय प्रेस नोट दे रहे हैं क्योंकि पुराने सोवियत पर आधारित योजना आयोग द्वारा वर्तमान आर्थिक समृद्धि से संकल्पना जो कि वर्तमान में प्रासंगिक है। यह जरूरी नहीं कि भविष्य में उसकी उतनी भी क्रॉसिंग पर बनी रहे। इसलिए बदलती परिस्थितियों एवं आवश्यकता आदि के आधार पर प्रत्येक संस्था संकल्पना में बदलाव जरूरी हो जाता है। इसी ग्राउंड में योजना आयोग के स्थान पर नीति आयोग का गठन किया गया इस प्रयास के द्वारा जहां एक ओर केंद्र राज्य को बस मिलेगा वहीं दूसरी ओर 'जन केंद्रित सहभागी विकास' की अवधारणा भी मजबूत होगी।

नीति आयोग के उद्देश्य:-

- 1) राज्यों के सहयोग द्वारा तथा उनको सहयोग प्रदान करनी एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण सशक्त राज्य से ही सशक्त राष्ट्र की अवधारणा मुक्त हो सकती है।
- 2) नीति आयोग द्वारा जन सहभागिता की अवधारणा को सशक्त करके सहकारी संघवाद की संकल्पना को अधिक मजबूत करना।

नीति आयोग (राष्ट्रीय भारत परिवर्तन संस्थान) भारत सरकार द्वारा गठित एक नया संस्थान है जिसे योजना आयोग के स्थान पर बनाया गया है। [1] 1 जनवरी 2015 को इस नए संस्थान के सम्बन्ध में जानकारी देने वाला मंत्रिमंडल का प्रस्ताव जारी किया गया। [2] यह संस्थान सरकार के थिंक टैंक के रूप में सेवाएं प्रदान करेगा और उसे निर्देशात्मक एवं नीतिगत गतिशीलता प्रदान करेगा। नीति आयोग, केन्द्र और राज्य स्तरों पर सरकार को नीति के प्रमुख कारकों के संबंध में प्रासंगिक महत्वपूर्ण एवं तकनीकी परामर्श उपलब्ध कराएगा। इसमें आर्थिक मोर्चे पर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय आयात, देश के भीतर, साथ ही साथ अन्य देशों की बेहतरीन पद्धतियों का प्रसार नए नीतिगत विचारों का समावेश और विशिष्ट विषयों पर आधारित समर्थन से संबंधित मामले शामिल होंगे। [3] नीति आयोग के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) अमिताभ कांत हैं। नीति आयोग के सदस्यों में विवेक देवराय, वी.के. सारस्वत, रमेश चंद्र और विनोद पाल शामिल हैं। योजना आयोग और नीति आयोग में मूलभूत अंतर है कि इससे केंद्र से राज्यों की तरफ चलने वाले एक पक्षीय नीतिगत क्रम को एक महत्वपूर्ण विकासवादी परिवर्तन के रूप में राज्यों की वास्तविक और सतत भागीदारी से बदल दिया जाएगा। नीति आयोग ग्राम स्तर पर विश्वसनीय योजना तैयार करने के लिए तंत्र विकसित करेगा और इसे उत्तरोत्तर उच्च स्तर तक पहुंचाएगा। आयोग राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों, प्रैक्टिशनरों तथा अन्य हितधारकों के सहयोगात्मक समुदाय के जरिए ज्ञान, नवाचार, उद्यमशीलता सहायक प्रणाली बनाएगा। इसके अतिरिक्त आयोग कार्यक्रमों और नीतियों के क्रियान्वयन के लिए प्रौद्योगिकी उन्नयन और क्षमता निर्माण पर जोर देगा।

सरकार ने योजना आयोग के स्थान पर एक नया स्थान नीति आयोग बनाया है नई संस्था के संबंध में जानकारी देने वाला मंत्रिमंडल का प्रस्ताव 1 जनवरी 2014 को जारी किया गया था तथा 1 जनवरी 2015 से नीति आयोग अस्तित्व में आ गया बीते वर्षों के साथ सरकार का संस्थागत ढांचा विकसित और परिपक्व हुआ है जिससे कार्य क्षेत्र में विशेष तज्ञ विकसित हुई है जिसने संस्थाओं को सौंपे गए कार्यों की विशिष्टता बढ़ाई है नियोजन की प्रक्रिया के संदर्भ में शासन की प्रक्रिया को शासन की कार्य नीति से अलग करने साथ ही उनसे पुरवा वन बनाने की जरूरत है शासन प्रशंसा के संदर्भ में हमारे देश की जरूरत बदलती है ऐसे में एक ऐसे संस्था की स्थापना की आवश्यकता थी जो सरकार के दिशा और नीति निर्धारक ठीक बैंक के रूप में कार्य करें प्रतिष्ठा वित्त स्थापन प्रत्येक स्तर पर नीति निर्धारण के प्रमुख तत्वों के बारे में महत्वपूर्ण और तकनीकी सलाह देगा इसमें आर्थिक क्रियाओं के प्रयास में नीति विचारों को अपनाने और विषय आधारित विशिष्ट साहित्य संगीत है या संस्था लगातार बदल रहे हैं एकीकृत विषय के अनुरूप कार्य करने में सक्षम होगा भारत जिस का एक भाग है

नीति आयोग-

(राष्ट्रीय भारत परिवर्तन संस्थान) भारत सरकार द्वारा गठित एक नया संस्थान है जिससे जिससे योजना आयोग के स्थान पर बनाया गया है 1 जनवरी 2015 को इस नए संस्थान के संबंध में जानकारी देने वाला मंत्रिमंडल का प्रस्ताव जारी किया गया है। यह संस्थान सरकार के थिंकटैंक के रूप में सेवाएं प्रदान करेगा और उसे निर्देशात्मक एवं नीतिगत गतिशीलता प्रदान करेगा। नीति आयोग केंद्र और राज्य स्तर पर सरकारों को नीति के प्रमुख कारकों के संबंध में प्रासंगिक महत्वपूर्ण एवं तकनीकी परामर्श पर उपलब्ध कराएगा। इनमें आर्थिक मोर्चे पर राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय आयात देश के भीतर साथ ही अन्य देशों की बेहतरीन पद्धतियों का प्रसार में नीतिगत विचारों का समावेश और विशिष्ट विषयों पर आधारित समर्थन से संबंधित मामले शामिल होंगे। नीति आयोग के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अर्थात् सी आई ओ अमिताभ कांत है नीति आयोग के सदस्य हैं विवेक देवराय वीके सारस्वत रमेश चंद्र और विनोद पाल योजना आयोग और नीति आयोग में मूलभूत अंतर है कि इसे केंद्र से राज्यों की तरफ चलने वाले एकपक्षीय नीतिगत क्रम को एक महत्वपूर्ण विकासवादी परिवर्तन के रूप में राज्यों की वास्तविक और सशक्त भागीदारी से बदल दिया जाएगा।

Samkaleen Aarti pahle parivesh se sambandh mein sthapit karne tatha Bajar ke kendrit arthvyavastha ke Prati sanvidhan se sambandhit ki avashyakta ko Dekhte Hue Bharat Sarkar dwara Niti Aayog ki gathan Ghoshna January 2015 ko ki Gai ISI kram Mein Sarkar dwara Yojana Aayog ke Sthan per Niti Aayog ka gathan Kiya gaya hai

Bharat aayog rastriy bharat pariwartnn sansthan bharat sarkar duwara gathit ek naya sansthan hyy jise yojna aayog ke duwarra sthan prr banaya gaya hyy
1 janwari 2015 ko in nay sansthan ke sambndh me jankari dene wale mantri ka prstao jari kiya gaya
Yah sansthan sarkar ke think byynk ke rup me seway pradan karega orr use nirdesak ewam nitigat gatisilta pradan karega

नीति आयोग राष्ट्रीय विकास की योजनाओं और नीतियों का इस प्रकार निर्धारण करेगा, जिससे राष्ट्रीय सुरक्षा तथा आर्थिक विकास के बीच समन्वय स्थापित किया जा सके। ... लघु अवधि के साथ-साथ नीति आयोग दीर्घावधि के लिए भी नीतियों और योजनाओं का निर्धारण करेगा जिससे कि भविष्य के लिए आर्थिक हितों को सुनिश्चित किया जा सके

नीति आयोग:-नीति आयोग का अर्थ है भारत में बदलाव का राष्ट्रीय संस्थान। नीति आयोग की स्थापना 1 जनवरी सन 2015 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने की थी। नीति आयोग के अध्यक्ष प्रधानमंत्री होते हैं। इस का प्राथमिक कार्य सामाजिक आर्थिक क्षेत्र में सरकार को सलाह देना है तथा ऐसे नियमों का निर्माण करेगी जो लोगों की हित में हो। नीति आयोग में एक प्रशासकीय परिषद होता है जिसमें राज्यों के मुख्यमंत्री एवं केंद्र शासित क्षेत्रों की उपराज्यपाल को शामिल किया जाता है। नीति आयोग के मुख्य कार्यपालन अधिकारी एक निश्चित समय के लिए नियुक्त किए जाते हैं तथा नीति आयोग का अपना सचिवालय भी होता है।

नीति आयोग राष्ट्रीय भारत परिवर्तन संस्थान भारत सरकार द्वारा गठित एक नया संस्थान है जिसमें योजना आयोग के स्थान पर बनाया गया है पूर्व एवं 1 जनवरी 2015 को इस नए संस्थान के संबंध में जानकारी देने वाली मंत्रिमंडल का प्रस्ताव जारी किया गया। यहां संस्थान सरकार के ठीक है टैक्स के रूप में सेवाएं प्रदान करेगा और उसे निर्देशक एवं नीतिगत गतिशीलता प्रदान करेगा। नीति आयोग केंद्र और राज्य स्तर पर सरकार को नीति के प्रमुख कारकों के संबंध में महत्वपूर्ण एवं तकनीकी परामर्श पर उपलब्ध कराएगा।

नीति आयोग (राष्ट्रीय भारत परिवर्तन संस्थान) भारत सरकार द्वारा गठित एक नया संस्थान है जिसे योजना आयोग के स्थान पर बनाया गया है। [1] 1 जनवरी 2015 को इस नए संस्थान के सम्बन्ध में जानकारी देने वाला मंत्रिमंडल का प्रस्ताव जारी किया गया। [2] यह संस्थान सरकार के थिंक टैंक के रूप में सेवाएं प्रदान करेगा और उसे निर्देशात्मक एवं नीतिगत गतिशीलता प्रदान करेगा। नीति आयोग, केन्द्र और राज्य स्तरों पर सरकार को नीति के प्रमुख कारकों के संबंध में प्रासंगिक महत्वपूर्ण एवं तकनीकी परामर्श उपलब्ध कराएगा। इसमें आर्थिक मोर्चे पर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय आयात, देश के भीतर, साथ ही साथ अन्य देशों की बेहतरीन पद्धतियों का प्रसार नए नीतिगत विचारों का



समावेश और विशेष विषयों पर आधारित समर्थन से संबंधित मामले शामिल होंगे। [3] नीति आयोग के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) अमिताभ कांत हैं। नीति आयोग के सदस्यों में विवेक देवराय, वी.के. सारस्वत, रमेश चंद्र और विनोद पाल शामिल हैं। योजना आयोग और नीति आयोग में मूलभूत अंतर है कि इससे केंद्र से राज्यों की तरफ चलने वाले एक पक्षीय नीतिगत क्रम को एक महत्वपूर्ण विकासवादी परिवर्तन के रूप में राज्यों की वास्तविक और सतत भागीदारी से बदल दिया जाएगा। [

नीति आयोग:- नीति आयोग राष्ट्रीय विकास की योजनाओं और नीतियों का इस प्रकार निर्धारण करेगा जिससे राष्ट्रीय सुरक्षा तथा आर्थिक विकास के बीच समन्वय स्थापित किया जा सके। लघु अवधि के साथ-साथ नीति आयोग दीर्घावधि के लिए भी नीतियों और योजनाओं का निर्धारण करेगा जिससे की भविष्य के लिए आर्थिक हितों की सुनिश्चित किया जा सके।

नीति आयोग राष्ट्रीय भारत परिवर्तन संस्थान भारत सरकार द्वारा गठित एक नया संस्थान है जिसे योजना आयोग के स्थान पर बनाया गया है। 1 जनवरी 2015 को इस नए संस्थान के संबंध में जानकारी देने वाले मंत्रिमंडल का प्रस्ताव जारी किया गया। यह संस्थान सरकार के सरकार की थिंक टैंक के रूप में सेवाएं प्रदान करेगा और उसे निर्देशात्मक एवं नीतिगत गतिशीलता प्रदान करेगा। नीति आयोग केंद्र और राज्य स्थानों पर सरकार को नीति के प्रमुख कारकों के संबंध में महत्वपूर्ण एवं तकनीकी उपलब्ध करवाएगा नीति आयोग कहते हैं।

नीति आयोग के मुख्य भूमिका राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय महत्व के विभिन्न नीतिगत मुद्दों पर केंद्र तथा राज्य सरकारों को आवश्यक रणनीतिक तथा तकनीकी परामर्श देने की होगी अर्थात् नीति आयोग एक परामर्शदात्री संस्था होगी। लंबे समय की योजनाओं के निर्माण तथा उनकी निगरानी हेतु नीति आयोग के तहत एक नवीन विभाग का गठन किया गया।

नीति आयोग भारत सरकार द्वारा गठित एक नया संस्थान है जिसे है जिसे योजना आयोग के स्थान पर बनाया गया/1, 1 जनवरी 2015 को इस नए संस्थान के संबंध में जानकारी देने वाला मंत्रिमंडल का प्रस्ताव जारी किया गया। 2, यह संस्थान सरकार के थिंक टैंक के रूप में सेवाएं प्रदान करेगा और उसे निर्देशात्मक एवं नीतिगत गतिशीलता प्रदान करेगा। नीति आयोग केंद्र और राज्य स्तरों पर सरकार को नीति के प्रमुख कारकों के संबंध में प्रासंगिक महत्वपूर्ण एवं तकनीकी परामर्श उपलब्ध कराएगा इसमें आर्थिक मोर्चे पर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय आयात देश की भीतर साथ ही साथ अन्य देशों की बेहतरीन पद्धतियों का प्रसार नए नीतिगत विचारों का समावेश और विशेष विषयों पर आधारित समर्थन से संबंधित मामले शामिल होंगे। 3, नीति आयोग के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अमिताभ कांत हैं नीति आयोग के सदस्यों में विवेक देव राव वी के सारस्वत रमेश चंद्र और विनोद पाल शामिल हैं योजना आयोग और नीति आयोग के मूलभूत अंतर है कि इससे केंद्र से राज्यों की तरफ चलने वाले एक पक्षीय नीतिगत क्रम को एक महत्वपूर्ण विकासवादी परिवर्तन के रूप में राज्यों की वास्तविक और सतत भागीदारी से बदल दिया जाएगा। नीति आयोग राष्ट्रीय विकास की योजनाओं और नीतियों का इस प्रकार निर्धारण करेगा जिससे राष्ट्रीय सुरक्षा तथा आर्थिक विकास के बीच समन्वय स्थापित किया जा सके। लघु अवधि के साथ साथ नीति आयोग दीर्घावधि के लिए भी नीतियों और योजनाओं का निर्धारण करेगा जिससे की भविष्य के लिए आर्थिक हितों को सुनिश्चित किया जा सके।

नीति आयोग भारत सरकार द्वारा गठित एक नया संस्थान है जिसे योजना आयोग के स्थान पर बनाया गया है 1 जनवरी 2015 को इस नए संस्थान के संबंध में जानकारी देने वाला मंत्रिमंडल का प्रस्ताव जारी किया गया है यहां संस्थान सरकार के थिंकटैंक के रूप में सेवा प्रदान करेंगे और उसे निदेशक एवं गतिशीलता प्रदान करेगा नीति आयोग केंद्र और राज्य स्तर पर सरकार को नीति के प्रमुख कारकों के संबंध में प्रासंगिक महत्वपूर्ण एवं तकनीकी परामर्श उपलब्ध कराएगा इसमें आर्थिक मोर्चे पर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय आयात देश के भीतर साथ ही साथ अन्य देशों की बेहतरीन पद्धतियों का प्रसार ने नीतिगत विचारों का समावेश और विशेष विषयों पर आधारित समर्थन से संबंधित मामले शामिल होंगे

उत्तर : -- नीति आयोग भारत सरकार द्वारा गठित एक नया संस्थान है, जिसे योजना आयोग के स्थान पर बनाया गया है!

1 जनवरी 2015 को इस नए संस्थान के संबंध जानकारी देने वाला मंत्रिमंडल का प्रस्ताव जारी किया गया है ! यह संस्थान के थिंक टैंक के रूप में सेवाएं प्रदान करेगा ।



संस्थान का एक टुक का रूप में सेवाएं प्रदान करेगा !

और उसे निर्देशात्मक एवं नीतिगत गतिशीलता प्रदान करेगा ! नीति आयोग केंद्र और राज्य स्तर पर सरकारों को नीति के प्रमुख कारकों के संबंध में प्रासंगिक महत्वपूर्ण तकनीकी परामर्श उपलब्ध कराएगा !

सरकार ने योजना आयोग के स्थान पर एक नया संस्थान नीति आयोग बनाया है नए संस्थान के संबंध में जानकारी देने वाला मंत्रिमंडल का प्रस्ताव 1 जनवरी 2014 को जारी किया गया तथा 1 जनवरी 2015 से नीति आयोग अस्तित्व में आया बीते वर्षों के साथ सरकार का संस्थागत ढांचा विकसित और परिपक्व हुआ है इसके कार्य क्षेत्र में विशेषज्ञता विकसित हुई है जिसमें संस्थाओं को सौंपे गए कार्यों की विशेष तथा बढ़ाई है योजना की प्रक्रिया के संदर्भ में शासन

की प्रक्रिया के शासन की कार्य नीति से अलग करने साथ ही उसे ऊर्जावान बनाने की जरूरत है शासन संरचना के संदर्भ में हमारे देश जरूरतें बदलती है ऐसे में एक ऐसी संस्था की स्थापना की आवश्यकता थी

राष्ट्रीय भारत परिवर्तन संस्था, जिसे नीति आयोग भी कहा जाता है, इसका गठन 1 जनवरी 2015 को केंद्रीय मंत्रिमंडल के एक संकल्प के माध्यम से किया गया था।

नीति आयोग (राष्ट्रीय भारत परिवर्तन संस्थान) भारत सरकार द्वारा गठित एक नया संस्थान है जिसे योजना आयोग के स्थान पर बनाया गया है। ... नीति आयोग, केन्द्र और राज्य स्तरों पर सरकार को नीति के प्रमुख कारकों के संबंध में प्रासंगिक महत्वपूर्ण एवं तकनीकी परामर्श उपलब्ध कराएगा।

नीति आयोग

भारत सरकार द्वारा गठित एक नया संस्थान है योजना आयोग के स्थान पर बनाया गया है 1 जनवरी 2015 को इस नए संस्थान के संबंध में जानकारी देने वाले मंत्रिमंडल का प्रस्ताव जारी किया गया। यह संस्थान सरकार के think tank के रूप में सेवाएं प्रदान करेगा और उसे निर्देशात्मक एवं नीतिगत गतिशीलता प्रदान करेगा। नीति आयोग केंद्र और राज्य स्तरों पर सरकार को नीति के संबंध कारकों के संबंध में प्रासंगिक महत्वपूर्ण एवं तकनीकी परामर्श उपलब्ध कराएगा। इसमें आर्थिक मोर्चे पर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय आयत देश के भीतर साथ ही साथ अन्य देशों के बेहतरीन प्रसिद्धियों का प्रसार नए नीतिगत विचारों का सामवेद और विशिष्ट विषयों पर आधारित समर्थन से संबंधित मामले शामिल होंगे। नीति आयोग के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अर्थात सीईओ अमिताभ क्रांत है।

सरकार ने योजना आयोग के स्थान पर एक नया संस्थान नीतिआयोग(राष्ट्रीय भारत परिवर्तन संस्थान)बनाया है ।

नीति आयोग भारत सरकार द्वारा गठित एक नया संस्थान है जिसे योजना आयोग के स्थान पर बनाया गया। 1 जनवरी, 2015 को इस नए संस्थान के संबंध में जानकारी देने वाला मंत्रिमंडल का प्रस्ताव जारी किया गया। यह संस्थान सरकार के थिंक टैंक के रूप में सेवाएं प्रदान करेगा और उसे निर्देशात्मक एवं नीतिगत गतिशीलता प्रदान करेगा। नीति आयोग, केन्द्र और राज्य स्तरों पर सरकार को नीति के प्रमुख कारकों के संबंध में प्रासंगिक महत्वपूर्ण एवं तकनीकी परामर्श उपलब्ध कराएगा। इसमें आर्थिक मोर्चे पर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय आयात, देश के भीतर, साथ ही साथ अन्य देशों की बेहतरीन पद्धतियों का प्रसार नए नीतिगत विचारों का समावेश और विशिष्ट विषयों पर आधारित समर्थन से संबंधित मामले शामिल होंगे।

नीति आयोग(राष्ट्रीय भारत परिवर्तन संस्थान) भारत सरकार द्वारा गठित एक नया संस्थान है जिसे योजना आयोग के स्थान पर बनाया गया है।

नीति आयोग - भारत सरकार द्वारा गठित एक नया संस्थान है जिसे योजना आयोग के स्थान पर बनाया गया है 1 जनवरी 2015 को इस नए संस्थान के संदर्भ में जानकारी देने वाला मंत्रिमंडल का प्रस्ताव जारी किया गया यह संस्थान सरकार के थिंकटैंक के रूप में सेवाएं प्रदान करेगा और उसे निर्देशात्मक एवं नीतिगत गतिशीलता प्रदान करेगा नीति आयोग केंद्र और राज्य स्तर पर सरकार को नीति के प्रमुख कारकों के संदर्भ में प्रासंगिक महत्वपूर्ण एवं तकनीकी परामर्श उपलब्ध कराएगा इसमें आर्थिक मोर्चे पर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय आयात देश के भीतर साथ ही साथ अन्य देशों की बेहतरीन पद्धतियों का प्रसार में नीतिगत विचारों का समावेश और विशिष्ट विषयों पर आधारित समर्थन से संबंधित मामले शामिल होंगे नीति आयोग के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अर्थात सीईओ अमिताभ क्रांत है



नीति आयोग के सदस्य हैं विवेक देवराय वीके सारस्वत रमेश चंद्र और विनोद पाल योजना आयोग और नीति आयोग में मूलभूत अंतर है कि इससे केंद्र के राज्यों की तरफ चलने वाले एक पक्षी नीतिगत क्रम को एक महत्वपूर्ण विकासवादी परिवर्तन के रूप में राज्यों की वास्तविक और सतत भागीदारी से बदल दिया जाएगा।

नीति आयोग भारत सरकार द्वारा गठित एक नया संस्थान है जिसे योजना आयोग के स्थान पर बनाया गया है नीति आयोग के केन्द्र राज्य इस्तो पर सरकार कि नीति पर

नीति आयोग भारत सरकार द्वारा गठित एक नया संस्थान है जिसे योजना आयोग के स्थान पर बनाया गया है इसका गठन 01/01/2015 को किया गया नीति आयोग राष्ट्रीय विकास की योजनाओं और नीतियों का इस प्रकार निर्धारण करेगा जिससे राष्ट्रीय सुरक्षा तथा आर्थिक विकास के बीच समन्वय स्थापित किया जा सके लघु अवधि के साथ साथ नीति आयोग दीर्घावधि के लिए भी नीतियों और योजनाओं का निर्धारण करेगा जिससे की भविष्य के लिए आर्थिक हितों को सुनिश्चित किया जा सके

नीति आयोग भारत सरकार द्वारा गठित एक नया संस्थान है जिसे योजना आयोग के स्थान पर बनाया गया है। नीति आयोग का गठन 1 जनवरी, 2015 में किया गया। नीति आयोग राष्ट्रीय विकास की योजनाओं और नीतियों का इस प्रकार निर्धारण करेगा जिससे राष्ट्रीय सुरक्षा तथा आर्थिक विकास के बीच समन्वय स्थापित किया जा सके। लघु अवधि के साथ साथ नीति आयोग दीर्घावधि के लिए भी नीतियों और योजनाओं का निर्धारण करेगा जिससे कि भविष्य के लिए आर्थिक हितों को सुनिश्चित किया जा सके।

स्वतंत्रता के समय भारतीय अर्थव्यवस्था के विशेषताओं की व्याख्या कीजिये.

35 responses

नवीन आर्थिक सुधार पर एक निबंध लिखिए.

35 responses

This content is neither created nor endorsed by Google. [Report Abuse](#) - [Terms of Service](#) - [Privacy Policy](#)

Google Forms

